पसिझैत पाथर



डा. रामदेव झा

पसिझैत पाथर

(नाट्य संग्रह)

डा. रामदेव झा
विश्वविद्यालय प्राचार्य
मैथिली विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा

संकल्पलोक
लहेरियासराय, दरभङ्गा
१९८९

PASIJHAITA PATHAR : NATYA SANGRAH
By Dr. Ramdeo Jha

★ प्रकाशक :
संकल्पलोक,
(सांस्कृतिक ओ सामाजिक चेतना मंच)
गामी धर्मशाला
लहेरियासराय, दरभङ्गा (बिहार)

★ संस्करण : फरवरी, १९८९

★ मुद्रित प्रति : ११००

★ मूल्य : २०.०० (बीस टाका मात्र)

★ मुद्रक :
कुमार प्रिंटिंग प्रेस
बसंतगंज, दरभङ्गा।

प्रकाशकीय

मैथिलीमे पुस्तक प्रकाशनक बड़ दयनीय स्थिति अछि। उपन्यास, कथा, काव्य, नाटक, निबन्ध, आलोचना इत्यादि विषयक उत्तम कोटिक ग्रन्थ सभ अर्थाभावमे अप्रकाशित पड़ल रहि जाइत अछि। साहित्यहिसँ कोनो भाषा समृद्ध ओ उन्नत होइत अछि। साहित्य-समृद्धि ग्रन्थ-प्रकाशनहिसँ होइत अछि। अतः मैथिली भाषाक महत्तम सेवा कयल जा सकैत अछि ग्रन्थक प्रकाशन द्वारा। मैथिली भाषाक विकासक हेतु कार्यशील संस्था सब यदि एकजुट भऽ कऽ पुस्तक-प्रकाशन दिस उन्मुख होअय तँ अवश्ये बहुतो विशिष्ट कृति सब, जे गुमनाम पड़ल रहि जाइत अछि, ताहिसँ पाठक वर्ग परिचित भऽ सकत। लेखको लोकनिकेँ साहित्य-सर्जनमे उत्साह होयतनि।

संकल्प लोक मैथिली आन्दोलनक क्षेत्रमे रचनात्मक कार्य करबाक पक्षपाती रहल अछि आ एकर सकल प्रयत्न एही दिशामे होइत रहलैक अछि।

संकल्प लोक १९८६ वर्षकेँ पुस्तक वर्ष रूपमे मनयबाक निर्णय कयने छल तथा ओही क्रममे मैथिलीक विशिष्ट ग्रन्थक प्रकाशन-कार्यक्रम स्थिर कयने छल। ओहि कार्यक्रममे प्रथम प्रकाशन भेल प्रो० मायानन्दमिश्र रचित ऐतिहासिक उपन्यास 'मन्त्र-पुत्र'क। एहि प्रकाशनक सर्वत्र प्रशंसा भेल तथा १९८८ वर्षमे साहित्य अकादमी द्वारा सेहो पुरस्कृत भेल। एहिसँ संस्थाक उत्साह-वर्द्धन भेल। ओही कार्यक्रमक अन्तर्गत दोसर कड़ी थिक प्रस्तुत नाट्य-संग्रह। प्रकाश्य पुस्तकक चयन हेतु एकटा प्रकाशन-उपसमितिक गठन कयल गेल छल जे मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार ओ विद्वान् डा० रामदेवझा रचित 'पसिझैत पाथर : नाट्य संग्रह'क प्रकाशनक सर्वसम्मत निर्णय कयलक। संस्था दिससँ निवेदन कयला पर डा० झा सहर्ष अनुमति प्रदान कयलनि।

डा० रामदेवझाक साहित्यिक अवदानसँ मैथिली जगत अपरिचित नहि अछि। हिनक अनेक विशिष्ट कृति सब प्रकाशमे आबि चुकल छनि। आब प्रस्तुत

अछि ई 'पसिझैत पाथर : नाट्य संग्रह'। नाटक-विधामे विविध साहित्यिक प्रयोगक दृष्टिएँ, कथानक, कथोपकथन, भाषा-प्रयोग, युगीन-विचार-धारा इत्यादिक दृष्टिएँ अभिनेय ओ श्रव्यनाट्यक ई संग्रह विशिष्ट कोटिक अछि। विश्वास अछि जे अवश्ये एहि कृतिक स्वागत कयल जायत तथा साहित्य जगतमे एकर महत्त्वपूर्ण स्थान होयतैक।

एहि विशिष्ट साहित्यिक कृतिक प्रकाशनार्थ संस्थाकेँ अनुमति देबाक हेतु लेखक महोदयक आभारी छियनि। एहि पुस्तकक आवरण सज्जाक परिकल्पनाक हेतु चित्रकार श्रीराजेन्द्रगुप्ता, मुद्रण हेतु भारतीब्लाकवर्क्स, पटनाक श्रीअर्जुनठाकुर, पोथी मुद्रण हेतु कुमार प्रिंटिंग प्रेसक मालिक श्रीसीतारामपूर्वे ओ कर्मचारी लोकनि धन्यवादक पात्र छथि।

एहि ग्रन्थक मुद्रणमे स्वयं लेखक तथा प्रकाशन-उपसमितिक प्रभारी प्रो० डा० मुरलीधरझा सहित डा० योगानन्दझा एवं प्रो० विनोदकुमारझाक जे अथक परिश्रम ओ मनोयोगपूर्ण सहयोग रहलनि अछि ताहि हेतु हम कृतज्ञ छियनि।

विद्यापति-स्मृतिपर्व-समारोह १९८८ **श्रीजीवछझा**

आयोजन:४, ५, ६ फरवरी, १९८९ सचिव

संकल्पलोक

भूमिका

मैथिलीक प्राचीन नाट्य साहित्य अत्यन्त समृद्ध रहलैक अछि परन्तु तहिना आधुनिक कालमे नाट्यविधामे अत्यन्त पछुआयल रहल अछि। कोनो विशिष्ट रंगमंचक अभावमे नाट्य-रचनाक गति अत्यन्त मन्द रहल अछि। अवश्ये विगत किछु समयमे मैथिलीमे कतोक विशिष्ट नाटककारक आविर्भाव भेल अछि। अनेक विशिष्ट नाट्यकृति सब प्रकाशमे आयल अछि। मैथिली नाट्य साहित्यक श्रीवृद्धिमे प्रस्तुत नाट्यसंग्रह सेहो एक गोट प्रयास थिक।

नाट्यकेँ सकल काव्य विधामे सर्वाधिक रमणीय कहल गेल अछि आ महाकवि कालिदास एकरा शान्त चाक्षुष् यज्ञ कहि कऽ प्रतिष्ठा देलनि अछि। प्रेक्षकक रुचि-संस्कारमे परिवर्त्तन तथा अभिनयक हेतु नित्य नवीन उपादानक आविष्कार ओ उपलब्धिसँ नाट्य-शिल्प ओ अभिनय-शैलियहुमे नित्य परिवर्तन होइत रहैत छैक। एहिसँ नाट्य-विधामे नित्यनूतन प्रयोग होइत रहैत अछि। श्रव्यनाट्य सर्वथा आधुनिक वैज्ञानिक युगक उद्भावना थिक। श्रव्यनाट्य विशेषकाल रेडियोसँ प्रसारित होइत रहबाक कारणे एकरा रेडियो नाटक कहबाक परिपाटी अछि। परन्तु एकरा टेप रेकर्डर पर अथवा लौंग प्ले रेकर्ड पर सेहो सूनल जा सकैत अछि। तेँ एकरा व्यापक नाम श्रव्यनाट्यसँ अभिहित करब विशेष उपयुक्त अछि।

श्रव्यनाट्यमे यद्यपि देखल नहि, सूनल जाइत अछि; तथापि एहिमे श्रोताकेँ ओहने रसानुभूति प्राप्त होइछ जेहन अनुभूति प्रेक्षागृहमे अभिनीत नाटकक प्रत्यक्ष दर्शनसँ होइछ। अवश्ये दृश्यनाट्यमे आंगिक, सात्त्विक ओ आहार्य अभिनयक कारणे प्रेक्षक नाट्यवस्तुक अभिनयक कलात्मकताक आनन्द लेबामे क्षम होइत अछि। श्रव्यनाट्यमे ई सुविधा नहि रहैछ। परन्तु संवादक द्वारा तथा विभिन्न प्रकारक ध्वनि-संयोजनक प्रभावद्वारा आंगिक, सात्त्विक ओ आहार्य अभिनयक प्रतीति प्रेक्षककेँ करा देल जाइत अछि। एहिना सूच्य कथावस्तुक साधन विष्कम्भक-प्रवेशकक काज

संवादेसँ लेल जाइत अछि, संगहि अतीतवृत्त (फ्लैश बैक) सेहो साधन रूपमे प्रयुक्त होइत अछि। अन्तर ई अछि जे विष्कम्भक-प्रवेशकमे दुइ पात्रक वार्त्ता द्वारा अतीत घटनाक वर्णन मात्र कयल जाइत अछि परन्तु श्रव्यनाट्यमे ओकरा घटित होइत देखाओल जाइछ। एहिसँ नाट्यवस्तुमे रोचकता बढ़ि जाइत छैक। स्थान ओ कालक परिवर्त्तन सूचित करबाक लेल साधन होइत अछि 'मौन' (पॉज)। अत्यन्त छोट कालखण्ड अथवा अत्यन्त लघु दूरी धरि पात्रक गमनागमन सूचित करबाक लेल किंचित् मौन राखल जाइछ जकरा 'मौन' शब्दसँ निर्दिष्ट कयल जाइछ। ओहिसँ अधिक काल वा दूरीक व्यवधान-सूचनाकेँ 'लघुमौन' (शॉर्टपॉज) कहल जाइछ। यदि कथाक्रममे दीर्घ कालावधिक अन्तराल रहैछ वा कथावस्तुक घटना अन्य स्थान पर घटित होइत अछि तँ मध्यवर्ती अवधिक निर्देश 'दीर्घ मौन' (लौंग पॉज)सँ देल जाइछ। एकरा हेतु अभिनयमे ध्वनि-प्रभावक अवसरानुकूल प्रयोग कयल जाइत अछि। एहन लौंगपॉजकेँ एहिठाम प्रथम दृश्य इत्यादिसँ निर्दिष्ट कयल गेल। ई एकटा उपचार मात्र थिक अन्यथा जे श्रव्य अछि से दृश्य कोना कहल जाय? सारांशतः श्रव्यनाट्यमे संवाद ओ ध्वनि-प्रभावक माध्यमसँ प्रत्यक्षत्वक प्रतीति कराय नाट्य प्रभाव उत्पन्न कयल जाइछ।

एहि संग्रहमे सातगोट नाटक संकलित अछि जे दृश्यनाट्य ओ श्रव्यनाट्य उभय कोटिक अछि। विभिन्न समय ओ अवसर पर एहि नाटक सभक अनेक बेर अभिनय भऽ चुकल अछि। विशेषतः संग्रहक प्रथम नाटक 'पसिझैत पाथर' पाण्डुलिपिमे रहितहु अनेक मंचसँ बहुतो बेर अभिनीत ओ प्रशंसित भेल। एकर विशेषता ई अछि जे कोनो एकहु अंकक अभिनय स्वतन्त्र रूपसँ कयल जा सकैछ अथवा कोनहु अंकसँ आरम्भ कऽ अन्तिम अंक धरिक अभिनय कयल जा सकैछ। नाट्यप्रभावमे एहिसँ कोनो व्याघात नहि पड़तैक। १९७६मे साकेतानन्दक निर्देशनमे एकर प्रमुख अंशक 'सिन्दूरक मोल'नामसँ दरभंगा आकाशवाणीसँ प्रसारण भेल छल। १९७६एमे चेतना समितिक विद्यापति पर्वमे अभिनय हेतु मिथिला विश्वविद्यालयकेँ आमन्त्रित कयल गेल छल। विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक एम्. ए. क छात्र-छात्री लोकनि एहि अवसर पर 'पसिझैत पाथर' नाटकक अभिनय प्रस्तुत कयलनि जे अत्यन्त प्रशंसित भेल छल। भाग लेनिहार कलाकार छलाह सर्वश्री उमाकान्तझा (गणेश), मुरलीधरझा (चानन), सदानन्दझा (विमल), दयाकान्तमिश्र (सुरेन्द्र), देवकान्तमिश्र

(मन्त्री), कमलनारायणराय (धनेश्वर), दयानन्दमिश्र (दर्शक-१), रामचन्द्रझा (दर्शक-२), श्रीमतीकमलाचौधरी (प्रतिमा), श्रीमती ललिताझा (चम्पा)।

चेतना-समिति व्यवहारतः अपना मंच पर अभिनीत अप्रकाशित नाटकके प्रकाशित करैत रहल अछि । अतः एहू नाटकक प्रकाशन चेतना-समिति द्वारा होयबाक चाहैत छल, परन्तु कहियो कोनो उच्चावच नहि भेलैक आ नाटक पड़ल रहल, तथापि समय-समय पर अभिनीत होइत रहल। संकल्प लोक, लहेरियासराय एहि वर्ष पुस्तक-प्रकाशन हेतु जे उपसमिति गठित कयने छल ताहिमे कतोक सदस्य 'पसिझैत पाथर'क अभिनयमे भाग लेने छलाह। समिति हमर अन्यहु नाटकक संग 'पसिझैत पाथर' केँ संस्था द्वारा सर्वसम्मत प्रकाशन-प्रस्ताव कयलक आ संस्था एकरा सर्वसम्मतिसँ स्वीकार कऽ प्रकाशित करा रहल अछि। हम संस्थाक प्रति हृदयसँ कृतज्ञ छी। विशेषत. सचिव श्रीजीबछझाक जे मनोयोग रहलनि तदर्थ आभारी छियनि ।

आतुरतामे पोथीक प्रेस कापी तैयार करबामे शोधप्रज्ञ श्रीचन्द्रशेखरझा ओ शिवचन्द्रझा, हमर मध्यम पुत्र श्रीशंकरदेवझा तथा डा० योगानन्दझाक बड़ परिश्रम रहलनि अछि। एहिना प्रकाशनमे प्रेसक मोर्चा सम्हारबामे प्रकाशन उपसमितिक प्रभारी डा.मुरलीधरझा तथा डा०योगानन्दझा हमर बाम-दहिन बाँहि जकाँ संग पूरैत रहलाह अछि । हम हिनका लोकनिके हृदयसँ आशीष दैत छियनि।

एहि नाट्य संग्रहक रचना ओ प्रकाशनमे अभिरुचि देखौनिहार अन्यान्य गुरुजन,मित्रवर्ग तथा सहृदय प्रेक्षक वर्गक प्रति अपन श्रद्धा निवेदित करैत छियनि।

'पसिझैत पाथरः नाट्य संग्रह' यदि मैथिली साहित्यमे ओ मैथिली रंगमंच पर किंचितो स्थान पाबि सकल तँ लेखक अपनाके कृतार्थ बुझताह।

श्रीरामदेवझा

कबिलपुर
लहेरियासराय दरभंगा
२ फरवरी, १९९६

नाट्य-क्रम

नाट्याभिधान		पृष्ठ-संख्या
पसिझैत पाथर	:	१
लोचन धाए फेधाएल	:	४३
रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल	:	६७
कुलाँरक भूख	:	८९
मनुष्यक देवता	:	१०५
पिपासा	:	११६
चानमक बसात	:	१२७

घसिभ्रैत घाथर

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

विमल	:	इंजीनियर युवक, प्रतिमाक पति ओ धनेश्वरक बेटा
चानन	:	ग्रामीण युवक, चम्पाक पति
गणेश	:	अधेड़ वयसक, प्रतिमाक पिता
सुरेन्द्र	:	डाक्टर, गणेशक अभिन्न मित्र
धनेश्वर	:	गामक धनाढ्य व्यक्ति, विमलक पिता
मन्त्रीजी	:	नाटक समितिक मन्त्री
दर्शक-१	:	
दर्शक-२	:	
दर्शक सभ	:	

स्त्री पात्री

प्रतिमा	:	गणेशक पुत्री,विमलक पत्नी ओ महिला कालेजमेप्रोफसर
चम्पा	:	चाननक पत्नी, महिला कालेज-होस्टलक दाइ

प्रथम अंक

[स्थान : रंगमंच। रंगमंच सज्जित अछि। आगाँ दर्शक सभ बैसल अछि। नाटकारम्भक वाद्य बाजि रहल छैक। सहसा वाद्य यंत्र शान्त भऽ जाइछ। नाट्य समितिक मन्त्री खद्दरक धोती कुर्त्ता पहिरने, कान्ह पर चद्दरि रखने प्रवेश करैत अछि।]

मन्त्री : (सभामे स्थित दर्शकके प्रणाम करैत) नाटकप्रेमी बन्धुगण! आइ अत्यन्त प्रसन्नताक बात थिक जे साधनहीन युवकलोकनि द्वारा प्रस्तुत एहि नाटकके देखबाक लेल अपने लोकनि कृपापूर्वक उपस्थित छी।

दर्शक-१ : होअह। आब नाटक सुरू करह। बैसल-बैसल अकच्छ छी।

मन्त्री : शान्त रहू। नाटक आरम्भ होइमे आब विलम्ब नहि अछि। आइ जे नाटक होमऽ जा रहल अछि ....

दर्शक-२ : लोक बोर भऽ रहल अछि।

मन्त्री : महाशय जी! कनेक धैर्य धरू। अपन समाजक किछु उत्साही युवा अपन कलाक प्रदर्शन करत। कनेक कष्टो हो तँ तकरा अवधारि कऽ प्रोत्साहन देबाक चाही। एना बाधा उपस्थित भेला पर नाटक कोना संभव हेतै?

चानन : (दर्शकमेसँ ऊठि) मन्त्रीजी! ककर दिन छिऐ जे बाधा देत!

मन्त्री : हमरा खबरि अछि जे युवकलोकनिक ई प्रयास बहुत गोटेके सहाज नहि छनि। तेँ अपने लोकनिसँ निवेदन जे शान्तिपूर्वक बैसल रही। भऽ सकै छै, मारि-पीट भऽ जाइ। रोड़ेबाजी होइक। पर्दा फाड़ि देल जाइ। आगि लगा देल जाइ। मुदा तैयो अहाँ सभ अगुतायब नहि, डेरायब नहि। खास कऽ महिलालोकनि घबड़ाथि नहि।

चानन : (फेर ऊठि) बेकार अहाँ डेराइ छी। हम सभ कमजोर नहि छी। हमरा सभक कार्यक्रममे जे झंझटि करत, सेहो सीखि लेत।

दर्शक-१ : तखन नाटक कैए ले बाउ।

चानन : चुप्प । नाटक हेबे करतै,के रोकनिहार अछि । कने आबि कऽ देखि लेअओ ।

दर्शक-२ : ओ !! ई गुमान ? जीह खीचि लेबौ ।

चानन : तोहर जीह खीचि लेबौ ।

दर्शक-१ : अए ! बन्द कर नाटक (चिकरि कऽ) खोल पर्दा ।

(दुनू स्टेज दिस बढ़ैत अछि ।)

चानन : (दौड़ि कऽ दुनूकें बाधा दैत) ओमहर कतऽ ! पहिने एम्हर फड़िछा ले ।

(तीनूमे धड़-पकड़ होइत छैक आ तहिनामे तीनू स्टेज पर चल जाइत अछि । दर्शकमे हल्ला होमऽ लगैत छैक ।)

मन्त्री : (तीनूकें छोड़यबाक चेष्टा करैत) औ ! एना किएक करैत छी ?

दर्शक-१ : बाभनक गाँवमे राड़ पजियार ? शान बघारत ? (दोसर दर्शक स्टेजकें उखाड़बाक विचारसँ एकटा खाम्हकें खूब जोरसँ डोलबऽ लगैत छैक । चानन ओकरा पकड़ि कऽ पटकि दैत अछि । फेर झपटि कऽ पहिलो दर्शककें पकड़ि कऽ ओकरे ऊपर पटकि कऽ ऊपरमे बैसि जाइत अछि ।)

चानन : बन्द कर आब नाटक । बन्द कर । (दाँत पीसि दुनूक मूड़ीके जोरसँ दबैत) जमानाक आगिकें,अन्हड़ बिहाड़िकें रोकनिहार ! बन्द कर नाटक ! आब बन्द कर नाटक !

मन्त्री : (चाननकें हटयबाक चेष्टा करैत अछि मुदा असफल रहैत अछि।) चानन ! ई की करैत छेँ ? छोड़ ! हट !

धनेश्वर : (हाथमे मकुआवला बेंत लेने गरजैत दर्शक-मंडलीमेसँ धड़फड़ा कऽ मंच पर अबैत अछि ।) तोरा सभक ई दर्प ? खलड़ा खीचि कऽ भुस्सा भरि देब । पाँखि जनमलौ अछि तँ पाँखि उखाड़ि देबौ । (चाननकें बड़ी जोरसँ ठेलि कऽ खसा दैत छैक, फेर पाछाँसँ ओकर कमीजक कालर पकड़ि कऽ धिसियबैत मारबाक लेल बेंत उसाहैत छैक मुदा बीचेमे मन्त्री बेंत रोकि लैत छक ।)

मन्त्री : धनेश्वर बाबू ! शान्त होउ । शान्त होउ ।

धनेश्वर : (खूब जोरस ठेलैत) हट एहि ठामसँ, ने तँ तोरो सब ओकालति झाड़ि देबौ।

मन्त्री : अहाँ सन प्रतिष्ठित लोकके एना आवेशमे नहि अयबाक चाही।

धनेश्वर : अए ! एतेक नामर्द लोक नहि छी जे हमरा सामनेमे हमर कुचेष्टा, हमर कौचर्य आ निन्दा करैत रहत आ हम चुपचाप देखैत रहब। नाटक केनिहार एक-एकटा छओँड़ाकेँ झरका कऽ मारि देबाक सामर्थ्य रखैत छी।

मन्त्री : के कहलक, जे एहि नाटकमे अहाँक निन्दा कयल जायत ?

दर्शक-१ : हँ हँ। एहि नाटकमे धनेसरबाबाकेँ धुआ कऽ खिस्सा गढ़ल गेल छै जे, बेटाक बियाहमे पुरदारा टाका मङैत छथिन। कर्ज दऽ कऽ सूदिमे जिनगी भरि जऽन-बोनिहारकेँ खटबैत छथिन। असाभीक घर उजाड़ि दखल कऽ लैत छथिन। देयादोबादकेँ नहि छोड़ैत छथिन। गाममे सभकेँ लड़बिते रहैत छथिन।

मन्त्री : आइ तँ सौंसे समाजे एहन लोकसँ भरल अछि। हमर सभक नाटकक कथा कोनो एक व्यक्तिक कथा नहि। सौंसे समाजक कथा थिक। समाजक व्यथा थिक। हमर सभक नाटक, नाटक नहि, धधकैत जिनगीक धाह थिक। ओहि धाहसँ पसिझैत पाथरक अन्तःसँ फूटल अमृतक धार थिक।

चानन : एहन एकटा धनेसरे बाबू छथि जे हिनके लागि गेलनि ?

धनेश्वर : चोप्प ! (चानन दिस बढ़ैत) रे ! तोरा की होइ छौ जे गामा पहलवान भऽ गेलहुँ ? (ठोंठ पकड़ि कऽ ठेलैत दू-तीन थापड़ चला दैत छैक। मन्त्री छोड़बऽ लगैछ।)

मन्त्री : धनेश्वर बाबू ! अहाँ अन्याय कऽ रहल छी, अत्याचार कऽ रहल छी। युगक बहैत बसातकेँ देखियौ। एहि बसातकेँ रोकि नहि सकैत छिऐक।

धनेश्वर : तोँ छह, तेँ हम गम खयने जा रहल छी। जँ आन केओ एना कयने रहितय, एना बाजल रहितय, तँ सोझे मटिया तेल ढारि कऽ सलाइ खरड़ि देने रहितिऐ।

मन्त्री : कहियो ई सामर्थ्य छल अहाँके। तहिया लोक धखाइत छल। पड़ाइत छल जानक डरसँ। आब धाख टूटि गेलै। डर छूटि गेलै। पापक घैल फूटि गेलै। आब किछु लोक अवश्य एहन अछि जे मरबा लेल तैयार अछि।

धनेश्वर : कने हमहू देखी, के अछि मरनिहार ?

मन्त्री : अहाँके भ्रम अछि। जँ सेहन्ता अछि तँ मङाउ मटिया तेलक टीन, यैह हम ठाढ़ छी।

चानन : मन्त्रीजी ! यैह हम छी ठाढ़। पहिने हमरे देहपर ढारथु तेल।

मन्त्री : धनेश्वर बाबू ! आब नीक यैह जे मञ्च परसँ उतरि जाइ आ नाटक होअऽ दिऐ। लोक बूझत जे इहो नाटकेक एकटा दृश्य छल।

धनेश्वर : नाटक नहि हेतै। खोल पर्दा। बन्द कर नाटक।

मन्त्री : (कुटिल हँसी हँसैत) नाटक हेतै ! एही ठाम हेतै आ अहींक कुकृत्यक अभिनय एहि ठाम हेतै। कान खोलि कऽ सूनि लिअऽ। दसटा गुण्डा लठैतके दर्शक मंडलीमे जमा कऽ देने एहि विशाल समुदायके (दर्शक दिस देखबैत) अपने मोने हाँकि नहि सकैत छिऐक।

धनेश्वर : खूनक धार बहि जेतौ, हम कहि दैत छिऔ। (सोर करैत) कहाँ छेँ रौ ! बजा तऽ सबके।

(दर्शकमेसँ किछु गोटे उठऽ चाहैत अछि, मुदा लगक लोक जबर्दस्ती पकड़ि कऽ बैसा दैत छैक।)

मन्त्री : बेकार बजायब थिक। अहाँक प्रत्येक लठैतके हमर तीन-तीन गोटे घेरि कऽ बैसल अछि (मञ्चपर एक कातमे ठाढ़ दुनू दर्शकके डँटैत) तुम लोग क्या करता है यहाँ ? हटो। गेट आउट। आइ से,यू गेट आउट।

(दुनू दर्शक हकबका जाइत अछि। मन्त्री चानन दिस तकैत अछि। चानन दुनूके एकेबेर दुनू हाथे गर्दनियाँ दऽ कऽ नीचाँ ठेलि दैत छैक।)

धनेश्वर : चननमा ! तोरा सीर पर काल बिसा रहल छौ, काल।

मन्त्री : महाकालो नाचि सकैत छैक, मुदा तकर चिन्ता नहि।

चानन : नीक चाही तऽ आब चल जाइ।

धनेश्वर : चननमा। बापक लेल कर्जा जँ काल्हि हम असूलि नहि लौ
तँ फेर हमर नाँव नहि।

चानन : असूलि लेब।

धनेश्वर : आइसँ काल्हि धरि हमर जमीन खाली कर (जाइत-जाइत)
तखन देखै छियौ जे के बपहिया अत्रे छौ (जाइछ।)

चानन : जाउ जाउ। देखल जेतै।

मन्त्री : (दर्शक दिस देखि) की औ बाबू सभ! नाटक होइक ?

दर्शकसभ : हँ हँ। नाटक होइ। नाटक होइ।

चानन : (जोसमे) इनकिलाब ---जिन्दाबाद। हमारा नाटक हो के
रहेगा ——जिन्दाबाद जिन्दाबाद।

मन्त्री : जिन्दाबाद बन्द। नाटक सुरू।

(चानन ओ मन्त्री दूनू एक दिस चल जाइत अछि।)



द्वितीय अंक

[स्थान : मध्यम वर्गीय मकानक कोठली । एकटा चौकी, दू-तीन टा कुर्सी, एक टा टेबुल । टेबुल पर किछु पोथी राखल । हैंगर पर किछु कपड़ा टाङल अछि । देबालक खुट्टी पर एकटा पारिवारिक फोटो टाङल अछि । गणेश थाकल-ठेहियायल मुद्रामे कोठलीमे प्रवेश करैत अछि आ धम्म दऽ कुर्सी पर बैसि जाइत अछि । माथ कुर्सीक पाछाँ टेकि दैत अछि । फेर उठि कऽ कुर्त्ता खोलि कऽ टाङि दैत अछि ।]

गणेश : प्रतिमा ! प्रतिमा !!

प्रतिमा : (नेपथ्यसँ) जी ! एलौं बाबूजी ! (प्रवेश कऽ) कखन एलिऐ अहाँ ?

गणेश : (हँसैत) गेलिऐ कहाँ ? सौंसे बौआ कऽ अबैत छी तँ होइए जे कतौ ने गेल छलहुँ ?

प्रतिमा : से की ? की भेल ?

गणेश : किछु नहि बेटी ! अहाँ एक ग्लास जल दियऽ, पियास लागल अछि ।

प्रतिमा : खालिए पानि पीबै ?

गणेश : हँ, खालिए पानि पीबै ।

प्रतिमा : लेने अबैत छी । (भीतरसँ एक ग्लास जल लेने अबैत अछि आ गणेश दिस बढ़बैत अछि ।)

गणेश : (प्रतिमाक हाथसँ जल लऽ पीबि लैत अछि आ खाली ग्लास टेबुल पर राखि दैत अछि।) आइ हमर मोन बड़ सुस्त अछि ।

प्रतिमा : ओछाओन झाड़ि दैत छी, पड़ि रहू थोड़े काल ।

गणेश : से भाग्यमे कहाँ अछि ? अच्छा, सुरेन्द्र आयलो छलाह ?

प्रतिमा : कहाँ एलथिन अछि एखन धरि ?

गणेश : अबिते होयताह । जीवनमे हमर एकेटा मित्र अछि जे सुख-दुख मे संग देनिहार अछि । बेटी ! सुरेन्द्रकेँ हमरासँ भिन्न नहि बुझियनि । बूझू जे सुरेन्द्र नहि छथि हमही छी । हमरा लय बेचारा अपन जानो दै लय तैयार रहै अछि । हमही ओकरा लय कहियो किछु नहि केलिऐ । अच्छा ! जाउ, चाहक पानि चढ़ा दियौ । अबिते देरी जँ चाह नहि दऽ दियौक तँ ओ तुरुक भऽ जाइत अछि ।

सुरेन्द्र : (नेपथ्यमँ) गणेश भाइ ! गणेश भाइ छह हौ !!

गणेश : वैह, नाम लैत देरी हाजिर भऽ गेल । (जोरसँ) आबह ने, तँ हल्ला करैत छह ओतऽ सँ ।

सुरेन्द्र : (प्रवेश करैत) तोरा ओतऽ हमरा हल्ला करऽ पड़ैत अछि । कतेक बेर कहलियह जे कॉलिंग बेल लगाबह । कमसँ कम हमरा लेल, रिजर्वड फॉर डाक्टर सुरेन्द्र वनली ।

प्रतिमा : गोड़ लगै छी काका जी !

सुरेन्द्र : (सकांच होइत) ओ ! प्रतिमा ! जी । खूब मोटो ! गय ! भौजी कतऽ छथुन ? जो, कहुन, हमर चाह । (कुर्सी पर बैसैत अछि ।)

प्रतिमा : जी चाह··· ···

सुरेन्द्र : चाह नहि······जल्दी जो । जो जो-जो । गय ला ने चाह ! हमर कण्ठ सुखाइए ।

प्रतिमा : बस, पाँच मिनटमे भऽ जाइ छै काका जी !

सुरेन्द्र : पाँच मिनट तँ भऽ गेलौ । एतेक कालमे तँ हम तीन कप पीने रहितहुँ । (प्रतिमा जाइत अछि ।)

गणेश : सुरेन्द्र ! तोहूँ अबैत देरी सौंसे डेराकेँ दलमलित कऽ दैत छह । ई चाहक अभ्यास स्वास्थ्योकेँ किछु कहतह ?

सुरेन्द्र : हौ ! धीया पुता बूझइ जे हमरा जीह पर साइलेन्सर लगा देलक । बजन्ता हम सभ दिनुक, मुदा आब जहाँ फ्री स्टाइलमे बाजऽ लगैत छी कि ई धिया-पुता सभ जेना ताला लगा दैत अछि —साइलेन्स प्लीज ।

गणेश : कृपा भगवानक जे एतबो लगाम लागि जाइत छह।

सुरेन्द्र : हौ, जीवन छैक जीबाक लेल। हँसियो कऽ जीबहि पड़त, कानियो कऽ जीबहि पड़त। तखन किएक ने हँसिए कऽ जीबी ?

गणेश : बात कहैत छह ठीक किन्तु सभसँ पार लगैत नहि छैक। दुखोमे हँसैत रहब एकटा कला थिकैक आ सभ लोक कलाकार नहि होइत अछि। तों से भऽ सकैत छह।

सुरेन्द्र : भाइ ! सुनह। हम जे रोगीक इलाज करैत छिऐक से दबाइसँ नहि।

गणेश : तखन की गप्प सँ ?

सुरेन्द्र : भाइ ! बुझह तँ, शुद्ध गप्पसँ इलाज करैत छिऐक। जखने रोगी आयल की दू टा झाड़ि कऽ बात कहि दैत छिऐक– कनेक खोंखी भेल, पेटमे मरोड़ भेल, पैर टटायल की पहूँचि गेलहुँ डाक्टर ओतऽ।' बस रोगीक आधा दुख एही पर पार।

गणेश : डाक्टरकें रोगीक प्रति सहानुभूतिशील रहक चाही। सहानुभूतिक समता कोनो पैघ सँ पैघ मूल्यवान दवाइ नहि कऽ सकैत छैक।

सुरेन्द्र : हौ ! हमर तँ प्रोफेसने एहन अछि जे दिन राति दुखे आ वेदनाक गप्प सुनैत रहैत छी। एहनमे जँ खूब बाजब नहि, खूब हँसब नहि, ठहाका नहि देब तँ अपने दुखित भऽ जायब।

गणेश : हँ, अस्वस्थ मनक रुग्न डाक्टर रोगीक इलाज की करतैक ?

सुरेन्द्र : हम आन जकाँ रोगीकें ई कहाँ कहैत छिऐक जे-- बाप रे ! अहाँकें भयंकर रोग अछि ! अहाँकें सतर्क भऽ कऽ उपचार करक चाही। औ ! एनामे तँ लोक नाभरोस भऽ जे काल्हि मरत से आइये मरि जायत।

गणेश : डाक्टर ! लोक रोगेसँ नहि मरैत अछि। कखनो कऽ परिस्थितियो विवश कऽ दैत छैक तँ लोक जीवनसँ मृत्युकें नीक बुझऽ लगैत छैक।

सुरेन्द्र : से की कहैत छह ? जीवन सभ स्थितिमे सभकेँ, जीवो-जन्तुकेँ प्रिय होइत छैक । जीबऽ सभ चाहैत अछि ।

गणेश : नहि हौ ! कखनो कऽ मृत्युए हितकर लगैत छैक ।

सुरेन्द्र : नो सीरियस टॉक । हम दर्शनशास्त्रक विवेचना करऽ नहि आयल छी । हम तँ हँसऽ चाहैत छी, हँसाबऽ चाहैत छी । (कनेक रुकि) आह ! हमर चाह ? हौजी ! बड्ड बजा गेल— बिना चाहकेँ एक खेपमे एतेक नहि बजैत छी ।

गणेश : प्रतिमा ! चाह की भेल ?

प्रतिमा : (नेपथ्यसँ) यंह छनने अबैत छी ।

सुरेन्द्र : धूर ! नहि होउ तँ बिन छननहि लेने आ ।

प्रतिमा : (चाह लेने प्रवेश करैत अछि) काका जी ! लिअऽ चाह ।

सुरेन्द्र : पहिने बाबूजीकेँ दहुन । थाकल जकाँ लगैत छथुन । (प्रतिमा गणेशकेँ आ सुरेन्द्रकेँ बेराबेरी चाह बढ़बैत अछि । दूनू चाह पीब आरम्भ करैत अछि ।) वाह ! खूब फस्ट चाह बनौलेँहेँ । बाह ! वाह ! तोरा तँ गणेश भाइ आ भौजी मीलि कऽ तेहन ट्रेनिंग देलथुन अछि जे जाहि घरमे जेबेँ तकरे गुलजार कऽ देबही । (प्रतिमा पहिने चाहक प्रशंसा पर प्रसन्न होइत अछि मुदा अगिला वाक्य पर लजा जाइछ आ झटकि कऽ आङन दिस चल जाइछ ।)

गणेश : से कहाँ कोनो जोगाड़ बैसि रहल छैक ? आइयो बौआ-ढहना कऽ चल अयलहुँ अछि ।

सुरेन्द्र : भाइ ! से तँ हमहूँ निश्चिन्त नहि छियह । कयटा कथा नजरि पर आयल अछि तँ प्रतिमा मोन पड़ैत देरी भटकि जाइत अछि । एहन सुशील, सौम्य,पवित्र,गुणवती कन्याकेँ जकरा-तकरा हाथमे नहि देल जा सकैत अछि ।

गणेश : हम की करिऐ से तोँही कहय ? हमर देह, बुद्धि, मोन-मस्तिष्क सभ जेना निष्क्रिय भेल जा रहल अछि । आब तोँही सम्हारह एहि परिवारकेँ ।

सुरेन्द्र : हमरो एकटा कथा बड़ पसिन्न पड़ल मुदा ओ एखन विवाहे ने करतैक । तखन गप्पे की !

गणेश : ओ, धनेश्वर बाबूक बालक दऽ कहने छलियह ने ?

सुरेन्द्र : हँ, ओहि विषयमे की भेलह ?

गणेश : ओना धनेश्वर बाबूक सम्बन्धमे लोकक धारणा नीक नहि छैक, किन्तु वरसँ हम बड़ प्रभावित भेलहुँ । 'आदौ तात वरंपश्य' जे कहैत छैक से हमरा लागल जेना प्रतिमाक समतूल हेतैक तँ वैह'। वर इंजीनियरिंगमे छैक ।

सुरेन्द्र : आगे कओन हवाल से कहह । एकसँ एक सुन्दर गुणवान वर भेटैत छैक मुदा भेटनहि की ?

गणेश : से सैह । मुँहसँ जे बहरयलनि ताहिसँ एको टाका कम नहि । आ हमरा तँ ओतबे पाइ अछि जे मासे-मासे बीमामे कटबैत छी ।

सुरेन्द्र : हूँ (कनेक गम्भीर होइत) धनेश्वर बाबू वास्तवमे एको पाइ छोड़ऽवला जीव नहि अछि । बीमाक पालिसी देखा कऽ घटकैती होयत नहि । हुनका तँ चाही नगदा-नगदी ।

गणेश : से आब जे होइ । मुदा ओ वर अपन रूप, अपन गुण, अपन व्यवहारसँ तेना हमर मोन मोहि लेलक अछि, हमर मोनमे बसि गेल अछि जे होइए, ओहन कुलमे ई कमल कोना जन्म लेलकैक ? हमरा तँ होइए जे अपन देहो बेचि कऽ ओकरा लऽ आनी । अपन प्रतिमा लय लऽ आनी ।

सुरेन्द्र : हँ, सुरू कयल जाय (रेघा कऽ गाबऽ लगैत अछि ।)—
हे काशी के वासियो सुन ले मेरी पुकार··· ···
(तावतमे प्रतिमा अबैत अछि । सुरेन्द्र ओकरा देखिते चुप्प भऽ जाइत अछि । प्रतिमा चाहक कप-प्लेट उठा कऽ चल जाइतअछि ।)

गणेश : तोँ बूढ़ भऽ गेलह आ नाक लगले छह । सभ बातकेँ हँस्सिएमे उड़ा दैत छहक । गम्भीर बातकेँ गम्भीर जकाँ लेबाक चाही ।

सुरेन्द्र : गप्पे तेहने आरम्भ कयलहक तँ हमर कोन दोष ? ओना सरकार जतऽ कहब चलैलय. जे कहब करैलय से हम तैयारे छी । किएक तँ प्रतिमा तोरे बेटी नहि, हमरो बेटी थीक हमरा तोरा एहि प्वाइंट पर फिफ्टी-फिफ्टीक तसफीया भेल अछि । तवार्द्धञ्च ममार्द्धञ्च ।

गणेश : से करबोक छह तोरे। जे काज हमरासँ सम्भव नहि भऽ सकल अछि से, भाइ ! तोरे करबाक छह।

सुरेन्द्र : से करबे करबै की। एहिमे तोरा संदेह किएक छह ?

गणेश : संदेह नहि। (सुरेन्द्रक दुनू हाथ जोरसँ पकड़ि) हमरा वचन देह जे हमर सभ काज तोँ पूरा करबह। वचन देह। हमरा वचन दयह। वचन देत छह की नहि ? (कहैत-कहैत गणेश ठाढ़ भऽ जाइछ।)

सुरेन्द्र : (गणेशकेँ देह पकड़ि बैसबैत) आहिरे बा ! तोँ एना भावुक किएक भऽ गेलह अछि ? यू आर वेरी सेंटीमेंटल।

गणेश : सेंटीमेंटल नहि सुरेन्द्र ! हम कहियो सेंटीमेंटल नहि छलहुँ। मुदा हमरा चारू दिस अनहारे-अनहार लगैत अछि। हमरा अपन अस्तित्वे परसँ विश्वास हटि गेल अछि। अस्तित्वहीनताक बोध मृत्युक दोसर नाम थिकैक।

सुरेन्द्र : देखह। व्यवस्था आ तिलक-दहेजक प्रथा अपन समाजक असाध्य रोग बनि गेल छैक, इनक्यूरेबुल ! मुदा एकरासँ लड़बाक छैक। पड़यने काज नहि चलि सकैछ। हमहूँ अपना ढंगसँ कोसिस करैत छिऐक, किछु ने किछु समाधान बहरयबे करतैक। भावुक आ निरस्त होयबाक नहि चाही।

गणेश : की कहैत छह ? हमर अपने स्वास्थ्य नीक नहि अछि। होइत अछि जे कखनो किछु भऽ ने जाय। तखन की हेतै ? प्रतिमा अछि, तकरा बाद नीलिमा अछि। कमलू से एखन धरि स्कूले धयने अछि। के देखतै एकरा सभकेँ ? की देने जयबैक ? बीमाक दू-एकटा पालिसी छोड़ि कऽ हमरा अछिहे की ?

सुरेन्द्र : धुत्! की सभ सोचि जाइत छह ? केहन तँ स्वस्थ छह। केशो ने पकलह अछि। अनेरो की कहाँ सोचि कऽ दिमाग खराब कयने रहैत छह।

गणेश : नहि हौ ! हमरा अपना हृदयरोगक सन्देह होइत अछि।

सुरेन्द्र : मेडिकल साइन्स पढ़लहुँ हम आ स्पेसलिस्ट भऽ गेलह तोँ।

गणेश : रोगीक अपनो मोनक धारणा होइत छैक आ डाक्टरकें तकरा विचारमे राखक चाही ।

सुरेन्द्र : बेस भाइ बेस। जाँचिए दैत छियह । (नेपथ्य दिस) ए प्रतिमा ! प्रतिमा !!

प्रतिमा : (प्रवेश कऽ) जी काकाजी !

सुरेन्द्र : गय ! हम अपन बैग दऽ देने छलिऐक नीलिमाकें । देबै की ? अपनेसँ छीनि कऽ आङन पड़ा गेल छलि । लेने आ कनी ।

प्रतिमा : जी, लेने अबैत छी (प्रतिमा भीतर जाय एकटा बैग लेने अबैत अछि ।)

सुरेन्द्र : (प्रतिमासँ बेग लैत) ला वैग । तोरे बापकें जँचबाक अछि । (कनेक रुकि) नहि, वैह हमरा जँचैत छौ । अच्छा फीसमे फेर एक बेर चाह ।

प्रतिमा : जी (जाइत अछि ।)

(सुरेन्द्र आला, ब्लड प्रेसर जाँचऽवला यन्त्र आदि निकालि गणेशकें जँचैत अछि । जाँचि कऽ यन्त्र सभकें समेटि बेगमे बन्द कऽ कुर्सी पर बैसैत अछि ।)

सुरेन्द्र : हौ ! हमरा तँ कोनो रोगक चेन्ह नहि भेटल अछि । तखन, की तँ हमर बुद्धि धोखा दैत अछि, ने तँ यन्त्र धोखा दैत आ नहि तँ तों धोखा दैत छह ।

गणेश : धोखा नहि । कखनो कऽ एहन होइत छैक जे लोक रोगसँ पीड़ित रहैत अछि मुदा डाक्टरकें ओकर थाह नहि लगैत छैक । (प्रतिमा चाह लऽ कऽ अबैत अछि । सुरेन्द्र चाह लऽ कऽ पीबऽ लगैत अछि । प्रतिमा कनेक काल ठाढ़ि रहैत अछि ।)

सुरेन्द्र : जो ने, तों अपन काज करगऽ (गणेशकें लक्ष्य कऽ) हँ, हमरा जनैत कोनो रोग नहि छह । खाली मनरोग छह । तथापि दवाइ लीखि दैत छियह ।

गणेश : हार्ट डिजीजक सन्देह हमरा अछि, तों तकरे दवाइ लिखह । ओकर जे जाँच होइक से करा लिहह बरु ।

सुरेन्द्र : (प्रेस्क्रिप्सन लीखि कऽ दैत) ठीक छैक। ई जाँच सभ करा दिहक। जाँच तँ हमहीं करा दितियह, मुदा सन्देहक बिमारीमे हमरा पर विश्वास नहि होयतह। तोँ अपने जाँच करबिहह (उठैत) बेश, आब चलैत छियह।

गणेश : (उठि कऽ) जाह, मुदा कालिह भोरे फेर अबिहह, बहुत रास काज तोरा करबाक छह। जँ हम नहिञो रही, तैयो प्रतिमाकेँ सब बात बूझल रहतैक। ओ कहि देतह।

सुरेन्द्र : किएक ? कतऽ जेबाक छह ?

गणेश : सम्भव अछि, अचानक कतहु चलि दी, तँ हमरासँ भेट नहि होयतह।

सुरेन्द्र : बेस, हम आबि जायब।

गणेश : अवश्य ?

(सुरेन्द्र आगाँ बढ़ैत अछि। गणेश कनेक रुकैत अछि। फेर विह्वल भऽ कऽ सुरेन्द्रकेँ सोर करैत छैक।)

गणेश : सुरेन्द्र !

सुरेन्द्र : (अचानक रुकि पाछाँ घुमि कऽ) आब की ?

गणेश : घूमह कनेक। तोरा हम कनेक नीक जकाँ देखऽ चाहैत छियह।

सुरेन्द्र : से किएक हौ ?

गणेश : किछु नहि। तोरामे हमर अपन आत्माक दर्शन होइत अछि। लगैत अछि, ओहि जन्ममे तोँ हमर सहोदर भाइ छलह। होइए जे अगिलो जन्ममे तोँ हमर सहोदर भऽ कऽ जन्म लितह।

सुरेन्द्र : ओ ! तँ अगिलो जन्ममे हमरासँ कमबयबाक विचार अछि (दुनूकेँ हँसी लागि जाइत छैक) अच्छा ! आब कालिह भेंट होयत। (जाइत अछि।)

[मंच पर क्रमशः प्रकाश मन्द होइत जाइत छैक, गणेश शिथिल गतिएँ आबि कऽ कुर्सी पर बैसि जाइत अछि। रुमालसँ नोरायल आँखिकेँ पोछि लैत अछि। फेर माथ उठा कऽ शून्य दिस किछु काल तकैत रहैत अछि। फेर आँखि पोछि प्रतिमाकेँ सोर करैत अछि।]

गणेश : प्रतिमा ! प्रतिमा !

प्रतिमा : (प्रवेश करैत) जी बाबूजी ।

गणेश : की करैत छलहुँ ?

प्रतिमा : नीलिमाकेँ एकटा कसीदा देखबैत छलिऐक ।

गणेश : नीलिमा-कमलूकेँ देखबो ने केलिऐक अछि एखन धरि । अच्छा, सुरेन्द्र ई प्रेस्क्रिप्सन (प्रतिमाकेँ दैत) लीखि गेलाह अछि । दवाइ आ जाँच लेल । ओरिया कऽ राखू, काल्हि काज देत । (प्रकाश कनेक मन्द होइत छैक) (प्रतिमा जाय चाहैत अछि तँ गणेश फेर सोर करैत छैक) आ' हे सुनू ! (प्रतिमा घूमैत अछि ।) ई तीनटा बीमाक पॉलिसी छैक । एकरा कनेक ओरिया कऽ राखब ।

प्रतिमा : ई हमरा किएक दैत छी बाबूजी ?

गणेश : हमरा लगमे भुतिया जाइत अछि । अहाँक लगमे सुरक्षित रहत । अहाँ सभ भाइ-बहीनमे जेठ छी ने । एकर सभक ज्ञान रहक चाही ने । कागज कोना राखी तकर जबाबदेही सीखब ने । एह, सुरेन्द्र मारि गप्प-सप्प कयलनि । कहलनि जे बीमावलाक मृत्यु होइत छैक तँ डाक्टरसँ आखरी प्रमाण पत्र लऽ लेबाक चाही । ने तँ झंझटि भऽ जाइत छैक ।

प्रतिमा : एही सब दुआरे तँ माँ बीमा करबैसँ मना करैत छलि । एहिमे खाली अलच्छे बात सभ लोक सोचैत छैक ।

गणेश : से बात नहि । सुरेन्द्र छथि ने, हमर बाल संगी । कोनो बेर-विपत्तिमे ठाढ़ भेनिहार । बीमावला गप्प-सप्प तँ जेनरल नॉलेजक वस्तु थिकैक ने । सभकेँ जनबाक चाही ।

प्रतिमा : हम जानि कऽ को करब ?

गणेश : आहि ! ई सभ जनबाक चाही । हितेक गप्प कहलनि अछि ने । हम जँ कखनो नहियो रही आ कोनो खगता होअय तँ हुनके बजा लेबनि । एहि बातकेँ अहूँ मोन राखो ।

प्रतिमा : अहाँ आराम करू बाबूजी । बड़ थाकल छी । अपना देहकेँ आराम नहि देबैक तँ कोना हेतैं ।

गणेश : हँ बेटी ! आइ हम आराम करब आ खूब निश्चिन्त भऽ कऽ सूतब । आब साँझ भऽ गेलैक । (प्रकाश आओर मद्धिम होइत छैक)

प्रतिमा : भोजन कऽ लियऽ तखन सूति रहब । राति कऽ भोजन नहि कयने एक बगड़ाक माँसु घटि जाइत छैक ।

गणेश : (कनेक बिहुँसैत) आब हमरा देहक माँसु नहि घटत । खयबाक एको रत्ती मोन नहि अछि । अहाँ ओछाओनकेँ झाड़ि दियौक । आ, हे ! हम जखन सूति रही तँ केओ घरमे जा कऽ खटखुट नहि करय । सभकेँ मना कऽ देबैक ।

प्रतिमा : नहि केओ बाधा देत ।

गणेश : नहि, अहाँक बात केओ ने मानत । अहाँ सभकेँ बेरा-बेरी पठा दियऽ । हम अपने सभकेँ मना कऽ देबैक (प्रकाश और मद्धिम होइत छैक) आ, हे एक काज करू । हम सूति रहब तँ अहाँ बाहरसँ ताला लगा देबैक । कुंजी अपने लगमे राखि लेब । केओ खोज करऽ आबय तँ कहि देबैक जे भेंट नहि होयताह । नहि छथि । आ भोरे जखन सुरेन्द्र औताह तँ अपनेसँ ताला खोलि हमरा जगा देब । आब जाउ अहाँ ।

प्रतिमा : अच्छा । (प्रतिमा जाइत अछि)

[गणेश करुण दृष्टिसँ चारूकात तकैत अछि । देबाल पर टाङल पारिवारिक फोटोकेँ उतारि थोड़ेक काल देखैत अछि फेर चूमि कऽ छातीसँ सटा लैत अछि । एक हाथसँ दराजमेसँ एकटा छोट सीसी निकालि कऽ खूब ध्यानसँ देखि ढ़ाँड़मे खोंसि लैत अछि । वाद्ययन्त्रक करुण मन्द ध्वनि होमऽ लगैत छैक । दूरसँ उदासी गीतक स्वर सूनि पड़ैत छैक । अचानक मंच पर घनघोर अन्धकार भऽ जाइत छैक ।]

(पटाक्षेप होइत अछि ।)



तृतीय अंक

[स्थान : सड़कक कात। चानन प्रवेश करैत अछि। सड़कक कातक गाछ तरमे गमछासँ झाड़ि कऽ बैसि रहैत अछि। बैसल-बैसल औंघाय लगैत अछि। औंघाइत-औंघाइत गाछमे ओठंङि जाइत अछि आ क्रमहि फोंफ काटऽ लगैत अछि। दोसर दिससँ चम्पा हाथमे टिफिन-कैरियर लेने प्रवेश करैत अछि। चाननकेँ फोंफ कटैत देखि कनेक काल ठाढ़ि रहैत अछि। फेर एकटा पातर खड़्ढ़ उठा कऽ ओकरा कानमे दियऽ लगैत अछि तँ चानन सुतलेमे अपने हाथसँ कान पर एक थापर मारैत अछि। चम्पा ओकर माथ धऽ कऽ उठबैत छैक।]

चम्पा : हए! हए! उठौ ने। कहू ने, जतऽ बैसल कि फोंफ काटऽ लागल। एहन कतौ लोक भेल अछि ?

चानन : ऊँ! ऊँ! हए के छी ? (फेर सूति रहैत अछि।)

चम्पा : ई बीच बाट पर सूतैत केहन लगै छै ? (फेर माथ डोलबैत) हए, उठबो करौ ने! उठै छै कि हम मूँहमे परोठा ठूसि दिऐ ?

चानन : (धड़फड़ा कऽ उठैत) के छी ?(चम्पा पर नजरि पड़ैत) ओ, चम्पा !!

चम्पा : (मुह दूसैत) चम्पा !! बजारो–हाटमे गोटेक अझक मारि लेबामे केहन चोख !!

चानन : तँ ऐठाँ बैसि कऽ की तास खेलितहुँ ?

चम्पा : एना, बिना समाद देने कोना चल एलै ?

चानन : तोरा समादो देलियौ, तैयो ने जल्दी एलेँ।

चम्पा : हमरा खबरि भेटलै कहाँ ? सुनैत देरी आबिए रहल छी।

चानन : एह ! बाट तकैत-तकैत आँखि पथरा गेल।

चम्पा : से, पहिने समाद दऽ दितै जे अबैया छै, तँ एना बाट नै ने ताकऽ पड़ितै आ, कनी हमरा लय बाटे ताकऽ पड़लै, तँ कोन अन्हेर भऽ गेलै ?

चानन : से तँ सैह। जिनगी भरि बाट ताकैसँ नीक जे कनेके काल बाट ताकऽ पड़य।

चम्पा : कोना-कोना एलै, से तँ किछु कहबे ने केलकै ?

चानन : बाते एहन भेलै जे ... .

चम्पा : की ? की भेलै ? फेर किछु झंझटि बेसाहि एलै की ? ओइ बेर, एहिना, नाटकमे ठकठेना कऽ बैसलै तँ धनेसर बाबू जानक गाहक बनि गेलै।

चानन : चम्पा ! समरथ के नहि दोस गोसाँई। गरीबक जानक गाहक तँ साधारण कीड़ो-फतिङ्गा सभ भऽ जाइ छै।

चम्पा : (विकल भऽ) की भेलै से बजबो करौ ने ? सभ कुशल-छेम छै ने ? माय-बाबू नीके छथिन ने ?

चानन : (बेपरवाहि जकाँ) सऽभ ठीक-ठाक छै।

चम्पा : तखन...... . ...

चानन : छोड़ ई नोकरी-चाकरी। आब चल गाम।

चम्पा : से किए ? हमर नोकरी नीक नहि लगै छै ? आ कि हमर कोनो बेबहारसँ मोनमे दुख भेलैए ?

चानन : ई की बजै छेँ ? आइ तँ से खुसीक दिन भेल अछि जे तोरा फेरसँ गओना करा कऽ घरलछमी बना कऽ लऽ जाइक मोन होइए।

चम्पा : खूब बनबै छै हमरा ! किए ? से मोन छै तँ एकटा सम्बन्धे कऽ ने लेअओ ! नऽव कनियाँ भेटि जेतै।

चानन : से तोरे बनाबक मोन अछि। की तोरा फेरसँ कनिञा बनब नीक नै लगतौ ? (दुनू हँसैत अछि।)

चम्पा : बात की छै से बजबो करौ ने ? तँ खिरखुऔनी मोन पड़ै छै। हमरा एहन-एहन बात नै नीक लगै अछि।

चानन : मुदा हमरा नीक लगै अछि।

चम्पा : ठीक छै। नीक लगै छै तँ अपन एसकरे बजैत रहओ। हम यैह चललहुँ (जाय चाहैत अछि।)

चानन : (जल्दीसँ आगाँसँ बाट घेरैत) गय ! सुन सुन, सुन सुन । कहै छै, बरख दिनपर भेंट तँ ओल सनक बोल ! गय ! तोँ हमर गुरू महराज छेँ जे सदिखन तोरा हम सेत्ताराम सेताराम कहैत रहियौ ?

चम्पा : हम से कहाँ कहै छिऐ। गाम परसँ एलै तँ कहना चाही ने जे…

चानन : गय ! सूनि ले। कान तिरपित कऽ ले । आब हम सब किसान भऽ गेलिऐ। बड़द लऽ कऽ खेत केनिहार।

चम्पा : (हँसैत) एते दिन की गदहा हँकनिहार छलै ?

चानन : (संगहि) ऊँ हुँ ! नूआक मोटा उठौनिहार गदहा। (हँसी रोकैत) आब हम छी हलधर किसान। अपन हर, अपन बड़द, अपन धरती, चम्पा ! अपन परिश्रम, अपन अन्न (ठहाका) हा हा हा !

चम्पा : अच्छा। तँ आब पिअइयो लगलैए ? तेँ ने भासल भासल गप्प होइ छै ! खबरदार, जे हमरा आब टोकलकै। की हमरा संग करार छलै जे कहियो भाङो नै पीब ? आ आइ अइ ठाम बीच सरेना पर तमेसा करऽ लागल। निसेबाजी ? (टिफिन वला डिब्बा चानन दिस फेकैत) हे ! लेअओ आ चल जाओ हमरा सोझासँ। ऐखन चल जाओ। जाइ छै की नै ? की हमही जाउ ?

चानन : (कनेक तुर्छ स्वरमे)एहन झगड़ाउ माउगि तँ देखल नहि ! गय ! निसाँ हम पीने छी की तोँ पीने छेँ ?

चम्पा : हँ हँ ! आब यैह सब कहतै की ? (नेप चुअबैत) कहि लौ ? बोहु छिऐ तँ जे कहबाक छै से कहि लौ। हम झगड़ाउ ! हम निसाँ पीने ! (आँचरसँ आँखि पोछैत अछि।)

चानन । एँ गय ! तोँ बजलेँ तँ किछु ने। कोनो बात ने। आ हमरा बजा गेल तँ आपठ खसा देलेँ। गय ! हम तोरा कोना कऽ बुझबियौ जे आइ हमर केहन खुसनामाक दिन अछि ? खुसीमे मोनक उद्गार बहार भऽ गेल तँ ओ निसाँक गप्प भऽ गेल ? कहै छै, मोन उद्गार तँ गाबी गीत, घरमे खरची सुती निचिंत। आइ तँ हम नाचब, गायब। तोरो कहबौ जे नाच, गा आ थपड़ी बजा।

चम्पा : कोनो तमघैल उपड़लैए की ?

चानन : तमघैल नै । जाहि माँटि तर ओ गाड़ल रहै छै से माँटि भेटलै । से धरती भेटलै । ओहि धरतीक अधिकार भेटलै । आइ हम नै नाचब तँ के नाचत ? आइ हम नै गायब तँ के गाओत ? गय । जाहि-माँटि पर ठेहुनिञा देलहुँ, ओंघरयलहुँ । जे माँटि हमरा रोम-रोममे पैसल अछि । जाहि माँटि पर पैर रोपने ठाढ छी । जकरा कोड़ि कऽ हीरा-मोती बहार करैत रहलहुँ । ओ माँटि, ओ धरती, हमर नै छल । हमर बापक नै छलै । दादाक नै छलै । खन्दानमे ककरो नै छलै । ककरो नै भेलै । से माँटि, से धरती आइ अपन भऽ गेलै । चाननक भऽ गेलै । चम्पाक भऽ गेलै । चानन-चम्पा दुनूक भऽ गेलै । चानन-चम्पा : जिन्दाबाद । इनकिलाव-जिन्दाबाद ।

चम्पा : बस, बस, बस । इनकिलाब-जिन्दाबाद बन्द । काजक गप्प जल्दी बाजौ ।

चानन : किछु ने बुझले चम्पा । तों किछु ने बुझलें । तो खाली कौलेजक नोकरी केलें । तों एकबार नै पढ़लें । रेडियो नै सुनलें ! गय । हमरा सभकें अपन खेत भऽ गेल । हमरा सब सन बहुत लोककें अपन खेत भऽ गेलै ।

चम्पा : खेत उपड़लैए आ की बाढ़िमे भासि कऽ आबि गेलै ? बातो बाजी अङ समाइवला । (कनेक रुकि) हमरा आब विश्वास भऽ गेल जे एकर मति बिसेख भऽ गेलै । चलउ अस्पताल देखबै लय । बापक कर्ज सधाओल नै भेलै, अपन घर परजन्त नै भेलै आ·········

चानन : (ठहाका दैत) हा हा हा ! हे गय ! कान खोल । समाचार सून । बड़का बड़का जमीनवला सभक फाजिल जमीन सरकार लऽ रहल छै । ओ आब हमरे सभ सन बेजमीनवलाकें भेटतै । बटैया नै, ठीका नै, मनखप नै, अपन । अपन खतियानी ।

चम्पा : भेटि गेलै की भेटतै ?

चानन : भेटबे करतै। भेटबे करतै। आ कर्ज दऽ पुछैत छें ? एकेटा कानूनमे सधि गेलै। मूड़क कय गुना सूदि दैयो कऽ जे नै सधा सकलिऐ से एके रातिमे सधि गेलै।

चम्पा : मुदा बासडीहक मालिक धनेसर बाबूक आदमी लाठी लऽ कऽ चार डेङबैते रहतै ?

चानन : नै गय ! सबके बासडीहक पर्चा भेटि गेलै। आब हमरा अपना घरसँ क्यो कहियो हटा नहि सकत। कर्ज खतम भऽ गेल। घराड़ी अपन भऽ गेल। आब जँ जमीन नहिञो भेटत तँ दुनू बेकती कमा कऽ नीक जकाँ गुजर कऽ लेब। बाँचल रहय दुनू हाथ तँ कथूक परबाहि नहि। तेँ आब तों नोकरी छोड़। चल, दुनू गोटे अपन स्वतन्त्र जीवन बिताबी।

चम्पा : ई सत्ते गप्प छै की ? आ कि हमरा फुसिया कऽ गाम पर लऽ जाइ लय ई बात सभ गढ़लकैए ?

चानन : नहि विश्वास होइ छौ तोरा ? सवा सोलह आना सत्त कहै छियौ। आना तँ आब होइ नै छै, तेँ एक सय एक पाइ सत्त।

चम्पा : हमर सप्पत खाउक तँ।

चानन : तोहर सप्पत कहै छियौ, तोहर सप्पत।

चम्पा : हे, हमरा माफ कऽ दौ। हम की की सभ नै कहि देलिऐ। मोनमे नै राखौ अइ बात सब केँ।

चानन : हमरा मोनमे कोनो बात नै रहैए।

चम्पा : हम तँ ओहुना एकरा मरजीक बिना नोकरी नै केने छलिऐ। मुदा हमर नोकरी कयने गरफयदा तँ नै हेतै, तखन नोकरी छोड़ऽ किएक कहै छै ?

चानन : मौगीक जिद्द सोआइत नामी छै ? नीको बात बूझऽलय तैयार नहि। गय ! सुन।

चम्पा : सुनै छिऐ।

चानन : तों हमर घरवाली छें ?

चम्पा : छिअइ।

चानन : तोहर हम घरवला छियौ ?

चम्पा : तकरो पंचैती हेतै की ?

चानन : गप्प तँ सून पहिने। हमर एहि दुनू बाँहि-हाथकेँ देख। हमर चौड़ा छाती देख। हमर धूआ देख। हम अपने कमा कऽ आठ गोटेक पालन कऽ सकै छी ।

चम्पा : हम कहाँ कहै छिऐ जे ई अकरमल अछि।

चानन : तखन लोकके ँ ई कहैक मौका नहि देबै जे चननमाकेँ बहु कमाइ छै आ सब मीलि कऽ खाइत अछि।

चम्पा : (मुह चमकबैत) मर ! ई कोन बात भेलै ? ई तऽ बाबू भैयाक परिवारमे ने सोचय ! अपना आर मे तँ मौगी-पुरुख सभ कमाइत छै। आ आब तँ बाबुओ लोकनिक बेटी-पुतोहु पढ़ैत छथिन, पढ़ि कऽ नोकरी करैत छथिन। हुनका सभकेँ संकोचे ने, तँ हमरा कोन संकोच ?

चानन : चम्पा तोँ नै बुझबेँ। हमर एतेक भाषण अकारथ भऽ गेल।

चम्पा : तँ एते बात बाजल से भाषणे छलै ? सत्त नहि ?

चानन : भाषणमे सभ किछु चलै छै। सुननिहारकेँ परतीत कराबऽ लय भाषणमे किछु कहल जा सकै छै।

चम्पा : तखन हमर नोकरी छोड़ायब कोन बुधियारी हेतै ?

चानन : चम्पा। चारू कात देखै नहि छही कतेक जोर-जबरदस्ती चलि रहल छै। जँ एनामे तोरो जबरदस्ती अपरेसन कऽ देतौ तँ जीवन भरि बाँझिन बनल रहऽ पड़तौ। सोचि ले चम्पा। मउगी-पुरुखकसिनेहक डोरी होइ छै सन्तान—सबसँ पैघ, सबसँ सक्कत ।

चम्पा : मुदा...... ....

चानन : मुद-तुदा किछु नहि। हम मुहमे जाबी लगा लेब। पेटमे जुन्ना ऐंठ लेब मुदा सन्तानक अधिकार ककरो ने छीनऽ देबै। ककरो ने।

चम्पा : (चिन्तित होइत) सुनै तऽ छिअइ। मुदा एकटा लागल रोजी छोड़ि देब ठीक हेतै ? यैह सोचउ ने ?

चानन : (कने तिक्त स्वरमे) बूझि गेलिअउ। तोरा सहरसँ मोह भऽ गेलउ। तोँ सहरमे रमि गेलेँ चम्पा ! तोरामे सहर रमि गेलउ। साफ कपड़ा, साफ खाना, तेल, साबुन, तोरा मोहि लेलकउ अछि। तोँ आब देहात किए जेबेँ ? हम तँ छी माँटिक बेटा। ओही माँटिमे लेटाय जाइ छी। (जाय चाहैत अछि।)

चम्पा : (घबड़ा कऽ चाननकेँ रोकैत) आहिरे दैबा ! ई सुनबो करौ ने। ई माँटिक बेटा छै आ हम आकाशसँ खसल छी ? हमहू माँटिएक बेटी छी। एकर मोन छै तँ हम एकरे संगे जेबै। एखनै जेबै, चलओ। अइ लय लोह-ताम की करऽ लागल ?

चानन : (पाछाँ घूमि) सत्ते चम्पा ? चलबे ? तोरा नोकरी छोड़ैत दुख होइ छौ ?

चम्पा : हमरा दुख किए हैत। आइए जा कऽ इस्तीफा दऽ दै छिऐ। जतऽ ई रहत तत्तै हमहू रहब। एहि लय दुख हैत की खुसी से ई नै बुझै छै ?

चानन : चम्पा ! (मुस्कैत) तोँ कते सुन्दर छेँ ?

चम्पा : (मूह ऐंठैत) ऊँह कत्त सुन्नर छेँ ?

चानन : मुदा चम्पा ! खबरदार ! हमर भाषणसँ फाजिल एको लबज बाहर भेलौ तँ ! नोकरी छोड़क असली कारण नहि खूजक चाही

चम्पा : हमरो बूझऽ अबैए। सुग्गा जकाँ आब बेसी नै पढ़ाबओ।

चानन : नै नै, तोँ तँ पहाड़ी मैना छेँ।

चम्पा : हे देखौ। (टिफिन वला डिब्बा उठबैत) हम आबिते एलिऐ तँ लड़ऽ लगलिऐ। ई भाषण करऽ लगलै। किछु खेनहुँ ने हेतै।

चानन : हमरा एखन किछु खाइक मोन नै छौ।

चम्पा : (डिब्बासँ पराठा भुजिया बाहर कऽ दैत) एकरा हमरे सप्पत छै, खा लौक। एकरे लए ऐखन बनौने छलिऐ। तप्पते छै।

चानन : अपना हाथसँ खुआ तँ खेबौ।

चम्पा : भक ! फेर तमेसा करैए।

(चम्पा डिब्बासँ परौठा निकालि, थोड़ेक तोड़ि कऽ पहिने एमहर-ओमहर तकैत छैक आ चाननक मुँह दिस बढ़ा दैत छैक।)

चतुर्थ अंक
प्रथमदृश्य

[स्थान : महिला कालेजक प्राध्यापिकाक डेरा। एकटा कोठलीमे दू टा कुर्सी राखल। आलमारीमे पोथी सभ राखल। टेबुल पर पोथी-कागत आदि राखल। हैंगर पर दू-तीन खण्ड साड़ी'-साया चौपेतल राखल। टेबुलक एक कातमे सुन्दर सन डिब्बी राखल छैक। कोठलीक एक कोनमे एकटा ट्रंक राखल छैक।]

प्रतिमा : (नेपथ्यसँ) चम्पा ! गय चम्पा !! (लुल्हुआ झाड़ैत इस्स इस्स करैत प्रवेश) गय ! कतऽ गेलें गय !

चम्पा : (दूरसँ स्वर अबैत छैक) की कहै छी ? साड़ी अखारने अबै छी।

प्रतिमा : जल्दी आ। हमर हाथ पाकि गेल। रैक परसँ मलहमवला डिब्बी लेने आ।

चम्पा : (स्वर दूरसँ क्रमहि निकट होइत अछि।) की भेल अए ! (प्रवेश करैत) अहूँ तँ अकरकंडे करैत रहै छी। हम तँ अबिते छलहुँ। अपने भानसमे लागि गेलहुँ ? कोनो पाहुन-परक अबैलय रहय तँ एकटा बात।

प्रतिमा : भाषण नहि कर, जल्दी ला डिब्बी। बड़ जोर लहरैए। इस्स ! (चम्पा झटकि कऽ भीतर जाइछ आ मलहमक डिब्बी लेने अबैछ।)

चम्पा : (डिब्बी खोलि मलहम निकालि प्रतिमाक लुल्हुआ पर लगबैत) हे अय प्रतिमाजी ! सौंसे लुल्हुआ पर तेलक छिटका पड़ि गेल। कहू तँ !

प्रतिमा : इस्स, हलुकेसँ लगा।

चम्पा : एही सब दुआरे तँ कहैत छी जे नैहरे की सासुरे चल जाउ।

प्रतिमा : एके बेर कहि देने छियौ जे तों हमर व्यक्तिगत जीवन पर किछु बाजल नहि कर मुदा तों छें जे अभ्यास छुटिते ने छौ। एहि

ठाम तों दाइ छें। ने हमर बॉस छें ने सखी-बहिनपा । तों बजनिहारि के ? खबरदार, फेर कहियो एहन विचार नहि दिहें।

चम्पा : दीदी! हमरा माफ कऽ दियऽ। ठीके हम अपन औकातिसँ फाजिल बाजि गेलहुँ। हम ने बॉस छी, ने सखी-बहिनपा । हम तँ एहि कौलेजक होस्टलक दाइ छी । नौड़िन। पनिभरनी। झाड़ू देनिहारि ।

प्रतिमा : बस कर। नेप नै चुआ। अपन जे सीमा छौ ततबे धरि रह।

चम्पा : दीदी ! जते दूर धरि अहाँ प्रोफेसर छी, तते दूर धरि हमहूँ मेड सर्वेंट छी । मुदा ओहिसँ बाहर अहूँ माउगि आ हमहूँ। हम दुनू एके छी, एही भरमानामे हम अहाँके किछु विचार दऽ दैत छी। आब बूझि गेलहुँ जे पढ़ि-लिखि कऽ,प्रोफेसर-मास्टरनी भऽ कऽ मौगी अपन मौगपन छोड़ि दैत अछि । ओ दोसरे किछु बनि जाइत अछि। (सिसकऽ लगैत अछि।)

प्रतिमा : आब घेओना पसारलें।

चम्पा : (सिसकैत) होइते छै। पैघ लोकक सिसकीयो रोदन भऽ जाइ छै आ गरीब लोकक दुखसँ कानबो घेओना भऽ जाइ छै।

प्रतिमा : हुँ! तों हमरा पैघ लोक बुझै छें। हमहूँ साधारणे लोकमेसँ छी। सम्मानपूर्ण जीवनक आधार तकबाक लेल हम पढ़लहुँ आ एहि नोकरीमे अयलहुँ। रबिया भुस्साक भुम्हुर आगि जकाँ जे ज्वाला हमरा मोनमे दाबल अछि तकर धाह तोरा नहि लगलहु अछि। तों की बुझबिही, चम्पा !

चम्पा : तें ने विचार देलहुँ जे गर्मीक छुट्टीमे सभ लड़की गेल अपन-अपन गाम। क्वाटरोक दीदी सभ अपन-अपन-नैहर-सासुर गेलीह। आ हम-अहाँ एहि सुनसानमे पड़लि छी।

प्रतिमा : तोंहूँ चल जो। के रोकलकौ तोरा ?

चम्पा : सेह नहि मानल गेल। मौगी छी ने, तें भेल जे दीदीके छोड़ि कऽ कोना जाउ। हमरो तँ अपन घर-परिवारक संग रहैलय

यैह् टूटा छुट्टी भेटैए । दीदी ! जखन हम क्वाटरक आट-हाउसमे एकसरि राति-राति भरि सिसकैत रहै छी तखनुक पीड़ाक अनुमान कयलहुँ अछि ?

प्रतिमा : (मुँह ऐंठैत) आ हा हा !! बड़ बेस्था होइए तँ हम की करू ? घरवलाकेँ लेआओन करा कऽ आनि दियऽ ? सेहो तँ अपने करब । चिट्ठी दियौ, चल आयत । ने तँ अपने चल जाउ । रोकैए के ?

चम्पा : प्रतिमा दीदी ! अहाँ हमर हँसी करै छी । अपन पुरुखकेँ अइ ठाँ राखि सकै छिऐ ? गाम पर खेती-बाड़ी करै छै । अइ ठाँ की करतै ? हम गामक स्कूलमे सतमा तक पढ़ि लेलहुँ, वैह् हमरा बलाय भऽ गेल । जपाल भऽ गेल ।

प्रतिमा : जपाल की भेलौ ? केहन बढ़ियाँ नोकरी भऽ गेलौ । मासे-मासे दरमाहा उठबैत छेँ । गाम पर रहितेँ तँ घास करितेँ, बकरी चरबितेँ । सासुसँ बात सुनितेँ आ घरवलासँ नित्तहुँ चारि-चोटिक मारि खैतेँ । आब तँ घर भरिक लोक आदर करैत हेतौ ।

चम्पा : दीदी ! सभ बात अहाँ ठीक कहै छी । जेँ कने-मने पढ़िलियो छलहुँ तेँ बासो नहि होइतय । हमर ओ सेहो थोड़ेक पढ़ल-लिखल छै आ कने-मने नेतागीरी सेहो करै छै । तेँ हमर गून बुझलक, विश्वास केलक आ तेँ सेक्रेटरी साहेबक कनिञाक सङे आबऽ देलक । हुनके कनिञा हमरा एहिमे धरा देलनि । मुदा हमरा बड़ गोट त्याग करऽ पड़ै अछि । एतेक टा त्याग हमरा सहल नहि जाइए ।

प्रतिमा : फेर विरह-वर्णन । हमरा प्रेमी-प्रेमिकाक विरह-वर्णनसँ तामस उठऽ लगैए ।

चम्पा : दीदी ! अहाँक मोनक रस एकदम सुखा गेल की ? हम कोना कऽ मुहँ खोलि कऽ कहू जे अहाँ एकसरिमे एहि सुनसानमे पड़लि रहू आ हम जाइ छी ?

प्रतिमा : बेस बेस। भेलउ (उठि कऽ ट्रंक खोलैत अछि आ एक खंड साड़ी निकालि चम्पा दिस बढ़बैत) ले, ई साड़ी पहीरि ले। पहिरल नै छै। स्नो-पाउडर सेहो चाहियौ ने ! ताहि लय (पर्स खोलि कऽ टाका निकालैत) ई दस टाका लऽ ले। गाम पर ल। किछु मधुरो कीनि लिहेँ। दुपहरक गाड़ीसँ चल जो। हँ, जाबत तैयार हेबेँ ताबत एकटा कपड़ाक पीस ताकि दैत छियौ। ओकरालय कमीज सिया दिहैँ। आ' हे ! गाम पर सासु-ससुरक भरि छुट्टी खूब सेवा करिहेँ।

चम्पा : दीदी ! अहाँ तँ सिनेह उझिलने जाइ छी। एहन सिनेह संगीए-बहिनपासँ होइ छै। मुदा हम ई सब लऽ कऽ की करब ?

प्रतिमा : चम्पा' हमरा बातक तोरा रोख भऽ गेलौ ?

चम्पा : रोख नै दीदी। आब तँ बिचारै छिऐ जे किछु नओ-छओ कँए कऽ जैऐ।

प्रतिमा : (आश्चर्यसँ चम्पा दिस देखैत) से की ?

चम्पा : कालिह खन ओ गामसँ एलैए।

प्रतिमा : (खूब जोरसँ हँसैत) ओ हो हो ! तेँ कालिहसँ देवीजीक सिङार-पटार देखै छियनि ! हे ! तोँ बड़ भाग्यवती छेँ चम्पा। देख-लियौ नै, कखन एलौ ?

चम्पा : एँह ! कालिह दसे बजे एलै। गेटकीकेँ समाद बहलकै। मुदा ओ बड़ी कालक बाद हमरा कहलक। हाञ्जि-हाञ्जि कऽ परोठा आ भुजिया बनौलिऐ। टिफिनवला डिब्बामे लऽ कऽ बाहरमे गेलिऐ तँ ओ सड़कक ओहि कातवला आमक गाछ तरसे गमछा ओछा कऽ पड़ल औंघाइत छलै। ओही ठाम खुआ देलिऐ।

प्रतिमा : तोँ मुह कऽ खूऔलही की ओ अपने खेलकौ ?

चम्पा : (संकुचित ओ बिहुँसैत दोसर दिस तकैत) कनी-कनी दुनू।

प्रतिमा : थम्ह, कनी तरकारी उतारि कऽ दालि चढ़ा दै छिऐ। कहीं जरियो ने जाइ।

चम्पा : आब लहरि कम भेल ?

प्रतिमा : हँ, ठीक छै।

चम्पा : अहाँ बैसू ने हमहीं चढ़ा दै छिऐ। फेर हाथ पका लेब।

प्रतिमा : नै गय ! हम अपने चढ़ा दै छिऐ। कहीं हाथ-ताथ पका लेबें तँ अनेरो तोहर बर हमरा पर तमसा जेतौ। ओहुना तँ हम अपन भानस अपने करैत छी, से तँ देखिते छें। पहिलय तोरा रोख नै होउक।

(प्रतिमा भीतर चल जाइत अछि। चम्पा टेबुल परक पोथी सरियाबऽ लगैछ। फेर कपड़ा सबकें झाड़ि कऽ चौपेतऽ लगैछ। प्रतिमा प्रवेश कऽ कुर्सी पर बैसैत अछि।)

प्रतिमा : हँ, आब आगाँ कह।

चम्पा : ओइ ठामसँ बजार बूलऽ गेलिऐ।

प्रतिमा : एहन प्रचण्ड रौदमे गय ?

चम्पा : एह ! दीदी ! ओकरा संग रौदो इजोरिये सन शीतल लगै छै ने।

प्रतिमा : तखन की भेलौ ?

चम्पा : मेटनी शो सिनेमा देखऽ चल गेलिऐ।

प्रतिमा : खूब केलें। ओ चल गेलौ की ?

चम्पा : नै सिनेमासँ आबि होटलमे दुनू गोटा खाना खेलिऐ। ओ कहलकै जे रातिमे टीसन पर मोसाफिरखानामे सूति रहब। भिनसरे हमरा ननदिकें भेट करऽ गेल हैतै ?

प्रतिमा : एँ गय ! तों एतऽ लेने अबितिही से नै ! रातिमे एही ठाम रहितौ तँ कोन अन्हेर भऽ जैतै ?

चम्पा : नै, जखन एहि होस्टलमे पुरुखक आबा-जाहीक मनाही छै तँ कोना अनितिऐ ? लोक देखितय तँ की कहितय ? हमर घरवला छी तकर कोनो लेबुल साटल छै ओकरा माथ पर ?

प्रतिमा : की नाम छौ ओकर गय ?

चम्पा : अपना आरमे घरवलाक नाँव लै छै ?

प्रतिमा : कोना बुझबौ तखन ?

चम्पा : कपार पर लोक करै छै ने, सैह।

प्रतिमा : सिन्दूर गय ? आ की लाल ?

चम्पा : भक्। अहूँ पढ़ि-लिखि कऽ प्रोफेसरे रहि गेलहुँ।

प्रतिमा : तखन की ?

चम्पा : विद्यापतिक गीतमे नै छै ?

प्रतिमा : हँ, छै तँ—प्रथमहि अलक तिलक लेब साजि। (कने रुकि)
अलकलाल नाम छौ की तिलकलाल ?

चम्पा : खाली मौगिएटा सिङार फुराइए, पुरुख पंडित सभ करै छै से
नै फुराइए ?

प्रतिमा : तोहूँ तँ खूब पिहानी बुझबै छेँ। पुरुख तँ करैत छैक–ऊर्ध्वपुण्ड,
त्रिपुण्ड··· ···

चम्पा : भऽ गेल। लाउ कागत, लिखि दैत छी। (एकटा कागत लऽ कऽ
कलमसँ लीखि कऽ दैत) हे लियऽ, पढ़ि लियऽ अपने।

प्रतिमा : (कागत लऽ कऽ पढ़ैत) हूँ। चा··· ···न ·· न
चानन भेल विखम सर रे भूखन भेल भारी···
खूब बुझौलेँ तोँ।

चम्पा : तँ हम कोना बुझबितहुँ ?

प्रतिमा : हँ तखन आब की प्रोग्राम छै ?

चम्पा : प्रिन्सिपल साहेब ओतऽ जेबै आ इस्तीफा कोना देल जाइ छै से
बूझि कऽ सेक्रेटरी साहेबकेँ भेंट करऽ जेबै। जेना कहथिन तेना
लिखि कऽ दऽ देबै इस्तीफा आ चल जेबै।

प्रतिमा : इस्तीफा ? किएक ? की बात भेलौ ? चम्पा! झूठ बजै छेँ तोँ!
तोँ झूठ बजै छेँ। (चम्पाकेँ झमोड़ैत) बाज ! बाज जे तोँ झूठ
बजै छेँ। तोँ झुट्ठी छेँ।

चम्पा : दीदी ! दीदी ! प्रतिमा दीदी ! अहाँ एना किए करऽ लगलौं ?
हम सत्ते कहै छी। काल्हि बड़ी काल धरि बहुत रास गप्प भेलै।

प्रतिमा : की भेलौ गप्प ? जल्दी कह।

चम्पा : दीदी ! ओ कहलकै, कर्जा सभक कानूनी माफी भऽ गेलै।
घराड़ी अपन भऽ गेलै आ आब सरकार दिससँ जमीनो भेटतै।

हम तँ कर्जे सधबे लय खास कऽ नोकरी करै छलौं। से सधिए गेलै। तखन ओ कहलकै जे गामे चल। ओतऽ दुनू गोटे परिश्रम करब आ सुखसँ रहब। हमरो ओकर गप्प बीक लगलै दीदी। खूब नीक लगलै।

प्रतिमा : (दीर्घ निसास छोड़ैत) नव युगक नव संसार बसबऽ जाइ छें। तोरा रोकबौ नै। हमर सभ शुभकामना तोरा दुनूबेकती लय। तों कतेक सुखी छें चम्पा ! हमरा दुख एतबे, जे आब हम और एकसरि भऽ जायब।

(आँखि नोरा जाइत छैक तँ आँचरक खूटसँ पोछि लैत अछि। ताबतमे साइकिलक घंटी बजैत छैक। किछु क्षणक बाद कॉलिंग बेल बजैत छैक)

चम्पा : के चल आयल एखन ?

प्रतिमा : देखही चम्पा, के छिऐ।

चम्पा : देखै छिऐ।

(चम्पा बाहर दिस जाइत अछि आ प्रतिमा भीतर दिस। पर्दा खसैत छैक)

द्वितीय दृश्य

[स्थान : प्रतिमाक निवासक बाहरी भाग। एकटा साइकिल लेने विमल ठाढ़ भेल प्रतीक्षा करैत अछि। चम्पा झटकैत मकानसँ बाहर होइत अछि।]

चम्पा : (तीव्र स्वरमे) की छी औ ? के आबऽ देलक भीतर ? बूझल अछि जे लेडी होस्टलक कम्पाउण्डमे पुरुखक प्रवेशक मनाही छै, तखन साइकिल खड़खड़ौने चल अयलहुँ ?

विमल : प्रोफेसर प्रतिमाजी छथि ?

चम्पा : छथि तें की ? अहाँ के छी से बाजू ? प्रतिमाजीसँ कोन काज अछि ?

विमल : तोरे कहलासँ काज भऽ जाइत तँ कहिए दितियौ ने। हमरा हुनकासँ भेंट करक अछि।

चम्पा : की नाम छी अहाँक ? किएक भेंट करबनि ?

बिमल : हमर नाम थिक विमल। प्रतिमाजीसँ किछु व्यक्तिगत गप्प अछि। ओ हमर सम्बन्धी थिकीह।

चम्पा : (मुहँ चमकबैत) एहिना हीरो टाइप बाबू सभ रंग-बिरंगक सम्बन्ध भनबऽ चल अबैत छथि। आ बात सुनै छी हम। अहाँ सब सन लोकक चलते कहियो हमर नोकरी चल जायत।

विमल : हमरो हीरो आ हिप्पी बुझैत छें ?

चम्पा : नै, अहाँकें तँ भलमनसाहतिक तगमा झूलैत अछि। कहलकै ने !

विमल : हम पुछैत छियौ—प्रतिमाजी छथि ?

चम्पा : औ ! बात जानी हम साफ। ओ ककरोसँ आइ धरि भेंट नहि कयलथिन अछि। आइ धरि केओ हुनकासँ भेंट करऽ नहि अयलनि। तखन हम अहाँक बात कोना मानि लियऽ ? ओ भेंट नहि करतीह। जाउ अहाँ।

विमल : बड़ा झंझटिया लोक छें तों।

चम्पा : से जे कहू।

विमल : ठीक छै। तों पहिने जा कऽ पुछहुन तँ। जबर्दस्ती भेंट नहि ने करबनि। खाली हमर नाम कहि दहुन जा कऽ। जँ कहथुन नहि, तँ हम एहिना घूमि जायब।

चम्पा : ओ बड़ तमसाहि छथिन। अनेरे हमरा अहाँ बात सुनायब।

विमल : हमरा एतेक बात कहलें से किछु ने आ तों कनेक सूनि लेबें तँ की हेतौ ? जो पुछने आ।

चम्पा : (कनेक ततमत करैत) ठीक छै, एहीठाम ठाढ़ रहू। हम समाद कहि जाइ छी।

विमल : ठीक छै हम टससँ मस नै हेबौ एको रत्ती। तों जो तँ।

चम्पा : (जाइत अछि मुदा किछु सोचि कऽ घूमि जाइत अछि) अच्छा सुनू। अहूँ पाछाँसँ आउ।

विमल : जे कहू।

(चम्पा आगाँ आगाँ जाइत अछि। पाछाँमे विमल सेहो जाइत अछि।)

तृतीय दृश्य

[स्थाक : प्रतिमाक बैह कोठली। ओहने स्थितिमे अछि जेना पहिने छल। चम्पा अबैत अछि।]

चम्पा : दीदी ! दीदी !

प्रतिमा : (प्रवेश कऽ) की छौ ? के छलै ?

चम्पा : एकटा महापुरुख छथि, नाम कहै छथि विमलजी। अहाँसँ भेंट करताह। की कहै छी ?

प्रतिमा : ओ ! (थोड़ेक काल विचारमग्न रहैत अछि। फेर ततमत करैत) अच्छा ! जो। बजौने अबहुन।

चम्पा : (आश्चर्यसँ) की कहलिऐ ?

प्रतिमा : कहलियौ, बजौने अबहुन। एही कोठलीमे बैसबहुन। हम अबै छी। (भीतर जाइत अछि।)

चम्पा : (कोठलीसँ बाहर आबि) आउ औ विमल बाबू ! चल आउ। (विमल प्रवेश करैत अछि।) आइ पच्छिम दिस सुरुज उगि गेलाह। आउ।

विमल : तोहर हुकुम होइ छौ ?

चम्पा : आउ ने तँ, तखनसँ खुसामदि करै छलौं आ एखन हुकुम मङै छी। (विमल कोठलीकेँ खूब ध्यानसँ देखैत अछि। एक बेर चारूकात घूमि देखि लैत अछि।)

विमल : एहीमे रहै छथुन ? पोथीसँ भरने छथुन !

चम्पा : आउ (कुर्सी देखबैत) अइ कुर्सी पर बैसू। हम दीदीकेँ बजा अनै छियनि।

विमल : आबऽ दहुन ने।

प्रतिमा : (प्रवेश कऽ) बैसू ने।

विमल : सकुशल छी ने ?

प्रतिमा : हँ, छी। गाम पर सब कुशल छै ?

विमल : हमरा छोड़ि सभ सकुशल अछि।

प्रतिमा : चम्पा !

चम्पा : जी !

प्रतिमा : तों भनसाघर देखही गऽ । (चम्पा जाइत अछि ।)

विमल : ई मेड सर्वेण्ट थिक ?

प्रतिमा : हँ ।

बिमल : भानस यैह करैत अछि ?

प्रतिमा : नहि, हम अपनहि करैत छी । एखन होस्टलक क्वार्टर सभ खाली छै तें हमरे लग बेसी काल रहैत अछि ।

विमल : मुँहक बड़ ठेसगरि अछि ।

प्रतिमा : किछु अनट कथा कहि देलक की ?

विमल : नहि, कोनो तेहन नहि । कहियो दैत तँ नीके लगैत ।

प्रतिमा : की ? जलपान बना दियऽ किछु ?

विमल : किछु नहि ।

प्रतिमा : चाह पीब ?

विमल : नहि ।

प्रतिमा : शर्बत ?

विमल : नहि, ओहो नहि ।

प्रतिमा : थम्हू, हम काफी बना कऽ अनैत छी ।

विमल : छोड़ि दियौ । एक दिन एक कप पिआइए देब, ताहिसँ की हमर जीवनक पिआस तृप्त हैत ? से जँ स्नेहसँ अपना हाथें चाह, जलपान, शर्बत आ काफी बना कऽ देबाक रहितय, तँ एहने व्यवहार करितहुँ ?

प्रतिमा : कोन व्यवहार ?

विमल : यैह जे, बरख दिनसँ पत्र लिखैत रहलहुँ, एकोटाक उत्तर अहाँ देलहुँ ? की एकोटा पत्र अहाँकेँ नहि भेटल ?

प्रतिमा : पत्र सभ तँ भेटल छल ।

विमल : एहन निष्ठुर छी से केओ विश्वास करत ?

प्रतिमा : हमर नियतिए यैह अछि ।

विमल : अहाँक नहि, हमर नियति । प्रतिमा ! हम तँ लोककथाक पाथर भेल राजकुमार छी । ओ राजकुमार जे अपन प्रियतमासँ

मिलन हेतु जाइत छल। बाटमे एक अभिशप्त फूलक गाछतर गेल। प्रियतमाक लेल ओ फूल तोड़ऽ लागल तँ पाथर भऽ गेल। आकाशवाणी भेलैक जे जँ कोनो बच्चा ओहि गाछक फूल तोड़तै आ पाथर पर फूल बसतै तँ ओ पाथर फेर जीबि उठत।

प्रतिमा : हम तँ दोसरे लोककथा सुनने छी। एकटा राजकुमार दुर्गम स्थानमे रहैत छल। एकटा राजा अपन राजकुमारीकेँ ओकरेसँ बियाह करबऽ चाहैत छल। से सपरिवार विदा भेल ओहि दुर्लभ राजकुमारक ओतऽ। बाटमे एकटा एहन लत्तीक जंगल भेटलैक जाहि पर पैर पड़ैत देरी राजा, रानी, राजकुमार, सकल परिवार पाथर भऽ गेलैक। राजकुमारी संकोचे पाछू पाछू चलैत छलि। से ओ बाँचि गेलि। पाथर नहि भेलि आ ओहि बीहड़ जंगलमे बौआ रहलि अछि।

विमल : प्रतिमा! अहाँक ई कठोर व्यवहार शोभा नहि दैत अछि।

प्रतिमा : जतबा दिन अहाँक परिवारमे रहलहुँ, की कहियो कोनो कटु व्यवहार देखऽमे आयल ?

विमल : से कयने रहितहुँ तँ नीक। तखन एतेक व्यामोह नहि होइतैक।

प्रतिमा : हम अहाँक परिवारमे रहि कऽ अपन पढ़ाइ पूरा कयलहुँ। अहाँ सब गोटे सहयोग देलहुँ। ताहि लेल कृतज्ञ छी।

विमल : हमर परिवार थीक, अहाँक नहि ?

प्रतिमा : एहन कोनो बात नहि। तखन हमरा अपन कर्त्तव्यक निर्वाह करबेक अछि तेँ प्रयत्नशील छी।

विमल : की प्रयत्नशील छी से हमहूँ बूझी।

प्रतिमा : अहाँक परिवारमे रहि जे खयलहुँ-पहिरलहुँ तकरा बदला यथा-शक्ति काज कऽ देलहुँ। हमर पढ़ाइ पर जे खर्च भेल ताहिलय अहाँक नाम पर बैंकमे मासे मासे किछु कऽ टाका जमा कयने जाइ छी। (पासबुक निकालि कऽ दैत) हे,येह लियऽ पास पासबुक।

विमल : की हम एखने चल जाइ ? (उठि कऽ ठाढ़ होइत अछि)

चम्पा : (चाह लेने प्रवेश करैत) आहि रे बा ! ओहिना कोना ? पहिने ई चाह पीबू। (कप-प्लेट बढ़बैत) दीदी ! अहूँ चाह लियऽ। विमल

बाबू ! दीदीकेँ गेस्टिङ पर कोनो खर्च नहि छनि। तेँ हम आइ थोड़ेक खर्च करयबनि। अहाँ हमरे हुकुमसँ आयल छी ने। तेँ हमरे हुकुमसँ जा सकै छी। आइ हमरे आँडर रहय।

(हँसैत जाइत अछि)

विमल : (चाह पीबैत अछि मुदा प्रतिमाक चाह रखले रहैत छैक।) अहाँ हमरा खर्च आपस कऽ रहल छी ? की हमर यैह सपना छल ? यैह कामना छल ? एहीलय हम एहि प्रतिमाकेँ सजौने छलहुँ ? हम प्रतीक्षामे छलहुँ जे अहाँक मोनक विषाद ओ उदासी समय बितला पर विलीन भऽ जायत। समय सभसँ पैघ उपचार थिकैक कोनो व्यथाकेँ मेटयबाक , मुदा देखैत छी , समय अहाँकेँ औरो कटु बनौने जा रहल अछि। पता नहि कोन बद्दी बैसि गेल अछि अहाँक मोनमे !

प्रतिमा : अहाँ सँ, की ककरोसँ हमरा कोनो राग-उपराग नहि अछि। हम अपनहि नारी-जन्मक अभिशापक भोग भोगि रहल छी। एहनमे अहाँकेँ हमर कोनो बातसँ पीड़ा भेल हो तँ क्षमा करब।

विमल : पीड़ा नहि। हम तऽ बुझैत छी जे हमरासँ कोनो बदला लऽ रहल छी, बदला।

प्रतिमा : नारीकेँ से सामर्थ्य कहाँ छैक जे ककरोसँ बदला लेअय।

विमल : जँ से नहि, तँ अहाँक बात-व्यवहारसँ सौंसे घरक लोक अभिभूत अछि। बाबूजी सन नीरस, शुष्क, रुच्छ लोक अहाँक प्रशंसा करैत रहैत छथि। किन्तु हमरे लेल अहाँ किएक एना कटु-तिक्त-कषाय बनि गेल छी ? हमरा मोनक पीड़ाक जिज्ञासो कयनिहार तँ केओ ने अछि। एकरा बदला नहि तँ की कहबैक ?

प्रतिमा : एकर उत्तर हम की दऽ सकै छी ?

विमल : ठीक छै,नहि दियऽ उत्तर। तँ की,छुट्टी एतहि बितयबाक अछि ?

प्रतिमा : विचार तँ सैह अछि।

निमल : लाभ ?

प्रतिमा : पी-एच०, डी०क तैयारीकरबाकअछि। आब सभ लेक्चररकेँ अनिवार्य भऽ गेलैक अछि।

विमल : सुनू, हम आइ अन्तिम निर्णय लेबाक लेल अयलहुँ अछि।

प्रतिमा : की ? जँ विवाह करबाक हो तँ हमरासँ जे लिखयबाक हो से लिखऽ लेल तैयार छी। आ नीको सेह हैत अहाँके। चिरकुमार रहलासँ की फल ? हम अहाँके सुख नहि दऽ सकब कहियो। हमरासँ तकर आशा नहि करू। हम फेर कहब जे अहाँ विवाह कऽ लियऽ।

विमल : से तँ आब सुखायले काठ पर मंभव अछि। अपन नीक अधलाह आब हम नीक जकाँ बूझैत छिऐक।

प्रतिमा : जे सोहाय से करू मुदा हमरा लगमे अशुभ बात नहि बाजू। हमरा भयसँ रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइए।

विमल : ई वाचनिको ममत्व कथी लय ? एना उचाट किएक भेल अछि ? हमरा कहू, हम तकर मार्जन करब।

प्रतिमा : से आब संभव नहि अछि।

विमल : मुइलकेँ जिआयब संभव नहि छैक, और सभ संभव छैक। सुनू। अहाँके हमरा संग चलबाक अछि, रहबाक अछि। एकरा अनुरोध बूझी वा प्रार्थना बूझी।

प्रतिमा : अनुरोध वा प्रार्थना मानब अथवा नहि मानब स्वेच्छा पर निर्भर छैक।

विमल : जँ आदेश हो तँ ?

प्रतिमा : तखन सोचऽ पड़त।

विमल : हम अहाँके नोकरी छोड़ऽ नहि कहब। किन्तु पत्नी नोकरीयो कऽ कऽ तँ परिवारमे बान्हल रहैत अछि। की अहाँ से नहि कऽ सकैत छी ? अवकाशक अवधिमे तँ संग रहि सकैत छी ? से चाही तँ! मर्यादाक रक्षा एहीमे।

प्रतिमा : सुनू। विवशता नोकरीक नहि। खैर ! अहाँ आदेश देलहुँ आ मर्यादाक गप्प कहलहुँ तँ एतबा कऽ सकैत छी जे कोनो काज-परोजनमे अहाँक ओतऽ परिवारक पुतोहु जकाँ रहि सकैत छी आ रहब। लोकक दृष्टिमे हम अहाँक धर्मपत्नी छी, ओहिसँ अधिक केर आशा नहि करू।

विमल : सम्बन्ध-विच्छेदमे आ एहिमे कोन अन्तर छैक ? जँ अहाँक यैह इच्छा अछि तँ हम निराश भऽ कऽ जाइ छी । हँ, हमर पत्र सभ दऽ दियऽ ।

प्रतिमा : ओ कोना देब ?

विमल : हमर वस्तु थिक तेँ ।

प्रतिमा : अहाँ सभक देल वस्तु, नैहर-सासुरक सभ वस्तु अहींक ओतऽ राखल अछि । गहना-गुड़िया, कपड़ा-लत्ता सभ किछु । बक्साक चाभीक झाबा अहाँक मायकेँ दऽ आयल छियनि ।

विमल : ओ सभ हमर देल नहि छल, ओकर भागी हम नहि ! व्यवस्थाक टाका बाबूजीक भेलनि । वस्तु–जात अहाँकेँ भेटल । हमरा तँ अहींटा भेटलि छलहुँ । हमहूँ अहाँकेँ पत्रेटा देलहुँ । जँ अहाँ अपना दिससँ किछु ने दऽ सकै छी तँ हमर पत्रो तँ दऽ दियऽ ।

प्रतिमा : अहाँक मोनमे सन्देह भऽ रहल अछि तँ लियऽ (पर्ससँ पत्र सभ निकालि कऽ दैत) लऽ लियऽ अपन पत्र सभ । गनि लियऽ जे गोटेक कम नहि हो ।

(विमल पत्र सभकेँ उनटाबऽ-पुनटाबऽ लगैत अछि । फेर ओकरा सभकेँ मुट्ठीमे जाँति लैत अछि, ममोड़ि-समोड़ि कऽ ।)

विमल : नहिञे मानबैक ? की कहै छी ?

प्रतिमा : आब की कहू हम ?

विमल : (उद्यत होइत) तखन चलै छी ।

प्रतिमा : जलखै कऽ ने लियऽ तँ जायब ।

विमल : ई अपन सौभाग्य कतऽ ? बेस, आब चली । (कनेक रुकि टेबुल परक डिब्बी उठबैत) ई डिब्बी कथीक थिक ? बड़ सुन्दर अछि !

प्रतिमा : सिन्दूरदानी थिकैक ।

विमल : सिन्दूरसँ मोह अछिए ? देखै छी,माथोमे भकरार अछि सिन्दूर ! (कनेक मोन पाड़ैत) ई तँ हमहीं अनने रही ।

प्रतिमा : आनल तँ थीक अहींक ।

विमल : तखन एकरा हम लेने जाइ छी । एकर तँ आब अहाँकेँ काजो ने रहि गेल अछि ।

प्रतिमा : नै नै। ओ नै लऽ जाउ। ओ नै लऽ जा सकै छी। कोनो हालतिमे नै लऽ जा सकै छी।

विमल : किए, किए ने लऽ जाउ ?

प्रतिमा : बड़ पैघ मूल्य दऽ कऽ एकरा कीनल गेल छल। ककरो जीवनक दाम दऽ कऽ ई कीनल गेल छल। हमरे लय कीनल गेल छल। तेँ ई टा नहि दऽ सकै छी। भारतीय नारीक तँ एकेटा सम्पत्ति होइत छैक सिन्दूर। तकरा कोनो मोल पर केओ छोड़ि नहि सकैत अछि। हमरा लेल ई सिन्दूरदानी, एकर लाल-लाल सिन्दूर हमर जीवनक सम्पत्ति थिक। हमर पिताक स्मारक थिक। हमर पिताक जीवनक मूल्य थिक ई।

विमल : एहि मूल्यक व्याख्या सुनबाक अधिकार हमरा अछि ?

प्रतिमा : अछि अहाँके। अहाँ ओहि जीवनक खरीदार छी तेँ अहाँके अधिकार अछि। (डिब्बी खोलि ओहिमेसँ भरि चुटकी सिन्दूर निकालि विमलके देखबैत) सिन्दूरक ई लाली देखैत छिऐक ? ई एकर अपन लाली नहि थिकैक। कन्याक बापक लिधुरसँ एकर रंग लाल भेल छैक। एही लेल हमर पिता आत्महत्या कयने छलाह।

विमल : आत्महत्या !! की हुनक स्वाभाविक मृत्यु नहि भेल छलनि ? हुनक हृदयगति रुकलासँ मृत्यु नहि भेल छलनि ! डाक्टर तँ सैह कहने छलथिन !

प्रतिमा : (सिसकैत) स्वाभाविक नहि। ओ बीमाक पालिसी हमरा दऽ कऽ जे रातिमे सुतलाह तँ सुतले रहलाह। एकर साक्षी हम छी आ सुरेन्द्र काका छथि। मृत्युक सन्ध्यामे ओ जतेक गप्प सुरेन्द्र काका आ हमरा कहलनि से सभ आयरोनिकल छल। दोसर दिन ओकर सभक अर्थ लागल। जँ पहिने बुझितिऐक तँ हम अपने आत्महत्या कऽ लितहुँ मुदा हुनका बचा लितियनि। बचा लितियनि। बाबूजी जीवनमे जे नहि कीनि सकलाह से हुनक मृत्यु किनलक। हुनके जीवनबीमाक टाकासँ कीनल गेल ई सिन्दूर।

(सिसकिते रहैत अछि।)

विमल : प्रतिमा ! अहाँ विश्वास करू । एहि कथाक सम्बन्धमे हमरासँ कहियो केओ सम्पर्क नहि कयलक, ने वरपक्ष, ने कन्यापक्ष । अहाँ के जे विवरण देल गेल ताही पर हम स्वीकृति दऽ देने छलिऐक ।

प्रतिमा : आब कहू । कोना हम नीलिमा आ कमलूक भविष्यकेँ मझधार मे छोड़ि कऽ, ओहि अनाथ परिवारकेँ दुर्दशामे राखि कऽ अपन सुख-भोगमे लागि जाउ ? हमरा तँ अपन जीवनो लगाबऽ पड़त तँ लगा देबैक । तथापि ई सिन्दूरदानी नहि देबैक ककरो । ई पवित्र मूल्यवान् स्मारक हम कोना त्यागि सकब ?

विमल : प्रतिमा अहाँक पिताजी आत्मत्याग कयलनि अहाँकेँ सुखी बनयबा लेल ने ? मुदा से निरर्थक भऽ गेलनि । जँ ओ जनितथि जे हुनक आत्मत्यागसँ हुनक बेटीक जीवन मंगलमय नहि हेतनि, तँ की ओ ओना करितथि ? अहाँ जे आत्मनिर्वासित जीवन बिता रहल छी ताहिसँ की बाबूजीक आत्माकेँ शान्ति भेटैत हेतनि ? शान्ति भेटैत हेतनि ?

(प्रतिमा अचानक फेर कानऽ लगैछ ।)

बाजू ने प्रतिमा ! किछु बाजू ने । आज्ञाकारिणी पुत्री पिताक अन्तिम इच्छाकेँ कोना पूर्ण कऽ रहलनि अछि से जँ ओ अपनहि आबि कऽ देखितथि ?

प्रतिमा : (देबालसँ माथ टेकि कऽ ठाढ़ भेलि रहैत) नहि बाजू । हम नेहोरा करै छी । एना खोरि-खोरि कऽ हमर भावनाकेँ नहि जगाउ । नहि जगाउ ।

विमल : अहाँ कानऽ किए लगलहुँ एना ?

प्रतिमा : हमरा कानऽ दियऽ । खूब कानऽ दियऽ । एकसरमे कानऽ दियऽ ।

विमल : प्रतिमा ! हमरो विवेक अछि से अहाँ एखनो नहि बुझि सकलहुँ । अहाँ कतबो आत्मक्लेश सहब तथापि बाबूजी की घूमि औताह !! अहाँ अपन देह आ मोनकेँ साधि कऽ नैहर ओ सासुर दुनू परिवारकेँ नष्ट करबा पर उद्यत छी । जाउ, अहाँ अपन मायकेँ पुछियौन गऽ जे अहाँक आत्मनिर्वासनक समर्थन करैत छथि ?

प्रतिमा : (सिसकैत रहैछ ।)

विमल : अहाँ हमर भावनाके टाकासँ तौललहुँ ने ? हमरा नामसँ टाका जमा कऽ अपन पढ़ाइक खर्च आपस करैत छलहुँ ने ? आ हमहूँ आपस कऽ रहल छी (जेबीमँ पासबुक बाहर करैत) हे, यैह देखू, नीलिमा ओ कमलूक नामसँ जमा टाका। ई हमर अपन कमाइक टाका थिक। एक साँझ खा कऽ, एकटा पेंट आ शर्ट पहीरि कऽ, पुरान साइकिल पर चढ़ि कऽ जमा भेल अछि ई टाका। जकरा समर्पित कऽ कऽ हम अपन प्रतिमाके लेबऽ आयल छलहुँ। ई रहल पासबुक (प्रतिमा दिस फेंकैत) आब तँ ई सिन्दुरदानी लऽ कऽ जा सकैत छी ?

(चम्पा प्रवेश करैत अछि आ विमल जाय चाहैत अछि ।)

चम्पा : ई की बात। दीदी एना कनै छी किएक ?

प्रतिमा : (कनिते) चम्पा रोकिले हुनका। रोकिले। कहुन जे--नै लऽ जा सकै छी ओ सिनुरदानी, ओहिमे ककरो प्राण बन्द छै। जीवन बन्द छै। शरीरके छोड़ि प्राण आ जीवन नहि लऽ गेल जा सकै छै।

चम्पा : विमल बाबू ! ई की करैत छी ? चलू घूमू।

विमल : आब की बचल छै चम्पा जाहि लय घूमू। लगैत अछि जेना पाथरके पसिझा कऽ भगीरथ जकाँ गंगाक धार बहा देब हमरा लय संभव अछि किन्तु जीवन्त पाथरके, पाषाण-प्रतिमाके पसिझा देब असम्भव अछि,चम्पा ! असम्भव ! (जाय चाहैत अछि।)

सुरेन्द्र : (प्रवेश करैत) नहि विमल बाबू ! जे व्यक्ति धनेश्वर बाबू सन पाथरके पसिझा कऽ पानि कऽ दऽ सकैत अछि तकरा लेल एकटा नारीक मक्खन सन कोमल हृदयके पघिला देब कोन भारी बात !

(बीचेमे विमल सुरेन्द्रक पैर छूबि कऽ प्रणाम करैत अछि।)

सुरेन्द्र : (प्रतिमा लग जा कऽ) बेटी प्रतिमा ! ई कोन नेनपन करैत छी ? हम बाहरमे ठाढ़ भऽ कऽ सभ बात सुनलहुँ अछि। अहाँक मोनक जे टीस, से हम बुझैत छी।

प्रतिमा : (प्रतिमा सिसकैत सुरेन्द्रके पैर छूबि प्रणाम करैत) काका जी ?

सुरेन्द्र : सभ बातके बिसरि जाइ। जाबत हम छी, बेटी ! तावत अहाँ, नीलिमा,की कमलू—केओ बपटूगर नहि छी।

विमल : डाक्टर साहेब ! इहो कहि दियौन जे हमर पिता धनेश्वर ओ धनेश्वर बाबू नहि रहि गेलाह जनिका लेल टाका ओ धन-सम्पत्तिए टा सभ किछु छलनि। अपन पहिल बेटामे ओ जे पाप कयलनि आ हिनक पिता अपन जान दऽ देलथिन तकर प्रायश्चित्त ओ अपन दोसर बेटामे करऽ जा रहल छथि।

सुरेन्द्र : हँ बेटी ! नीलिमा अहाँक छोटि बहिनिएँ नहि आब छोट देयादनी सेहो भऽ जेतीह। धनेश्वर बाबूक छोट बालक, विमल बाबूक छोट भाइमे नीलिमाक कथा निश्चित भऽ गेलैक अछि। और एकर सभ श्रेय विमल बाबूके छनि।

प्रतिमा : काका जी ! हम बपटूगरि नहि छी। काका जी हम बपटूगरि नहि छी ! बाबूजीक वचन निष्फल नहि छल ! मिथ्या नहि छल ! काका जी हम बपटूगरि नहि छी !

सुरेन्द्र : चम्पा ! अहाँ सभ चीज-वस्तु सरियाउ। हम बाहरमे बैसैत छी।

(चम्पा ओ सूरेन्द्र दुनू दू दिस चल जाइत अछि।)

विमल : (प्रतिमाक लग जाय) प्रतिमा ! प्रतिमा !! आब की कहै छी ? बाजू ! अपना मुहसँ बाजू ! आब कतेक दुख सहब ? हमर विवेकक परीक्षा कतेक लेब ? और कतेक लेब ?

प्रतिमा : (गद्गरित स्वरमे) की अहाँ हमरा क्षमा नहि कऽ देब ? भीजल आँचरसँ झाँपल पाषाण-प्रतिमा की क्षमाक पात्री नहि अछि ?

विमल : एक प्राण, एक शरीर, के ककरा क्षमा करतैक ?

प्रतिमा : नहि, बड़ क्लेश देलहु हम अहाँके··· ······

विमल : तँ चलू ! दुनू गोटा मीलि कऽ समाजक एहि पद्धतिएके ध्वस्त कऽ दी जाहिसँ आगाँ,अनका एहन भोग नहि भोगऽ पड़ैक। चलू।

(पटाक्षेप)



लोचन धाए फेधाएल

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

विद्यापति	:	मैथिलीक महाकवि।
पुरादित्य	:	राजाबनौलीक द्रोणवार राजा, शिवसिंहक मित्र।
महुलक	:	पुरादित्यक अमात्य।
शिवसिंह	:	तीरभुक्तिक राजा, विद्यापतिक मित्र-पोषक।
सुलतान	:	मुसलमान शासक।
वजीर	:	सुलतानक विश्वस्त अधिकारी।

स्त्री पात्री

ललिता	:	लखिमाक सखी ओ अनुचरी।

प्रथम दृश्य

[समय : प्रातःकाल । स्थान : राजा बनौलीक राजभवनमे पुरादित्यक अन्तःकक्ष । प्रातःकालीन मंगलध्वनि सूनल जाइछ । ककरो अयबाक पदचाप दूरसँ निकट होइत जाइत अछि । महत्तकक प्रवेश होइछ ।]

महत्तक : जय हो ! जय हो ! विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराज गिरिनारायण श्रीमान् पुरादित्यक जय हो ! महाराजकेँ महत्तकक नमन स्वीकार हो ।

पुरादित्य : तथास्तु । महत्तक ! नवीनतम संवाद की अछि ?

महत्तक : महाराज ! सुलतानक तुरुक सेनासँ तिरहुतिक सेना निरन्तर लोहा लैत रहल । तिरहुतिक राजा शिवसिंह वीरतापूर्वक ओहि विशालवाहिनीसँ जुझैत रहलाह, मुदा अन्ततः गजरथपुरक पतन भऽ गेल ।

पुरादित्य : आ तकरा बाद हुनक कोनो उदेस अहाँकेँ नहि भेटि सकल । ई हमरा ज्ञात छल । हम कतोक व्यक्तिकेँ महाराज शिवसिंहक अनुसन्धानक हेतु पठा चुकल छी ।

महत्तक : महाराज ! एकटा और नवीन समाचार अछि ।

पुरादित्य : से की महत्तक ?

महत्तक : नगरसँ दक्षिण स्थित आराममे अत्यन्त भोरे अपरिचित लोकक एकटा दल आबि कऽ विश्राम लेलक अछि आ ओ सब उत्तर दिशामे गिरिप्रदेश दिस जयबाक सोझ बाटक जिज्ञासा करैत देखल गेल ।

पुरादित्य : (आश्चर्यसँ) की कहल ? के थिक ओ सब ? की अहाँ जिज्ञासा कयल ? स्वयं जा कऽ अनुसन्धान कयल ?

महत्तक : अवश्य श्रीमन् ! सामान्य पुरवासीक वेशमे ओहिठाम जा कऽ देखल। दलमे चारि गोटे छथि। बूझि पड़ल जेना कय दिनसँ निरन्तर चलैत रहने श्रान्त-क्लान्त भऽ गेल होथि। जखन हम पहुँचलहुँ, तखनो लागल जेना राति भरि चलिते रहल होथि। सौंसे देह धूरासँ भरल। आशंकित-आतंकित दृष्टिसँ चारू कात तकैत।

पुरादित्य : दलमे के सभ छथि ?

महत्तक : महाराज ! दल बड़ छोट—दू गोट पुरुष ओ दू गोट महिला मात्र।

पुरादित्य : और किछु विशेष विवरण ?

महत्तक : एकटा पुरुष, अत्यन्त गौरवर्णक, उन्नत ललाट, तेजोमय आँखि, वाणीमे अद्भुत गरिमा ओ माधुर्य। श्रान्त रहितो कान्तिक आभा अंग-अंगसँ प्रस्फुटित होइत, भव्य व्यक्तित्वसँ सम्पन्न। किन्तु दोसर पुरुषक आकृति अनुचर सन।

पुरादित्य : आ महिला ?

महत्तक : महिला ? श्रीमन्, वस्त्र अत्यन्त सामान्य। मरोत काढ़ने छलीह तेँ मुखमंडल देखबाक संयोग नहि भेल। अवगुण्ठित महिलाक एकटा हाथ ओ पयरसँ अनुमान भेल, जेना ओ कोनो राजकुलक होथि वा कोनो राजमहिषी होथि। अत्यन्त खिन्न ओ दुर्बल, मौलायल कमलक फूल सदृश। दोसर महिला, प्रायः अनुचरी छलीह, कारण ओ प्रथम महिलाक द्वारा संकेतसँ देल गेल आदेशक पालन करबाक चेष्टा कयलनि।

पुरादित्य : अहाँक की अनुमान अछि ? के थिकाह ओ लोकनि ? कतऽ सँ अयलाह ? किएक अयलाह ? नियमानुसार आतिथ्य निवेदन भेलनि ?

महत्तक : अपन कोनो प्रकारक परिचय देब अस्वीकार कऽ देलनि। हमर आतिथ्य स्वीकार नहिएँ कयल, संगहि कहलनि जे सप्तरी

राज्य सीमामे हमरालोकनिक अल्प अवस्थानसँ जँ असौकर्य हो तँ हम सब ऐखन प्रस्थान कऽ जाइ।

(मौन)

की सोचि रहल छी श्रीमान् ? हमरा तँ बूझि पड़ैत अछि जे ई लोकनि सुलतानक अग्रचर थिकाह। आक्रमणसँ पूर्व एहि ठामक रहस्य बुझबाक हेतु ओ बाटक पता लगयबाक हेतु आयल छथि। महाराज, हम अपन राजपुरुषके चतुर्दिक नियुक्त कऽ सचेत कऽ देल अछि जे ई लोकनि आगाँ बढथि तँ रोकि लेल जाय। राज्यक सीमासँ बहराय नहि पाबथि तथा हिनका लोकनिक वार्त्तालाप ओ क्रियाकलापक सूचना राज्याधिकरण केँ पठबैत रहल जाय।

पुरादित्य : नहि, नहि, महत्तक ! एना नहि। महा अनर्थ भऽ जायत।

महत्तक : अनर्थ नहि होमऽ देबैक। सुलतानी सेनाकेँ अपन राज्यक सीमा धरि नहि पहुँचऽ दी तेँ अपन सेना सज्जित भऽ अपनेक आदेशक प्रतीक्षामे अछि।

पुरादित्य : महत्तक ! अहाँ हमर आशय नहि बूझल। ई दल शत्रुपक्षक नहियों भऽ सकैत अछि।

महत्तक : तखन के भऽ सकैत अछि ?

पुरादित्य : संभव अछि जे अपन परममित्र महाराज शिवसिंहक लोक होथि। प्राय: महाराजपण्डित विद्यापति ओ हुनक संरक्षणमे महारानी लखिमा ने होथि।

महत्तक : तीरभुक्तिक राजमहिषी महारानी लखिमा ? ओ चीन्हल कोना जयतीह ? हमरा तँ एहन कोनो वार्त्ता नहि अछि !

पुरादित्य : अहाँके नहि अछि मुदा हम अपना दिससँ किछु व्यक्ति गज-रथपुरमे नियुक्त कयने छलहुँ, जे हमरा पूर्वहि सूचना देने छल। युद्धक अन्तिम क्षणमे, सुलतानी सेनाक दुर्ग प्रवेशसँ पूर्वहि राजकुलक महिलालोकनि सुरक्षाक हेतु गुप्त स्थान सबमे पठबा देल गेलीह। महारानी लखिमाक रक्षाक भार

बिद्यापति पर बेल गेलनि आ ओ लोकनि अपन गन्तव्य स्थानक हेतु चलि देलनि ।

महत्तक : आश्चर्य जे हमरा ई सब बूझल नहि भऽ सकल । (कने रुकि) हँ, महाराज ! एकटा बात बिसरा गेल छल । जखन हम हुनकालोकनिकेँ अपन परिचय देलियनि तँ ओ सम्भ्रान्त महिला अपना दिससँ श्रीमान्‌कँ सन्देश रूपमे देबाक हेतु चीनांशुकमे लपेटल ई छोटसन पोटरी देलनि अछि । ई लेलजाय ।

(मौन)

पुरादित्य : देखी, की थिक । (मौन) ओ ! ई तँ ओ रत्नदर्पण थिक जे हम अपन मित्रकेँ लखिमाक पाणिग्रहणक अवसर पर उपहृत कयने छलियनि ! महत्तक ! ई हमर सौभाग्य थिक जे हमर मित्रक पत्नी महादेवी लखिमा ओ महाराजपण्डित बिद्यापति अपन अतिथि भेल छथि । आवसथिककेँ आदेश देल जाइनि जे हिनकालोकनिक अवस्थानक समुचित व्यवस्था करथि, अत्यन्त शीघ्र । हिनकालोकनिकेँ पूर्ण राजोपचारक संग आनल जाइनि ।

महत्तक : अवश्य, महाराज ! कोनो त्रुटि नहि होयतनि ।

पुरादित्य : थम्हू, महत्तक ! हम स्वयं सपत्नीक हुनकालोकनिकेँ अरियाति अनबाक हेतु चलब । अतिथिगणक हेतु शिविकाक व्यवस्था हो । महारानी हेतु विशिष्ट परिचारिका तथा किछु अनुचरकेँ आराममे अविलम्ब पठाओल जाय । ऐखन ।

महत्तक : तुरन्त सब भऽ जाइत अछि ।



द्वितीय दृश्य

[स्थान : अतिथिशालामे विद्यापतिक विश्राम कक्ष। समय : मध्य रात्रि। पुरुषकण्ठसँ मन्द स्वरेँ गाओल जाइत गीत श्रुति गोचर होइछ जे क्रमशः दूरसँ निकट होइत जाइछ।]

विद्यापति : रोपल मञ्जु दमना पिआ करु गमना
सौरभ नगरि बेआपलि ना रे की।
जञो पिआ अओता नयन जुड़ओता
मन-मन्दिर देब वासे ना रे की।
अधर मधुरि रस ओ पुनु अमिअ वस
दए पिआ हरबि पिआसे ना रे की।
कुच सिरिफल लए भेट करब गए
पेम-पानि पएर धोआओब ना रे की।
कवि विद्यापति भन सरुप मोरहु मन
सिरि सिवसिंहदेव आओब ना रे की।

विद्यापति : (ककरो पदचाप सूनि ओ अकानि कऽ) एहि निविड़ अन्धकारमे ककरो पदचाप सूनि पड़ैत अछि। (कनेक जोरसँ) के थिकहुँ ? आउ, चल आउ।

(मौन)

पुरादित्य : महाराजपण्डित कविकण्ठहारकेँ हमर प्रणति-निबेदन स्वीकार हो।

विद्यापति : (अकचकाइत) के ? महाराज गिरिनाराणय पुरादित्य स्वयं एहि कुटीमे पदार्पण कयल अछि ? हमर अहो भाग्य ! ई आसन ग्रहण कयल जाय, श्रीमान् !

पुरादित्य : एहि मध्य निशीथहुमे जागि रहल छी, से किएक ?

विद्यापत : (निःश्वास छोड़ैत) केओ सुखे सूतए केओ दुखे जाग।
अपन अपन थिक भिन भिन भाग॥
हम तँ अपन आवासमे रहि कऽ जागरण कऽ रहल छी मुदा अपने तँ अपन सुखद राजभवन छोड़ि कऽ एखन एकसर आयल छी, तकर की कारण ?

पुरादित्य : क्षमा करब कविवर ! अपनेक एकान्त क्षणक शान्तिकेँ हम भंग कयल, ताहि हेतु क्षमा कयल जाय।

विद्यापति : ई की कहैत छी महाराज ! सब कुशल अछि ? एहि मध्य-रात्रिमे अकस्मात् कष्ट करबाक की प्रयोजन भऽ गेल ? हमरहि बजबा लेल जाइत।

पुरादित्य : कष्ट नहि, कविवर ! हम चोरि करबाक हेतु आयल छलहुँ। चोरि कयलहुँ। नीक जकाँ चोरि कयलहुँ आ चोरि करैत सेन्ह पर सद्यः पकड़ल गेलहुँ। चोरकेँ जे दण्ड भेटैक से हमरा स्वीकार अछि।

विद्यापति : महाराज आ चोरि ! दण्ड ! हम किछु नहि बूझि सकलहुँ। ई दृश्यकूट हमरा बोधगम्य नहि भऽ सकल।

पुरादित्य : (कनेक बिहुँसैत) दृश्यकूटक रचना कयनिहार स्वयं नहि बूझि रहल छथि ई दृश्यकूट !

विद्यापति : लक्ष्यार्थ स्पष्ट नहि भऽ रहल अछि।

पुरादित्य : कविवर ! अपनेकेँ राजाबनौलीमे निवास करैत बारहम वर्ष बीति रहल अछि।

विद्यापति : हमरा पूर्ण स्मरण अछि। की आब एहि स्थानक हमरा लोकनि द्वारा परित्याग अपेक्षित अछि ?

पुरादित्य : (जीह कूचैत) च् च् च् व् ! एहन कल्पना नहि कयल जाय। अपनेक सान्निध्यसँ हम कृतार्थ भेलहुँ। महारानी लखिमाक पूजा-पाठक अछिजलक हेतु निर्मित सरोवरक अपने स्वयं यज्ञ कयल। एहन सुयोग पुरवासीकेँ पूर्वमे कहाँ भेटल छलैक ! आइ समस्त नगर ओहि सरोवरक जलकेँ गंगाजल सन पवित्र मानि उपयोग करैत अछि।

विद्यापति : श्रीमान्क अनुग्रह जे महारानीक व्रत-संकल्पक अनुकूल कार्य कराओल ।

पुरादित्य : कविवर ! अपने लिखनावलीक रचना कऽ एहिठामक राज्य-शासनकेँ व्यवहार-विषयक पथ-प्रदर्शन कयल जाहिसँ प्रजा ओ प्रजापति दुहू अपनेक प्रति श्रद्धानत छथि ।

विद्यापति : एकटा सामान्य कृतिकेँ एतेक उच्च स्थान देबामे हमर वा हमर कृतिक महत्त्व नहि, ई तँ महाराजक हृदयक विशालता थिकनि ।

पुरादित्य : से किएक ? अपने सन महान् पण्डितक मुखसँ श्रीमद्भागवतक व्याख्यान श्रवण कऽ कऽ ककर मन-प्राण तृप्त नहि भेलैक ?

विद्यापति : एहिमे पाण्डित्यक कोन विशेषता छैक ?

पुरादित्य : ई तँ जगत प्रसिद्ध अछि जे 'विद्यावतां भागवते परीक्षा' ।

विद्यापति : श्रीमान् ! महारानी लखिमाक कालक्षेपण ओ आत्मतोषार्थ भगवान कृष्णक चरित श्रीमद्भागवत अपनहिँ हाथेँ लीखिओकर वाचन ओ व्याख्या कयल । एहिसँ आनहु लोककेँ तृप्ति भेलनि, से तँ हमर सौभाग्य ।

पुरादित्य : नहि, ई हमर सौभाग्य थिक । तथापि एकटा 'परन्तु' हमरा रहिए गेल ।

विद्यापति : ओ 'परन्तु' की थिक से जनबाक धृष्टता कऽ सकैत छी अपनेक समक्ष ?

पुरादित्य : आइ हम अपनाकेँ धन्य बुझैत छी जे अपने हमर 'परन्तु' केर जिज्ञासा कयल ।

विद्यापति : किछु कहलो तँ जाय ।

पुरादित्य : हे महामान्य ! एहि बारह वर्षक अवधिमे अपनेक महाराज-पण्डितक स्वरूपक दर्शन कऽ कृतार्थ होइत रहलहुँ । परन्तु··· परन्तु······

विद्यापति : हँ, हँ, कहल जाय ।

पुरादित्य : हम आइ धरि सरस कविकण्ठहार अभिनव जयदेव विद्यापतिक दर्शन नहि कऽ सकलहुँ। मैथिल कविकोकिलक काकली, कोमलकान्त पदावलीक एकहु चरण सुनबाक हेतु हमर कान निरन्तर लालायित रहि गेल। जाहि स्वरलहरीसँ तीरभुक्तिक राजसभा गुञ्जायमान होइत छल तकर किंचितो अंश प्राप्त करबाक पात्र राजाबनौली नहि अछि की ?

विद्यापति : एहन कथा नहि कहल जाय। जे राजाबनौली हमरा सब सन विपतल जनकेँ सम्मानपूर्वक आश्रय देल तकरा प्रति हमर कृतज्ञता शब्दमे नहि व्यक्त भऽ सकैत अछि। परन्तु श्रीमान् कहियो एहन आदेश कहाँ देलनि !

पुरादित्य : कविवर ! कवि तँ अपन सृष्टिक स्वयं प्रजापति होइत छथि। की,हुनका आदेश देल जा सकैत अछि ? की आदेश पर काव्य-सर्जना भऽ सकैत छैक ? राजाज्ञासँ सेनाक प्रयाण भऽ सकैत छैक ? सन्धि ओ विग्रह भऽ सकैत छैक। राज्यक शासन राजाज्ञासँ चलि सकैत छैक किन्तु कवि नहि।

विद्यापति : अपने सत्य कहल। आदेशसँ प्रशस्ति काव्य रचल जा सकैछ। चारण-काव्य लिखल जा सकैछ, परन्तु मन-प्राणकेँ आन्दोलित करऽवला, मर्मकेँ स्पर्श करऽवला, शाश्वत, सार्वभौम कालजयी काव्यक सृष्टि कथमपि संभव नहि। ओ तँ स्वतः अन्तःकरणसँ स्फूर्त्त होइत छैक कलकल निनादिनी मन्दाकिनी जकाँ।

पुरादित्य : अभिनव जयदेव ! ओही मन्दाकिनीक सुधा-सलिलक एक बिन्दु पयबाक हेतु हमर आतमा पियासल रहल अछि।

विद्यापति : क्षमा करब, महाराज ! अभिनव जयदेवक प्रेरणा-स्रोत छलथिन महाराज शिवसिंह ओ महादेवी लखिमाक युगल-मूर्त्ति। हुनकहिमे ओ राधा-माधवक भुवनमोहिनी छविक दर्शन करैत छलाह। शिवसिंहक तिरोधानक संगहि अभिनव जयदेवक मुक्त गगनमे विचरण करयनिहार कल्पना-विहगक

पाँखि भग्न भऽ गेलनि। राधाकृष्णक उदात्त ओ उल्लासमय रस-रास ओ केलि-क्रीड़ाक उच्छलित स्रोतस्विनी शुष्क भऽ गेलनि। कृष्णक मथुरागमनक पश्चात् वृन्दावनक कदम्ब-काननक कोनो गाछक छाँहमे बैसलि एकाकिनी राधाक उदास आँखिमे उल्लास कहाँ !

पुरादित्य : परन्तु कविक हृदय तँ ·· ········

विद्यापति : आब तँ हम उत्तरकाण्डक प्रवासिता वैदेहीकेँ सान्त्वना देत बाल्मीकि ओ प्रवासी कृष्णक हृदयेश्वरी विरह-विधुरा राधाकेँ प्रबोधन देनिहार उद्धवक कर्त्तव्य-निर्वाह कऽ रहल छी।

पुरादित्य : हे कविकण्ठहार ! विद्ध क्रौञ्चक वेदनासँ महर्षि बाल्मीकिक कण्ठसँ आदिकाव्यक जन्म भेल छल। रामायणक सृष्टियो तँ ओही करुणाक परिणाम थिक। उद्धवक सन्देश तँ आइयो चिरनवीन अछि।

(मौन)

कविवर ! अपनहुँ तँ कवि छी आ ओही दृष्टिसँ करुणाक एहि परिच्छेदकेँ पढ़ि रहल छी। आइ हम अनुभव कयल जे महाकवि अपन उल्लासक तँ वितरण करैत रहलाह परन्तु अपन विषादक भोग स्वयं एकान्तमे करैत रहैत छथि।

विद्यापति : महाराज !

पुरादित्य : एहि मध्यनिशामे आइये नहि, कतोक दिन हम आबि कऽ कविक संवेदना-कोषक कोनो ने कोनो अंश प्राप्त करैत रहलहुँ अछि। आइयो हम परिवर्त्तित वेशमे एही हेतु अपनेक निवास-स्थानक एकान्तताक अपहरण कयल। ई थिक चौर्यवृत्ति। एहि चौर्यमे हमरा जे अनमोल रत्न सभ भेटल से की अन्यथा हमरा भेटि सकैत ? अपनेक ई गीत हमरा ततेक भाव-विह्वल कऽ देलक जे हम अपनेक निकट अयबासँ अपनाकेँ रोकि नहि सकलहुँ।

विद्यापति : महाराज ! हम अपन अन्तर्व्यथाकेँ शब्दक माध्यमसँ व्यक्त कऽ पुनः अपने धरि सीमित राखि लैत छी। ओहि व्यथामे

महारानीक मनोव्यथा सेहो नीर-क्षीर जकाँ एकाकार भेल रहैत अछि। एहिसँ अनकहुँ व्यथित करब की उचित हैत ?

पुरादित्य : अपनेक पीड़ाक सहभागी हमहूँ भऽ सकी, तेहन योग्य हमरा नहि बुझैत छी अपने ? शिवाइ राजा हमर मित्र छलाह। अभिन्न मित्र छलाह। महारानी लखिमा हमर पूजनीया थिकीह। हुनक मर्मान्तिक पीड़ा हमरहु आत्माकेँ विद्ध करैत रहैत अछि। मुदा हमरा ओ सामर्थ्य कहाँ जे अपनेक जकाँ ओकरा शब्दमे व्यक्त कऽ सकी। हमर असमर्थताकेँ अपात्रता नहि मानल जाय।

विद्यापति : अपनेक सहृदयतासँ मुग्ध छी। परन्तु हमर ई आत्मगीत कोनहु राजपुरुषकेँ निवेदित-समर्पित होयबाक लेल नहि अछि। जहिया शिवसिंह औताह, तहिया हुनकहि समर्पित होयत। महादेवी लखिमाक मनोभावक मंजूषा खोलबाक अधिकारी एकमात्र शिवसिंह थिकथि।

पुरादित्य : हम कविक भावनाक प्रति नतमस्तक छी। हुनक एकान्त शान्तिमे कखनो व्यवधान नहि होयतनि। अपन पर्णकुटीमे, नीरव निशामे विद्ध क्रौञ्चक वेदनाकेँ, वनवासिनी वैदेहीको करुणाकेँ, विरहिणी राधाक आहिकेँ शब्दबद्ध करबामे कोन व्याघात कविकेँ नहि होयतनि।

विद्यापति : महाराज ! अपने की-कहाँ बाजि गेलहुँ। मुदा हम तँ सामान्य मनुष्य छी। जखन असह्य व्यथा-सम्भार सम्हारि नहि होइत अछि तँ ओ स्वतः गीत-संगीत बनि कऽ निःसृत होमऽ लगैत अछि। (मौन) एहन क्षणमे अद्भुत बातक अनुभव होइत अछि।

पुरादित्य : से की कविवर !

विद्यापति : राजन् ! जखन कखनो भावना-प्रवाह गीतक रूप धारण करऽ लगैत अछि तँ जेना महादेवी लखिमाक आत्मवीणाक करुण झंकार ओहि गीतक प्रत्येक स्वर ओ व्यंजनमे, मूर्च्छना

ओ स्वर-वितानमे समाहित भऽ कऽ बहराय लगैत अछि। आ हमर प्रत्येक गीत लखिमाक विरह-गीत बनि जाइत अछि।

पुरादित्य : महादेवीक चर्चा होइतहि जेना हम स्वयं आर्त्त भऽ उठैत छी। तखन अपने तँ राजा शिवसिंह रूपनारायण ओ महादेवी लखिमाक अन्तरंग मित्र, विश्वस्त सखा, साक्षी ओ संरक्षक रहलियनि अछि।

विद्यापति : आब अपने विचारपतिक आसन पर बैसि निर्णय दियऽ जे ओहि महिमामयी नारीक आत्माकेँ राजसभा मध्य मनो-रंजन लय कोना ठाढ़ कऽ दियऽ ?

पुरादित्य : एहिसँ आगाँ सुनबाक सामर्थ्य हमरा नहि अछि। कविकण्ठ-हार ! अपने अपन काव्य-कल्पतरुक छायामे हमरा विश्राम करबासँ वञ्चित कऽ रहल छी। अपनेक आज्ञा शिरोधार्य अछि। परन्तु कवियो तँ आनक उत्तम भावक अपहरण करितहि छथि। जँ भावक सेहो कोनो कविकण्ठहारक स्वर-वितानकेँ अपन कानक माध्यमसँ चोरि करय तँ, तकरा तँ नहि रोकि सकैत छिऐक ?

विद्यापति : जँ कोनो राजा अपनहि राज्यमे, अपनहि भवनमे चोरि करबाक हेतु सन्नद्ध होथि तँ तकरा आन केओ कोना रोकि सकैत अछि ? आ चोरि तँ सफल सैह ने होइत छैक जकरा गृहपति नहि बूझि सकथि। 'जनला चोरे कहब की चोरि'।

पुरादित्य : वेश ! आब विजयक आदेश देल जाय।

विद्यापति : नहि राजन् ! राजाक दर्शन खाली हाथ नहि कर्त्तव्य। अपने तँ हमरा कुटीमे पदार्पण कयल अछि। नहि किछु तँ कमसँ कम हमर मंगलकामना तँ लेने गेल जाय।(मौन)ई ग्रहणकयल जाय।

पुरादित्य : जँ अपने आशीर्वाद दैत छी तँ सस्वर देबाक कृपा करी। आशीर्वादिमे कृपणता नहि होअय।

विद्यापति : जे महाराजक इच्छा छनि सैह होअओ। (विद्यापति सस्वर पढ़ैत छथि।)

पुरह पुरादित अभिमत पुरू, दारिद दुख दूरेँ परिहरू।
तोहरा चरण सरण जे आब, धन वित पूत परम पद पाब ॥

पुरादित्य : कविवर ! अपनेक द्वारा देल गेल चारि चरणक आशीर्वाद हमरा हेतु चारू पुरुषार्थक वरदान थिक। हम धन्य भेलहुँ।

तृतीय दृश्य

[समय : मध्य रात्रि । स्थान : विद्यापतिक निवास । करुण स्वरमे पुरुष कण्ठक गीत सूनि पड़ैछ ।]

लोचन धाए फेधाएल हरि नहि आएल रे ।
सिव सिव जिव नहि जाए आसे अरुझाएल रे ।।
मन कर तहाँ उड़ि जाइअ जहाँ हरि पाइअ रे ।
पेम परसमनि पानि आनि उर लाइअ रे ।।

विद्यापति : आशमे ओझराएल महादेवीक प्रतीक्षाक समयकेँ आब कोना बढ़ा सकबनि ? अवधिक आयामकेँ आश्वासनक बल पर खेपैत गेलहुँ । एतेक दिन आशा आ विश्वास दऽ दऽ कऽ हुनक प्राणकेँ अँटकौने रहलियनि । धैर्य आ प्रबोधनक कोन शब्द बाँचल रहि गेल जाहिसँ परितोष दऽ सकबनि । आब काल्हि की कहबनि ?

(दूर पर नारी कण्ठसँ करुण गीत होइत अछि ।)

पिअ विरहिन अति मलिन कओन परि जीउति रे
अवधि न आएल माधव अब विस पीउति रे
रविकर सम भेल विधुकर परसैते भीमा रे
दिन दिन अवसन देह सिनेहक सीमा रे

विद्यापति : ओह ! 'अवधि न आएल माधव' । आजुक ई रात्रि कतेक भीषण अछि ! कतेक दारुण अछि ! नहि अयलाह ओ एखन धरि । नागर, रसमन्त, गुणगाहक, कान्ह स्वरूप, रूपनारायण, लखिमादेवीक आराध्य नहि अयलाह । सुपुरुष शिवसिंह कहियो अपन वचनसँ विचलित नहि भेलाह, जकरा लक्ष्य कऽ हम कहैत छलहुँ 'बड़ाक वचन कबहु नहि विचलए' 'सुपुरुष वचन पखानक रेह' । परन्तु आइ हमर विश्वास हमरे संग

बं गना कऽ रहल अछि। खंड खंड भऽ कऽ टूटि रहल अछि। अवश्ये सिनेहक सीमा नहि होइत छैक परन्तु अवधिक सीमा होइत छैक। आइ हमर मित्रक तिरोधानक बारहम वर्ष पूरि रहलनि अछि। लखिमाक मनोभाव जे 'अवधि दिवस नहि पाइअ ओर' तकरा टारि कऽ बारह वर्ष धरि लऽ अनलहुँ। मुदा आजुक राति ओहि अवधिक अन्तिम सीमा बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। आब हम काल्हि महादेवीकेँ की कहबनि!

(नारी कण्ठसँ पुनः सूनि पड़ैछ)

पहर निमिस जुग जामिनि कामिनि जगइते रे।
मुरुछि पड़ए महि माझ साँझ ससि उगइते रे॥
विद्यापति कह सब तह दुसह मनोभव रे।
केओ जनु अनुभव जग जन विरह पराभव रे॥

विद्यापति : ओह! आजुक ई राति कालरात्रि बनि गेल। मोहरात्रि बनि गेल। ई महारात्रि किएक नहि बनि जाइत अछि? आजुक ई निशा महानिशामे बदलि जैतय! अनन्तकाल धरि उषाकाल नहि अबितय। मुदा हमरामे ओ साधना, ओ सामर्थ्य कहाँ, जे कालक महारथक पहियाकेँ रोकि दी। हे महाकाली! अपन श्याम वर्णक विस्तार कऽ समस्त भूमण्डलकेँ आच्छादित कऽ दियऽ। एहि कालरात्रिकेँ महारात्रि बना दियऽ।

(पुनः नारीकण्ठसँ गीत सूनि पड़ैछ। गीतक मध्यमे पृष्ठभूमिमे सिसकी ओ हिचकीक ध्वनि मन्द-मन्द आरम्भ होइछ जे क्रमशः बढ़ैत जाइत अछि।)

हरि हरि मधुपुर बाटक आस।
कत दिन लोचन पड़त उपास॥
हमर सपथ दए पुछिहह तन्हि।
जिबइते दरसन होएत की नहि॥
लागु दुरासा चित अति खेद।
होअओ की जाओ पड़ओ परिछेद॥

पुरत कि नहि मन संसए पाए।
कण्ठ हिडोरा जीव खेलाए॥

विद्यापति : नहि, नहि, नहि, हमरा नहि सूनल जाइत अछि आब। ई की बाजि गेलीह ललिता ? की बाजि गेलीह ? (गीत आ सिसकी बन्द होइत जाइछ। विद्यापतिक स्वर तीव्र भऽ जाइछ।) बन्द करू। बन्द करू प्रलाप ! ललिता ! ललिता !! ललिता !!!

(मौन)

ललिता : (दूरसँ निकट अबैत मन्द स्वरमे) कविवर हमरा सोर कयलनि की ?

विद्यापति : के, के ? ललिता ? अहाँ एखन ? एतऽ ?

ललिता : हँ, हमहीं छी, ललिता। हम अयबे लेल छलहुँ कि अहाँक सोर करब सूनल। (मौन) की आदेश करैत छी ? आब की कहैत छी ? जे गीत हम गाओल अछि तकर भणिता की देबऽ चाहबैक ?

विद्यापति : आब कहबाक लेल की अछि ? धैर्य आ विश्वास, यैह दूटा शब्द कहैत रहलहुँ अछि आ एखनो……

ललिता : कतेक दिन धरि ? निरन्तर यैह तँ महादेवीकेँ आश्वासन दैत रहलियनि जे 'धैरज धय रहु मिलत मुरारि' 'आज आओत घर नाह' 'सिरि सिवसिंह देव आओब ना' 'लखिमा देविपति पुरिह मनोरथ आबिह सिवसिंह राजा'। महादेवी बारह वर्ष धरि जीवन धारण कयने रहलीह। आजुक ई राति बारहम वर्षक अन्तिम राति थिक। आबहु की अहाँकेँ विश्वास अछिहे जे राजा पलटि कऽ औताह ?

विद्यापति : हम तँ सब दिन विश्वासेक आधार पर समय खेपैत रहलहुँ। महारानीकेँ हम आश्वासन दैते रहबनि।

ललिता : मुदा आब तँ महारानीकेँ अन्तिम निर्णयसँ विरत करब असंभव लगैत अछि। आश्वासन पर आब कहैत छथि—'दाहलि हवि जनु सीँचिअ वारि'। ओ तँ अस्फुट स्वरेँ बजैत रहैत छथि 'पुरुख विहुन जीवए जनु नारि' 'एहि सञो भल वरु जीवक अन्त' 'कतहु मरन नहि देल विधि'। एखनो ओ

अपने अपने बजैत छलीह 'पिआ बिनु मरब मञो आजि' 'हमहु मरब धसि आगी'।

विद्यापति : नहि, नहि, ललिता ! एहन नहि सोचथि महादेवी। जहिया हमर बालसखा शिवसिंह औताह तहिया हम की तर्क देबनि ? हुनक कुललक्ष्मी कतऽ सँ देबनि ? हम अपन मीतक अन्तर्मनकें जनैत छियनि।

ललिता : कविवर ! राजाक अहाँ बालसखा छलियनि तँ हमहूँ महादेवीक बालसंगी छियनि। परिचारिका, सहचरी आ सखी रहलियनि अछि। हम हुनक अन्तस्तलक पीड़ाकें जतेक बुझैत छियनि ततेक आन नहि बुझतनि। कविवर ! राजाकें अहाँ नीक जकाँ चीन्हैत होयबनि मुदा महादेवीकें हमरा छोड़ि आन केओ नहि चीन्हैत छनि। हुनक अन्तर्व्यथाकें कनेक अकानि कऽ सुनू। एखनो सूनि पड़त।

(नेपथ्यसँ श्वासोच्छ्वास ओ सिसकबाक किंचित् ध्वनि सूनि पड़ैछ।)

विद्यापति : ललिता ! हमर हृदय विदीर्ण भऽ जायत एहि आर्त्त उच्छ्वासकें सूनि कऽ।

ललिता : मुदा हम तँ दिन-राति यैह सुनैत छी, देखैत छी आ स्वयं भोगैत छी। तथापि महादेवीकें अपन पतिक ज्येष्ठ बालसखा महाराजपण्डित कविकण्ठहार विद्यापतिक निष्ठा ओ वचन पर अखण्ड विश्वास छनि। ओ अहाँक अन्तिम निर्णय, अन्तिम संवाद सूनऽ चाहैत छथि। जँ अहाँ कोनो रहस्यकथा जनैत छी तँ ओकरा व्यक्त किएक ने करैत छी ? महादेवी कोनो दारुण संवादक संभावनासँ अनजान नहि छथि।

विद्यापति : ललिता ! हमरा धर्मशास्त्रक ज्ञान अछि। यदि महाराजकें कोनो अनिष्ट घटना भेल रहितनि आ हम देखने रहितियनि वा जनैत रहितियनि तँ एकर गोपन कऽ प्रायश्चित्तक भागी नहि बनितहुँ। एहन गर्हित कार्य हमरासँ नहि होइत। हमरा ओहिना मोन छथि हमर सखा शिवसिंह। ओहिना अछि मोन युद्धभूमिक अन्तिम मिलन तथा अन्तिम विश्लेष।

ललिता : तँ की युद्धभूमिमे ओ··· ···

विद्यापति : हमरासँ वचन लेने छलाह आ वचन देने छलाह —

(अतीत वृत्त आरम्भ)

[पृष्ठभूमिमे युद्धक हल्ला । घोड़ाक टाप ओ हथियार टकरयबाक ध्वनि । आहत-निहत भेला पर आह, ओह इत्यादिक भीषण ची कार ।]

शिवसिंह : सखा ! आब अहाँ एहिठामसँ हटि जाउ ।

विद्यापति : एखन हम अहाँक संग कोना छोड़ि सकैत छी ?

शिवसिंह : आब अपन सेना दुर्बल भऽ रहल अछि । दक्षिण, पश्चिम आ उत्तर तीनू दिशासँ सुलतानक सेना चप्करि कऽ बढ़ि रहल अछि । आब हम सब घेरा रहल छी। दक्षिण-पश्चिम कोणमे अपन एकटा गुल्म एकरा सब पर आक्रमण करत । परन्तु ओहि गुल्ममे कय गोट राउतपति मारल गेलाह । तेँ ओकरा सम्हारबाक लेल हमरा शीघ्र स्वयं जाय पड़त । ओतऽ धरि पहुँचबाक लेल और कोनो रास्ता नहि अछि, तेँ सुलतानक एहि वृत्ताकार सैन्यव्यूहक बीचसँ रास्त बना कऽ निकलऽ पड़त ।

विद्यापति : महाराज ! हमहूँ अहाँक संग रहब । एकसर अहाँकेँ कोना छोड़ि देब ?

शिवसिंह : हमरा संग रहत हमर अरिमर्दन घोड़ा (घोड़ाक पीठ थपथपयबाक ओ घोड़ाक हिनहिनयबाक ध्वनि), विद्युल्लता तरुआरि, पिनाक नामक धनुष तथा वज्रजित भाला ।

विद्यापति : आ हम ? हम किएक नहि ?

शिवसिंह : नहि कविवर ! राजधर्म थिक जे युद्धमे पीठ नहि देखाबी । ई हम्मर कर्त्तव्य थिक ।

विद्यापति : आ हमर कर्त्तव्य की अछि ? यैह जे संग्रामभूमिमे अपन सखाकेँ एकसर छोड़ि पलायन कऽ जाइ ! की इतिहास हमर कायरताकेँ क्षमा करत ? बन्धु तँ वैह ने जे सुख-दुख सर्वत्र, सततकाल संग रहय, संग दिअय ।

शिवसिंह : बन्धु ! एहि परीक्षाकालमे हमरासँ फराक भैए कऽ हमर उपकार कऽ सकैत छी ।

विद्यापति : महाराज ! युद्धभूमिमे उपकारक एहन परिभाषा हमरा मान्य नहि । हम पाछाँ नहि.........

शिवसिंह : अच्छा ! गजरथपुरक दुर्गक नवीनतम समाचार की अछि ?

विद्यापति : दुर्गमे जतेक रअगीया छलीह सब सुरक्षित स्थानक हेतु प्रस्थान कऽ गेलीह, परन्तु .. ..

शिवसिंह : परन्तु की ? शत्रु पक्ष तँ एखन दुर्ग धरि नहि पहुँचल अछि ।

विद्यापति : पहुँचल नहि अछि मुदा आशंका तँ अछिहे । किन्तु एहनो स्थितिमे महादेवी लखिमा दुर्ग-परित्याग अस्वीकार कऽ देलनि ।

शिवसिंह : से किएक ? रक्षकक अभाव भऽ गेल की ?

विद्यापति : नहि, महादेवीक सन्देश भेटल अछि जे जकरा संग एहि दुर्गमे प्रवेश कयने छलहुँ तकरे संग दुर्गसँ जीवित बहरा सकैत छी, अन्यथा हमर मृत शरीरे एकसर बहरायत । हँ, जँ महाराजक आदेश हो तँ युद्धभूमिमे एकसरियो पहुँचि सकैत छी ।

शिवसिंह : हमरा ई आशंका छल । ई एकटा नव समस्या भेल । महारानीकेँ तुरन्त दुर्गसँ सुरक्षित स्थान पर लऽ जायब आवश्यक । समय नहि अछि, अविलम्ब सम्पन्न कयल जाय ।

विद्यापति : महाराज ! हम अगिला व्यूह सम्हारैत छी । अहाँ शीघ्र चल जाउ । विलम्ब नहि करू ।

शिवसिंह : मित्र ! लखिमाक सन्देश हमरहु भेटि गेल छल । तेँ हम अहाँकेँ जाय कहलहुँ । अहाँ हमर बन्धु छी । अभिन्न छी । लखिमा अहाँक निर्देश अवश्य मानतीह ।

विद्यापति : अहाँकेँ हमर साहस आ रणकौशल पर शंका अछि ?

शिवसिंह : नहि, नहि. आब समय नहि अछि । (नेपथ्यमे 'अल्लाह' ओ 'जय माँ काली'क सम्मिलित निनाद होइछ । घोड़ा हिनहिना उठैछ ।) देखू, भीषण युद्ध चलि रहल अछि । योद्धा सब लड़ि-कटि रहल अछि । तर्कक समय नहि अछि । हम राजलक्ष्मीक रक्षा करैत छी, अहाँ कुललक्ष्मीक रक्षा करू । दूनूक महत्त्व समान अछि । विलम्ब नहि करू ।

विद्यापति : ई सर्वथा अनुचित हैत।

शिवसिंह : विलम्ब नहि। अहाँ महारानीकेँ लऽ कऽ पुरादित्यक ओतऽ राजाबनौलीमे प्रतीक्षा करब। हम शीघ्र ओतऽ पहुँचब। जावत अहाँ सब गजरथपुरक सीमसँ बाहर होयब, हम एकरा सबकेँ अवश्य रोकने रहब। (फेर हल्ला होइछ। घोड़ाक टाप सूनि पड़ैछ।) अच्छा! मित्र! विदा। महारानीकेँ धैर्य अवलम्बन करबैत रहबनि। भगवतीक इच्छा हेतनि तँ फेर भेंट हैत। हम अवश्य आयब। विदा। जय माँ काली!

(तीव्र गतिएँ जाइत घोड़ाक टाप सूनि पड़ैछ। हल्ला लग अबैत जाइछ। एके बेर झनझनाहटिक आवाजक संग घोड़सवारक घोर चीत्कार 'याह अल्लाह' तथा खसबाक ध्वनि। घोड़ाक टाप क्रमशः दूर होइत जाइछ।)

(मौन)

वजीर : के ? जहाँपनाह! ई की ?

सुलतान : आह, परवरदिगार! हम जीबैत छी ? हमरा माथमे भाला नहि भेसल अछि ? आह! आह!

वजीर : जहाँपनाह एकदम सही सलामति छथि। चोट लागल हैत। सिवाइराजा जीबैत नहि पकड़ल जा सकल। गजबके फुर्तीसँ हमर फौजक बीचसँ कतेको पाइक केर सीर छोरैत निकलि गेल। मगर हमर फौजक पाइक ओकरा पाछाँ घोड़ा दौड़ा देलक अछि। ओ जरूर पकड़ल जायत, ने तँ मारल जायत।

सुलतान : (जोरसँ) नहि वजीर, नहि। वापस बजाउ। गढ़क घेरा-बन्दी हटाउ।

वजीर : (आश्चर्यसँ) ई को हुकुम दैत छी जहाँपनाह ? सुलतान अपन फौजकेँ पाछाँ हटौताह ? दुश्मनकेँ छोड़ि देताह ?

सुलतान : शेरकेँ सरि नहि कयल जा सकैछ, वजीर! ओकरा पिजड़ामे बन्द करबाक कोशिश नादानी हैत। सिवाइराजा वाकइ

शेर अछि। बहादुर अछि। ओकर बहादुरीक हम कायल छी। फौजकेँ रोकू। एकटा बहादुर दुश्मन दिली दोस्तो बनि सकैत अछि।

वजीर : गुस्ताखी माफ हो। जान बकसल जाय। हम किछु नहि बूझि रहल छी गरीब परवर!

सुलतान : जिन्दगी आ मौतक बीचमे कतेक दूरी छैक से अहाँ नहि बुझबैक, वजीर। जखन शेरेदिल सिवाइ राजा चमचमाइत भाला लेने हमर छातीकेँ निशाना बनौने एक-ब-एक हमरा सामने आयल कि हम आतंकित भऽ गेलहुँ। हाथ काँपि गेल आ हाथक तनल तरुआरि खसि पड़ल। मुदा वाहरे सिवाइ राजा! निहत्था पर हथियार नहि चलाबी,शायद सैह सोचि, हमर छाती वा माथा पर वार नहि कऽ बिजलीक तेजीसँ अपन भालाक नोककेँ ऊपर उठा देलक आ हमर माथक ताज भालामे टङने चल गेल।

वजीर : ताज लेने चल गेल ?

सुलतान : ताजक संग हमर मर्दानगीक आवाज लेने चल गेल। वजीर! ओ चाहैत तँ हमरा मारि सकैत छल मुदा हमर ताज लऽ कऽ जिन्दगी देने गेल। जिन्दगी दैयो कऽ मुर्दा बनौने गेल। जँ ताजे चल गेल तँ राजे लऽ कऽ की ?

वजीर : हुजूर खुदावन्द! ई गुलाम, ताजक बदला सिवाइराजाक सिर हुजूरक कदममे हाजिर करत।

सुलतान : (जोरसँ) जुबान बन्द करू वजीर। शेरक संग शराफत कयल जाय। जंग नहि, दोस्ती कयल जाय।

(अतीत वृत्त समाप्त)

विद्यापति : आब कहू, ललिता! हम कोना मानू,कोना कहू जे आब ... नहि, नहि,ललिते! हमरासँ कोनो अनिष्ट सूचक भाषा कहल पार नहि लागत। हम अपना मित्रकेँ ओहिना जीवन्त

राखऽ चाहैत छियनि जेना हम अन्तिम विदा बेरमे देखने छलियनि। ओहिसँ आगाँ किछु नहि, किच्छु नहि।

ललिता : आइ बारह वर्षक अवधि पूर्ण भऽ रहल अछि। अनन्तकाल धरि महादेवीक प्राणकेँ अँटका कऽ नहि राखल जा सकैत अछि।

विद्यापति : हम तँ पुन: आश्वासने दऽ सकैत छी। धैर्य धारण करबाक निवेदन कऽ सकैत छी।

ललिता : धैरज, धैरज, धैरज! ओकरहुँ तँ कतहु सीमा होयतैक? कविवर! अहाँ अपन कल्पनासँ आ हमर संवादसँ महादेवी लखिमाक दशाक अनुमान करैत छियनि हम तँ निरन्तर हुनक संग रहि हुनक अन्तर्व्यथाक सहभागिनी बनलि रहैत छी। महादेवीक प्रशान्त महासागर सन व्यक्तित्वक अन्तः-प्रदेशमे केहन अग्नि धह-धह कऽ रहल छनि से हमहीं बूझि रहल छी। ओकर धाह अहाँकेँ नहि लगैत अछि।

विद्यापति : धाह लगैत अछि। ओहि धाहसँ आकुल प्राण छटपटाइत रहैत अछि, किन्तु हम की करू? ओ राजलक्ष्मीक रक्षाक निमित्त गेलाह आ हम कुललक्ष्मीक रक्षाक देल वचनक निर्वाह कऽ रहल छी।

ललिता : धर्मशास्त्रोक तँ किछु विधान छैक, निर्देश छैक। तकरो पालन नहि कयने प्रत्यवाय होयत? राजाकेँ अयबाक रहितनि तँ आयल रहितथि। गंगासँ लऽ हिमालय धरि हुनक सन्धान भेलनि तथापि ओ नहि भेटलाह। आब रानीकेँ की करबाक चाहियनि से अहीं कहू।

विद्यापति : (चुप्प रहि जाइत छथि)··· ··· ··

ललिता : आजुक ई राति राजाक अलोपित होयबाक बारहम वर्षक अन्तिम राति थिक?

विद्यापति : से थिक।

ललिता : तँ काल्हि अहाँकेँ व्यवस्था देबाक अछि, महारानीक एहन निवेदन छनि।

विद्यापति : हम व्यवस्था नहि दऽ सकब। नहि दऽ सकब। कोनो दोसर निबन्धकार नियोजित होथि।

ललिता : ओइनवार राजकुलक महाराजपण्डित, सट्ठक्कुर विद्यापतिसँ अतिरिक्त ककरा पर महादेवीक आस्था भऽ सकैत छनि ? जनिक आश्वासनक एक एक शब्दकेँ वेदवाक्य मानि महादेवी लखिमा अनुसरण करैत रहलीह, तनिका छोड़ि आन ककरहु व्यवस्था ओ स्वीकार नहि करतीह।

विद्यापति : ललिता! महादेवी लखिमाक आत्मपटल पर प्रतिष्ठित प्रतिमाकेँ, अपन मानस-क्षितिज पर अंकित शिवसिंहक जीबैत रूपाकारकेँ अपनहि ध्वस्त करबाक व्यवस्था देबाक हेतु विवश कयल जाइत छी तँ ·····हम व्यवस्था देब······ हम व्यवस्था देब ······व्यवस्था देब··· ···

(क्रमहि विद्यापति जोर जोरसँ उच्छ्वास छोड़ऽ लगैत छथि। वातावरणमे करुण संगीत भरि जाइछ।)

ललित : कविवर! धैर्य राखू······धैर्य ······ (कहैत ललिता स्वयं सिसकऽ लगैत छथि। नेपथ्यसँ सेहो श्वासोच्छ्वासक संग नारीक सिसकी ओ हिचकीक ध्वनि सुनाइ पड़ऽ लगैत अछि।)



रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

रघुराज	:	आदर्शवादी प्रतिष्ठित प्रोफेसर।
सदानन्द	:	एकटा आफिसक चतुर बड़ाबाबू।
उदय	:	रघुराजक पुरानप्रिय छात्र ओ आदर्शवादी युवक।
आर. आर. शर्मा	:	भ्रष्टाचार-निरोध विभागक अधिकारी।

स्त्री पात्री

जगतारिणी	:	रघुराजक पत्नी।
अर्चना	:	रघुराजक कन्या।

प्रथम दृश्य

[स्थान : चाहक दोकान । चाहक केटली ओ कप-प्लेटक खन-खन ध्वनि । ग्राहकक भीड़-भाड़क वातावरण]

सदानन्द : अओ उदय बाबू ! उदय बाबू ! आउ, आउ । एम्हरे आउ ।

(मौन)

उदय : ओह, सदानन्द बाबू ! हमरा भेल जे के सोर करैत अछि ।

सदानन्द : हम तँ अहींक दुआरेँ एहि ठाम बैसल छलहुँ जे अहाँ तँ एम्हरे दने जायब तँ किछु गम्भीर गप्प करब । आफिसमे गप्प करब ठीक नहि होइत । पहिने चाह पीबू । किछु खायब ?

उदय : न न न । हम तँ चाहो नहि पिबैत छी ।

सदानन्द : होउ, आइ पीबि लिअऽ । अए ! दू कप चाह ओ दू-दू टा विस्कुट ला । (मौन : चाहक कप रखबाक खनखनाहटि) अरे पहिने पानि ला दू ग्लास ।

उदय : सदानन्द बाबू ! कथी लय बजौलहुँ ? ओहिना आफिसमे विलम्ब भऽ जाइत अछि । कनेक बजारमे तरकारी किनबाक अछि । किछु आनो काज सब अछि । (पानिक ग्लास रखबाक ध्वनि । सदानन्द पानि पिबैछ ।)

सदानन्द : उदय बाबू ! अहाँ सदिखन व्यस्ते रहैत छी आ सेहो थैंकलेस जॉबमे । जखन अहाँ किछु लेबे ने करैत छिऐक, तखन फाइल डिस्पोज करबालय एतेक फिरीसान किएक रहैत छी ?

उदय : तेँ तँ सब काज हम जल्दी कऽ लिअऽ चाहैत छी । जखन हमरा किछु लेबेक नहि अछि तँ काजमे देरी किएक करिऔक ? फाइल अँटका कऽ किएक रखिऔक । देरी तँ ओ ने लगबैत छैक जकरा पाटीसँ किछु झाड़बाक रहैक छैक ?

सदानन्द : उदय बाबू ! अहाँ एखन नवलोक छी तेँ पाइकेर महत्त्व नहि बुझैत छिऐक। नहि तँ जेहन टेबुल भेटल अछि, ताहि पर तँ कमा कऽ अमार लगा दितहुँ। मुदा अहाँके बुझाबओ के ? अओ ! जे कमा लेब से कमा लिअऽ। के जानय, फेर एहन मौका हाथ आबय वा नहि।

उदय : बड़ाबाबू ! सब व्यक्तिक अपन-अपन सिद्धान्त आ अपन-अपन जीबाक ढंग होइत छैक। हमर यैह ढंग बूझू। हम तँ कहियो अहाँ सभक पद्धतिक खिधांस नहि कयलहुँ अछि।

सदानन्द : अच्छा, छोड़ू एहि सबके। एकटा सीरियस गप्प अछि।

उदय : कोन सीरियस गप्प अछि ?

सदानन्द : अहाँ रघुराज बाबूके जनैत छियनि।

उदय : जनैत नहि छियनि, पूजा करैत छियनि। ओ हमर गुरु छथि। हमर जीवनक आदर्श छथि। हम जे किछु छी से हुनकहि कृपा सँ, आ जे नहि भऽ सकलहुँ से हमर जिनगीक विवशता छल। मुदा हम हुनक आकांक्षाके अवश्य पूरा करबनि।

सदानन्द : हँ हँ, एहन ब्रिलिएण्ट केरियर सौंसे आफिसमे ककरा छैक ? ई सुसके होमऽवला नहि छैक। अवश्ये कोनो पैघ लोकक वरद-हस्त रहला पर होइत छैक।

उदय : सदानन्द बाबू ! जखन हम छात्र छलहुँ, तँ हिनके एकटा काज लऽ कऽ अहाँक लग गेल छलहुँ। मुदा हम दसटकही नहि देलहुँ, तेँ ओ काज, जे उचिते छलैक, से नहि भऽ सकलनि।

सदानन्द : हमरा तँ ध्यानो पर ने अछि, जे कोन काज छल।

उदय : काजो बड़ साधारण छलैक, तेँ स्मरण नहि हैत। मुदा किछु वर्ष पहिने हम एकटा प्रस्ताव देने रही, से नहि बिसरल हैब।

सदानन्द : कोन प्रस्ताव अओ ?

उदय : सदानन्द बाबू ! रघुराज बाबूक कन्यादानक हेतु अहाँक जेठ बालकक प्रसंगमे अहाँ लग चर्चा कयने छलहुँ।

सदानन्द : ओ तँ ओहिना।अहाँ गप्प उठौने रही। सीरियस तँ नहि छलहुँ।

उदय : हम तँ सीरियसे छलहुँ, मुदा अहूँ कम सीरियस भऽ कऽ जबाब नहि देने रही। बड़ा बाबू ! हम हुनकासँ बिनु पुछनहि अहाँक लग चर्चा उठौने रही। सोचल जे हमरा पड़लासँ गुरुकेँ ई कथा भऽ जयतनि तँ सन्तोष हैत जे कनेकोटा काज तँ हमरासँ भेलनि। मुदा अहाँ तँ दुतकारि देने रही जे—धुत ! ओ मास्टर की देत ? मास्टर सब तँ दलिद्दर होइत अछि। हम आदर्श-फादर्सक फेरमे नहि पड़ब। जे पुष्ट कऽ टाका देत तकरहि ओतऽ कथा करब। हमहूँ जे, बेटाकेँ इंजीनियरी पढ़यबामे जान उपछि कऽ खर्च कयलहुँ अछि, से आदर्श लय नहि।' आ हमर मुँहक बात मुँहेमे रहि गेल छल। आइयो रघुराज बाबू वैह छथि।

सदानन्द : ओह ! ओहि बातकेँ धयनहि छी ! ओ सब तँ भावी होइत छैक। जतऽ भबतब रहैत छैक ततहि होइत छैक। अच्छा, छोड़ू ओहि सबकेँ। एखन अहाँक सहायताक बड़ आवश्यकता अछि। हमर छोटका बेटा मुनटुनक कापी अहींक प्रोफेसर साहेबक लगमे छनि। अहाँ कनेक हुनका लग पैरवी कऽ दितहुँ। हमरा बूझल अछि जे अहाँक पैरवी फेल नहि करत। ओ अहाँकेँ बड़ मानैत छथि।

उदय : बड़ मानैत छथि तेँ ओकर दुरुपयोग करी ? औ बड़ाबाबू ! ई काज हमरासँ नहि हैत। अहाँकेँ नहि बूझल अछि, मुदा हम जनैत छियनि जे रघुराज बाबू कतेक सिद्धान्तक पक्का लोक छथि। ककर साहस छैक जे हुनका लग पैरवी करत ?

सदानन्द : औ ! पैरवी तँ भगवानो लग भऽ सकैत छैक आ आइ-काल्हुक युगमे के पैरवीसँ बाँचल अछि ? सभक पैरवी नहि सुनैत होथुन मुदा अहाँ एक बेर जा कऽ कहियौन तँ। ओना हम सात-आठ टा पैरवी भिड़ा चुकल छी मुदा ओ सब सुतरलैक नहि। अहाँ एक बेर पड़ियौक।

उदय : हम कहलहुँ ने जे हुनका हम देवतुल्य बुझैत छियनि। ई घिनौन काज हमरासँ नहि होयत। बढ़ियाँ हैत जे अहाँ अपनहि हुनका लग जाइ। अहाँक गोटी उफाँटि नहि बैसैत अछि। अच्छा, हम चलो।

सदानन्द : अरे ! बैसू, बैसू। (जोरसँ) रे छौंड़ा ! दू कप और चाह ला।

उदय : नहि, नहि, हम चलैत छी। अच्छा, नमस्कार। (कहैत उदयक प्रस्थान।)

द्वितीय दृश्य

[स्थान . प्रोफेसर रघुराजक आवास। बाहरसँ साइकिलक घंटीक ध्वनि। जूताक खट-खट। केबाड़क जंजीर ढकढकयबाक ध्वनि।

रघुराज : (जोरसँ) केबाड़ खोलू। (केबाड़ खुजबाक ध्वनि) के ? अर्चना ! (मौन) सौभाग्यवती रहू ! (व्यग्र स्वरमे) कुशल-मंगल ठीक ने ?

अर्चना : हँ बाबूजी ! सब बड़ बढ़ियाँ।

रघुराज : समधि-समधिन निके छथि ?

अर्चना : सब निके छथि।

रघुराज : (आश्चर्यमँ) अयबाक कोनो तेयार तँ नहि छल ? कोनो सूचना सेहो नहि छल, तखन एना अकस्मात् ? की भेल अछि ओहि ठाम ?

अर्चना : कोनो तेहन बात नहि बाबूजी ! अहाँ अनेरे चिन्ता करऽ लगैत छी। अयबाक मोन भेल तेँ चल अयलहुँ।

रघुराज : एना तँ अहाँ नहि अबैत छलहुँ ! अयबेक छल तँ समाद पठा दितहुँ, केओ जा कऽ लऽ अनितय।

अर्चना : बापरे ! बाबूजी, अहाँ तँ गप्पके तेना भरिया दैत छिऐक जे अनको मोन घबरा जयतैक। (हँसैत) हम मायके पठा दैत

छिऐक। वैह सब बात बुझा देत। (भीतर जाइत) गय माय! बाबूजी लय चाह लेने अबहुन।

(मौन)

जगतारिणी : (प्रवेश करैत) हऽ हऽ हऽ! अहूँ बातकेँ कते चीरऽ लगैत छी? बेटी माय-बापक घर एतै तँ दिने तका कऽ? आबिए गेलै तँ की भऽ गेलै?

रघुराज : भेलै नै किछु, मुदा अकस्मात्… …

जगतारिणी : तँ की एकबारमे खबरि छपबा कऽ अबितै?

रघुराज : अच्छा हे जगतारनि! बात एत्तहि खतम करू।

जगतारिणी : किछु जलखै करब, की सोझे चाह पीब?

रघुराज : जे इच्छा हो, जेहन कृपा हो। आइ तँ बेटी अइलीह अछि अहाँक। किच्छु तँ सनेस अननहि होइतीह। समधिनि छुच्छे तँ नहिएँ पठौने होयथिन। ओहीमेसँ लाउ किछु।

जगतारिणी : अहाँकेँ सदिखन मोटरीए-पोटरी पर ध्यान रहैत अछि। अर्चना समधिनिक हुकुमसँ नहि, समधिक हुकुमसँ आइलि अछि।

रघुराज : (आश्चर्यसँ) समधि पठौलथिन अछि? किएक? विचित्रे बात अछि!

जगतारिणी : समधि चिट्ठी पठौलनि अछि। की गछने छलियनि आ नहि देलियनि, से जानी अहाँ। पुतोहुकेँ पठौलनि अछि असूलि अनबाक लेल।

रघुराज : (गोंहछल स्वरमे) हम किछु नहि गछने छलियनि। आ जँ किछु कमी रहि गेलनि तँ आब मोन पड़लनि अछि? समधियो खूब छथि।

जगतारिणी : हम आनिए दैत छी चिट्ठी, तावत अहाँ कपड़ा बदलू। (लघु मौन) हे लिअऽ चिट्ठी।

रघुराज : लाउ तँ। (लिफाफ फाड़बाक ओ कागत फड़फड़यबाक ध्वनि। रघुराज बाजि कऽ चिट्ठी पढ़ैत छथि।)

आजी, स्वस्ति। मान्यवर समधि महोदय! सप्रेम नमस्कार! आगां कुशलात् कुशल। अन्य समाचार उत्तम। कनियांके अनवधानमे पहुँचल देखि चिन्ता नहि करब। समाजमे रहने बहुत काज अनिच्छासँ सेहो करऽ पड़ैत छैक। तेँ विवशतामे कनियांकेँ पठौलियनि अछि। वैह सब बात कहि देतीह। अपनेकेँ कोनो बाध्यता नहि अछि। इति।

अहींक समधि

जगतारिणी : आब एकर अर्थ बूझू अपन बेटीसँ। हम जाइत छी।

(जाइत अछि। पद चाप)

अर्चना : (प्रवेश कऽ) बाबूजी, चाह।

रघुराज : बेटी! समधि की लिखलनि अछि? किछु नहि बाबूजी! केदन सब आबि कऽ अहाँक ओहि ठाम कापीक पैरवी करबा लय धड़पड़नियाँ दऽ देलकनि। तखन हारि कऽ हमरा कहबौलनि जे समधि सिद्धान्तवादी लोक छथि तेँ हमर जायब उचित नहि। यैह जाथु, जाहिसँ एहि ठामक लोककेँ मनस्तोष भऽ जाइनि जे हम पैरवी कऽ देलियनि। बस, एतबे बात।

रघुराज : बऽस? अरे दू-चारि नम्बर बढ़ा देब कोन तेहन बात भेलैक! ई तँ समादो पठा दितथि तँ भऽ जैतनि। मुदा खैर, एहि लाथेँ अहाँ तँ अयलहुँ।

अर्चना : बाबूजी! मुदा हमरा बड़ बेसी जोर देबासँ मना कऽ देने छथि। उपरके मनसँ हमरा पठौने छथि।

रघुराज : तैयो, जखन समधि समाद पठौलनि अछि तँ हुनक सम्मान होयबेक चाहियनि। रौलनम्बर की छैक ओकर?

अर्चना : बड़कीटा रौलनम्बर छैक। लिखल छैक। लेने अबैत छी। (मौन) हे, यैह लियऽ।

रघुराज : लाउ तँ, (मौन) अरे! एहि रौल नम्बर लय तँ एक दर्जनसँ ऊपर पैरवी पहुँचि चुकल अछि। ई तँ बड़ा जालिया लोकक पैरवी लगैत अछि।

अर्चना : से तेहने लोकक पैरवी थिकैक बाबूजी !

जगतारिणी : (प्रवेश कऽ) की ततमतमे पड़ल छी ? पहिने एक गिलास सतुआ पीबि लियऽ। मोन ठंढा भऽ जायत तखन विचार करब।

रघुराज : लाउ। (गिलास लऽ कऽ पीबाक स्वर)

जगतारिणी : अहाँक समधिक ममियौतक मसियौतक पितियौतक पैरवी छियनि। बड़ लगक सम्बन्ध छनि। अहूँक सम्बन्धीए भेलाह। अर्चनाक ससूरे भेलथिन तेँ अहाँक समधि भेलाह।

अर्चना : ई सब आबि कऽ तीन दिन डेरा खसा देलथिन। पैरवी कैनिहारक दू गोट बेटा इंजीनियरी पढ़ैत छथिन। तेसर बेटा सेहो इंजीनियरे बनथिन। से नहि भेला पर बेटा जहर-माहुर खा लेथिन।

रघुराज : एहि रौल नम्बरक कापी देखने छलिऐक। ई तँ किछु ने लिखने छैक। दू टा सादा कापी सेहो जोड़ल छैक आ नम्बर अयलैक अछि भगवानेक देल। ई तँ भुसकौलक टाड़ी छैक। इंजीनियरिंगमे कोना जयतैक ?

अर्चना : डोनेशनसँ। पहिलो दुनू एहिना गेल छनि।

रघुराज : मत्तोराभलाकेँ ! ई तँ आनो पेपर सबमे एहने नम्बर अनने हैतैक।

अर्चना : सब ठाम पैरवी सुतरि गेलनि। अहींक लगमे गड़बड़ायल छनि।

रघुराज : बेटी, अहाँ कहब जे हमर ससूरक एकटा पैरवी नहि सूनि रहल छथि। देखिए लियऽ। (पत्नीसँ) हे अए ! कनेक रैक परसँ पैकेट लाउ तँ।

जगतारिणी : चल अर्चना, अपनेसँ आनि कऽ दहुन। (दुहू जाइत अछि।)

(मौन)

अर्चना : (प्रवेश कऽ) बाबूजी ! लियऽ पैकेट। (पैकेट पटकबाक ध्वनि)

रघुराज : हे…(मौन)…यैह देखू ओ कापी।

अर्चना : (मौन) एकरा तँ नओ नम्बर छैक !

रघुराज : भीतर उनटा कऽ देखियौक। अहूँ तँ बी एस-सी. छी ने। अपनो बूझि जयबैक।

अर्चना : (पन्ना उनटबैत) ए छिया ! एकरा तँ इहो नम्बर फाजिले छैक ! जाहिमे सुन्ना अबितैक ताहूमे दू, एक, आधा नम्बर देने छिऐक।

रघुराज : आ ताहि परसँ एकर पैरवी हमरा जान पर कऽ देने अछि।

अर्चना : एकर इहो नम्बर काटि लियऽ। एहने भुसकौल, पाइ आ पैरवीक बल पर इंजीनियर-डाक्टर बनि कऽ देश ओ समाजक सत्यानाश करतैक।

रघुराज : हम अपनेसँ जा कऽ समधिसँ भेट करबनि आ माफी माङि लेबनि।

अर्चना : हुनका सब बात बूझल छनि। अहाँके जयबाक काज नहि अछि। (बाहरसँ केबाड़ खटखटयबाक ध्वनि।)

रघुराज : अर्चना ! अहाँ जाउ, माँसँ गप्प करू गऽ। (जोरसँ) के छी, चल आउ। (केबाड़ खुजबाक ध्वनि। सदानन्दक प्रवेश।)

सदानन्द : नमस्कार प्रोफेसर साहेब।

रघुराज : नमस्कार, आउ, बैसू।

सदानन्द : हे, ई मधूर छै बच्चा सब लय।

रघुराज : एहि ठाम छोट बच्चा केओ नहि अछि जे मधूरसँ प्रसन्न हैत। अहाँसँ तँ हमरा कोनो परिचय नहि अछि, तखन ई मधूरक पतौड़ा किएक ?

सदानन्द : (कठहँसी हँसैत) हें हें हें हें ! प्रोफेसर साहेब ! हमहूँ सम्बन्धीए छी।

रघुराज : हैब, हम तँ एखने सूनि-बूझि रहल छी।

सदानन्द : हमर पितियौतक मसियौतक पिसियौत अपनेक समधि थिकाह। हमर नाम थिक सदानन्द। हम··· ··

रघुराज : अच्छा, अच्छा ! तखन तँ बड़ लगक सम्बन्ध अछि। प्रयोजन कहू।

सदानन्द : अपनेक बड़ नाम-यश अछि

रघुराज : खुंखार, खन्नास, खबीस छी, यैह ने ?

सदानन्द : नहि, नहि। ई की कहैत छी ? अपने सन लोक तँ अपन समाजक शिरमौर छी। समाजक गौरव छी।

रघुराज : अहाँ अपन प्रयोजन किएक ने कहैत छी ?

सदानन्द : अपनेसँ कहैत संकोच होइत अछि मुदा उद्धारो तँ अपनहि कऽ सकैत छी। अपने तँ अपन लोक छी। हमर बालकक भविष्य अपनहिक हाथमे अछि। अपनेक लगमे हुनक एकटा कापी छनि। ओना छथि बड़ मेधावी। आन पेपरमे नम्बरो बड़ बढ़ियाँ छनि से पता लागल अछि। एही पेपरमे कनेक अस्वस्थ भऽ गेल छलाह। आब अपनहिक हाथ-बाट। हे, यैह रौल-नम्बर छनि।

रघुराज : रौलनम्बर देबाक काज नहि। ई हमरा आब कंठस्थ भऽ गेल अछि। एकरा हम की बिसरि सकैत छी ? के हमर इष्ट-मित्र, सर-सम्बन्धी, आप्त-परिचित, स्वजन-परिजन बाँचल अछि जकरा माध्यमे अहाँक पैरवी नहि पहुँचल हो। एते धरि जे हमर समधि ओ बेटी पर्यन्तकेँ अपन पैरवीमे झोंकि देलहुँ।

सदानन्द : कनियाँ अइलीह अछि ? जय भगवती !

रघुराज : अहाँक भगवतीक कृपा रहल, तँ अहाँ हमरा सबसँ मनोमालिन्य करा कऽ छोड़ब। सम्बन्ध तोड़ा कऽ छोड़ब।

सदानन्द : रघुराज बाबू ! आर्त्त भऽ कऽ लोक ककर-ककर ने आश्रय लैत अछि।

रघुराज : हमरासँ उचितक परित्याग आ अनुचित काज सम्भव नहि अछि।

सदानन्द : अवश्य, अवश्य। यैह होयबेक चाही।

रघुराज : मुदा तखन तँ परिणाम यैह होयत जे सबसँ अपेक्षितारय छूटि जायत। (आवेशमे आबि) एखने अहाँक बेटाक कापी बाहर कयने छलहुँ। (मौन) हे लियऽ अपन राजकुमारक कापी।

(कापी फेकबाक ध्वनि) देखू जे एकरा के पास करा सकैत अछि। अहाँ तँ पास नहि, अस्सी, पचासी नब्बे अंक चाहैत होयब। देखियौ जे कतऽ नम्बर औतैक ?

सदानन्द : हम की देखबैक. अपने चाहबैक तँ सब भऽ जयतैक। हम सतत सेवामे हाजिर छी। अपनेक आदेश हो तँ गोटेक दिन विद्यार्थियोकेँ लेने अबियनि।

रघुराज : सदानन्द जी ! अहाँ हमरा कीनऽ चाहैत छी, सैह ने ! एही दुआरेँ अहाँक विद्यार्थी दू टा अतिरिक्त सादा कापी जोड़ि देने अछि जे एहि ठाम ओकरासँ प्रश्नोत्तर लिखबा कऽ कापी भरि देल जाय आ शत प्रतिशत नम्बर दिया लेल जाय ! अहाँ लोकनि अपने तँ भ्रष्टाचारमे डूबले छी मुदा जे बचऽ चाहैत अछि तकरो कण्ठ पकड़ि कऽ डुबबऽ चाहैत छिऐक।

सदानन्द : ई सब तँ होइते छैक प्रोफेसर साहेब ! सब ठाम पैरवी चलैत छैक। एहिमे कोनो दोष नहि छैक। जे उपकार करय तकर प्रतिदान दिऐक। हमरा योग्य जे सेवा हैत से करब। अपने आश्वस्त रही। कतहु कानो-कान खबरि नहि होयतैक।

रघुराज : खबरदार। जे बजलहुँ से बजलहुँ। आगाँ नहि बाजब। अहाँ चट्टानसँ टकराय अयलहुँ अछि। यदि एतेक गोटेक पैरवी नहि रहितय तँ हम किछु कऽ बैसितहुँ। उठाउ अपन पतौड़ा आ जाउ एतऽसँ। जाउ। हम कहैत छी, जाउ।

सदादन्द : जाइ छी सर ! एखन अपने आवेशमे आबि गेल छी। शान्त भेला पर सोचबैक। एकटा बच्चाक भविष्य अपनेक हाथमे अछि। (जाइत-जाइत) अच्छा, प्रणाम! हम पुनः दर्शन करब।

रघुराज : ई पतौड़ा ककरा लय छोड़ने छी ? लऽ जाउ अपन सनेस।

सदानन्द : हेँ हेँ हेँ ! प्रोफेसर साहेब ! लऽ अनलिऐ तँ आब रहऽ दियौ। कनिञा छथि, हुनकहि लेल ई मधूर बुझियौन।

रघुराज : कनिञाके मधूर देबाक अछि तँ हुनका सासुरमे देबनि। एहि ठाम नहि। उठाउ, उठाउ। (तिक्ख स्वरमे) पतौड़ा उठबैत छी की नहि ?

सदानन्द : (मन्द स्वरमे) रंज नहि होउ सर ! हम लेने जाइत छी।

(जयबाक पदचापक ध्वनि।)

तृतीय दृश्य

[स्थान : वैह चाहक दोकान]

सदानन्द : उदय बाबू ! एम्हरे आउ ।

उदय : के ? बड़ाबाबू ! (लग अबैत) की हालचाल ? आइ फेर चाहक दोकान पर बजौलहुँ अछि ?

सदानन्द : एकटा खुशीक समाचार । अहाँ रघुराज बाबू ओतऽ नहि गेलहुँ मुदा हमर काज भऽ गेल ।

उदय : (आश्चर्य) भऽ गेल ।

सदानन्द : भेले बूझू आब ।

उदय : असम्भव सदानन्द बाबू ! ई एकदम असम्भव अछि ।

सदानन्द । सब सम्भव छैक उदय बाबू ! आइ-काल्हुक युगमे सब सम्भव छैक । असम्भव किछु ने ।

उदय : हमरा विश्वास नहि अछि ।

सदानन्द : विश्वास करऽ पड़त । मुद्रा-मेनकाक घुघरूक झंकार सूनि कऽ बड़ बड़ ऋषि-मुनिक तपोभंग भऽ जाइत छनि । अहूँक गुरुदेव प्रोफेसर रघुराज बड़ा चट्टान बनैत छलाह मुदा धाह लगैत देरी मोम जकाँ पघीलि गेलाह ।

उदय : विश्वास हमरा नहि होइत अछि मुदा अहाँ कहैत छी जे ओ अहाँक रैरवी मानि गेलाह तँ हमरो मानहि पड़त । बड़ खुसीक गप्प जे अहाँक काज भऽ गेल ।

सदानन्द : से ओना नहि भेल अछि, उदय बाबू ! अहाँक प्रोफेसर अछि धरि बड़ खन्नास आ घाघ । पहिल दिन तँ मारलक नहि, आर सब दशा कऽ देलक । बूझू, ठोँठिया कऽ बैला देलक ।

उदय : मुदा हुनको घैहरेसँ भेंट भेल छलनि ।

सदानन्द : हमहूँ छोड़ल नहि। घरहेर कऽ देल। साँझ-प्रात केबाड़ ढकढकाबऽ लगलहुँ। गोहरबैत-गोहरबैत अन्ततः ढील भेए गेलाह। बहिरा साप झाड़ सुनलक।

उदय : कोना ढील भेलाह से कहू।

सदानन्द : ततेक पंरवी भिड़ा देने छलियनि जे अकबक बन्द भऽ गेलनि। मुदा हम साफ-साफ कहलियनि अहाँ जे कहब से हम सेवामे हाजिर कऽ देब। अहाँ, एकबेर कहू तँ। आ टाकाक थाह तँ होइते छैक तेहने। (हँसैत) हे औ उदय बाबू! कोनो कोनो दरब भट्टीमे देरीसँ पघिलैत छैक मुदा पघिलैत छैक जरूर।

उदय : अवश्ये अहाँक लेल किछु असम्भव नहि अछि से मानि लेलहुँ।

सदानन्द : उदय बाबू! तेँ हम कहैत रहैत छी जे टाकासँ बढ़ि कऽ सिद्धान्त-फिद्धान्त किछु नहि छैक। अहाँक प्रोफेसरक सिद्धान्त घुसरि गेल। कािल्ह काज लय बजौलनि अछि। एखन किछु टाकाक इन्तजाम कऽ लेबाक अछि तेँ चलैत छी। कािल्ह साँझमे हमरा दिससँ मधूर रहत। नमस्कार। (जाइछ।)

उदय : हे भगवान्! पवित्रताक मन्दिर एहिना ढहैत छैक? गुरुदेव एतेक खसि पड़लाह! एतेक भठि गेलाह?

चतुर्थ दृश्य

[स्थान : रघुराजक आवास। समय : पहर राति। झिंगुरक ध्वनि। सुनहटक आभास]

उदय : यैह छियनि गुरुदेवक डेरा, जकरा हम सरस्वतीक मन्दिर बुझैत छलहुँ। एहिमे पापक प्रवेश भऽ गेल। जाहि ठामक धूरा-माँटि चानन जकाँ कपारमे लगबैत छलहुँ, से दुर्गन्धसँ भरि गेल। सरस्वतीक वीणाक झंकारकेँ मुद्राक खनखनी मन्द कऽ देलक। बन्द कऽ देलक। हम कतऽ चल अयलहुँ? हम कतऽ चल अयलहुँ? चलीं, घूमि चलीं। (मौन) मुदा हमर आत्मा

नहि मानि रहल अछि। एक बेर, अन्तिम बेर, अपन पूज्य गुरुदेवक दर्शन मात्र कऽ ली। (मौन) हुनकर पढ़बाक कोठलीमे इजोत देखि पड़ैत अछि। प्रायः ओ जगले छथि, पढ़ि रहल छथि।

(मौन। केबाड़ खटखटयबाक स्वर)

रघुराज : (भीतरेसँ) के छी ?

उदय : हम छी, गुरुदेव ! अपनेक शिष्य।

रघुराज : (केबाड़ खोलैत) के ? उदय ? एत्ती राति कऽ ? आउ, भीतर आउ। (मौन। केबाड़ लगयबाक ध्वनि) बैसू। कहू, कोना अयलहुँ ? बड़ उद्विग्न लगैत छी ?

उदय : जी गुरुदेव ! आइ हम बड़ उद्विग्न भऽ गेल छी।

रघुराज : किएक ? की भेल अछि ?

उदय : हम एकटा स्वप्न देखलहुँ अछि।

रघुराज : आ तेँ उद्विग्न भऽ गेलहुँ।

उदय : बड़ उद्वेगजनक स्वप्न छल।

रघुराज : की स्वप्न छल ?

उदय : गुरुदेव ! स्वप्नमे देखलहुँ जे महादेव ध्यानमग्न छथि आ हुनक ध्यान भंग करबाक लेल कामदेव अपन पुष्पवाण तनने छथि। अप्सरागण महादेवक चारू कात हाव-भाव-विलास पूर्वक नृत्य कऽ रहल अछि। अकस्मात् महादेवक ध्यान भंग भऽ जाइत छनि। आँखि उन्मीलित होइत छनि·········

रघुराज : आ तृतीय नेत्रसँ बहरायल ज्वालामे कामदेव भस्म भऽ···

उदय : नहि गुरुदेव ! से नहि भेलैक।

रघुराज : तखन ?

उदय : महादेव विस्मित नहि होइत छथि। स्मित मुख भऽ ओहि अप्सराक आलिंगन करबाक लेल उद्यत भऽ अपन बाहु युगल पसारि दैत छथि।

रघुराज : उदय ! स्वप्नक कथाक उत्तर खंड अहाँक मनक भ्रमसँ उद्भूत अछि। भ्रमक की कारण अछि ?

उदय : गुरुदेव ! हम एकटा देवप्रतिमाकेँ आराध्य देवता बनौने छी।

रघुराज : हम जनैत छी जे अहाँ आस्थावान् ओ आस्तिक लोक छी। आस्था ओ विश्वासक विना केओ चरित्रवान् नहि भऽ सकैत अछि।

उदय : आइ साँझमे देखल जे ओ देवप्रतिमा चनकि गेल अछि। लगैत अछि, ओहि प्रतिमाक चनकबाक संगहि हमर आस्था, विश्वास, श्रद्धा, भक्ति –सब जेना छिन्न-भिन्न भऽ रहल अछि। हम विचलित भऽ गेल छी। हमर उद्विग्नता, व्यग्रता, चंचलता ओ भ्रमक यैह कारण अछि।

रघुराज : आश्चर्यक विषय जे ई अकारण कोना भऽ गेल ?

उदय : भग्न देवप्रतिमाक पूजा निषिद्ध छैक। आब हम ककर पूजा करब ? गुरुदेव ? ककर पूजा करब ? ककरासँ जीवनक प्रेरणा लेब ? चारू कात पसरल रौरव-गन्धमय वातावरणमे तन-मन-जीवनकेँ निर्मल रखबाक साहस कतऽ सँ भेटत ? अहीं कहू, गुरुदेव ! कतऽसँ भेटत ?

रघुराज : अहाँ बड़ भावुक भऽ जाइत छी। सामान्य सन बातलय एतेक भावावेगमे भासि जायब ठीक नहि। देवप्रतिमा चनकि गेल तँ ओकरा श्रद्धापूर्वक जल-प्रवाह कऽ दियौक आ एकटा ओहने प्रतिमा आनि कऽ ओकर प्राण-प्रतिष्ठा कऽ दियौक।

उदय : ओ देवप्रतिमा कीनल नहि जा सकैत अछि। ओ दुर्लभ अछि, अलभ्य अछि, अपरिवर्त्तनीय अछि। आ जे-से पाथर वा माटिक मूरुतमे प्राण-प्रतिष्ठा करब सम्भव छैक ? आ तहिना असम्भव अछि ओहि चनकल देवप्रतिमाकेँ जलमे भसा देब।

रघुराज : किएक असम्भव अछि ? कहाँ अछि ओ प्रतिमा ? लाउ, हमही भसा देब।

उदय : अपने भसा देबैक ? अपने सँ हैत ? जँ हैत तँ लियऽ, हमर आराध्य देवक चनकल प्रतिमा हमरा सामनेमे उपस्थित अछि। हमरासँ बात कऽ रहल अछि। भसाउ ओकरा। मुदा आब किछु नहि। ओकर तेजोमय प्राण तँ अथाह सागरमे डूबि गेल।

रघुराज : अहाँ की कहि रहल छी उदय ? अहाँक ई रहस्यमय प्रलापक अर्थ हमरा नहि लागि रहल अछि। स्पष्ट बुझाउ।

उदय : स्पष्ट बुझाउ ? की सदानन्दबाबूक पैरवी सुनलिऐक अछि ?

रघुराज : हूँ ! तेँ अहाँ एत्तेक उत्तेजित छी। आब बूझल। उदय ! हमर परिस्थितिकेँ बुझबाक चेष्टा करू। ई व्यक्ति हमर शान्ति समाप्त कऽ देलक अछि। दिन-राति आबि कऽ दरबज्जा छेकने रहैत अछि। हमर जतेक मित्र, परिचित, कुटुम्ब, सम्बन्धी छथि, सबकेँ हमरा पाछाँ लगा देलक अछि। पता नहि अहाँ कोना छूटि गेलिऐक ओकरा नजरिसँ ! केवल अहींटा रहि गेल छी ओकर पैरवी करबाक लेल। समाजमे रहि कऽ हम कतेक लोकके अपन वैरी बनाउ ? जँ समाजे हमरा भ्रष्ट आ पतित बनयबा पर तुलल अछि तँ हम की करू ? उदय, हमर विवशताकेँ बूझू।

उदय : सर, दू-चारि नम्बर बढ़ाइए देबैक तँ ओहिसँ कोनो आकाश नहि खसि पड़तैक। जँ विवश छी तँ से कऽ दियौक, मुदा... मुदा

रघुराज : मुदा की उदय ? साफ-साफ बाजू। अहाँक चनकल प्रतिमा अहाँक सब शंकाक समाधान करताह।

उदय : ओहि पतितसँ टाका लऽ कऽ नम्बर बढ़यबैक, तँ एकरा हम हिमालयक ढहब बुझैत छिऐक। की अपनेक आत्मा एकरा स्वीकार करैत अछि ?

रघुराज : नहि स्वीकार करैत अछि। मुदा भ्रष्ट बनबाक लेल, कुकृत्य करबाक लेल कण्ठ मोकल जा रहल अछि तँ किएक ने एकरा स्वीकार कऽ ली ? परीक्षाक पैरवीक महत्त्व एक खिल्ली पानसँ बेसी नहि होइत छैक। व्रत-भंग जँ भेए रहल अछि तँ एक दाना आ एक थारीमे की अन्तर छैक ? अनैतिक कार्य जँ करबेक अछि, भ्रष्ट बनबेक अछि तँ ओकर अधिकतम मूल्य किएक ने लेल जाय ? ग्लेसियर जखन पघिलैत छैक तँ ओकर तरल रूपक अध:पतन ओही बाट दऽ कऽ होइत छैक, पतनक जे बाट पहिनेसँ बनल छैक।

उदय : भऽ गेल सर, भऽ गेल। हम अधिक नहि सुनि सकब। निर्मल दर्पण धुन्ध भऽ गेल। आदर्श पर कारिख पोता गेल। हम जाइत छी, गुरुदेव! हम जाइत छी। हमर देवमन्दिर ढहि गेल। हमर देवप्रतिमा चनकि कऽ फूटि गेल। श्रद्धा-मूर्त्ति चूर-चूर भऽ गेल।

रघुराज : जाइत जाइत आइ अहाँ प्रणाम नहि करब? नहि करू। मुदा हम आशीर्वाद देब जे अहाँ अपन आदर्शसँ विचलित नहि होइ। अहाँक सिद्धान्त अविचल रहय। अहाँक चरित्र निष्कलुष रहय आ अनका लेल अहाँ पूज्य प्रतिमा बनी।

उदय : हम कोना कहू गुरुदेव जे एहि आशीर्वादिमे आब कोनो शक्ति नहि रहि गेल अछि। हमर स्वप्न सत्यापित भऽ गेल। महादेवक तपोभंग भेलनि ओ अप्सराक आलिंगन कयलनि।

रघुराज : नहि उदय, महादेवक ध्यान भंग भेला पर हुनक तेसर नेत्रसँ घनघोर ज्वाला बहरायल छल जाहिमे कामदेव भस्म भऽ गेल छलाह।

उदय : हमर विश्वास टूटि गेल। (स्वर क्रमशः दूर होइत जाइछ) हमर विश्वास टूटि गेल। विश्वास टूटि गेल। टूटि गेल। टूटि गेल।

पञ्चम दृश्य

[स्थान : रघुराजक आवास]

सदानन्द : (बाहरसँ सोर करैत) प्रोफेसर साहेब छथि ?

रघुराज : (भीतरसँ) के छी ?

सदानन्द : हम, सदानन्द।

रघुराज : चल आउ। (मौन)

सदानन्द : प्रणाम सर !

रघुराज : आउ, बैसू।

सदानन्द : ई ? ई के थिकाह ? हिनक परिचय ?

रघुराज : इहो आन लोक नहि छथि। जाहि काजलय अहाँ आयल छी ताही लय इहो आयल छथि। अहींक काजसँ हिनको काज भऽ जयतनि। मुदा अहाँक संग ओ के आयल छथि ?

सदानन्द : यैह हमर बालक छथि। संग लेने अयलियनि जे संभव कोनो काज पड़ि जाय।

रघुराज : से भेला पर अहाँ बजबा लेबनि। एखन जाय कहियौन।

सदानन्द : बड़ वेश (जोरसँ) मुनटुन ! अहाँ डेरा जाउ।

रघुराज : हँ कहू, सदानन्द बाबू ! की कहैत छी ?

सदानन्द : आब हमर बालकक भविष्य बना दियौन। आर की कहब ?

रघुराज : सदानन्द बाबू ! अहाँ पैरवीमे दिन-राति एक कऽ देलहुँ। हम सब दिनसँ सिद्धान्तवादी लोक रहलहुँ अछि, जे हम बेर-बेर कहि चुकल छी। मुदा अहाँ अपन स्वार्थक चलते हमरा चारू कातसँ घेरि कऽ विवश कऽ देलहुँ अछि। अहीं सोचू, अहाँक खातिर वा ककरो खातिर हम कदाचार किएक करू ? हमरा विचारेँ अहाँ अपना बालकके अगिला वर्ष नीक जकाँ तैयारी करा कऽ परीक्षा दियबियौन। एहीसँ भविष्य बनतनि। एहि साल नहि, अगिला साल; एहिसँ कोन अन्तर पड़ैत छैक ?

सदानन्द : नहि रघुराज बाबू ! आब से सब नहि कहल जाओ। हमरो अपनेक ओहि ठाम बड़ तपस्या करऽ पड़ल अछि। आब ओकरा सफल बनबियौक।

रघुराज : अहीं कहू। अहाँक लेल हम की करू ?

सदानन्द : सर ! हम पाँच सय टाका धिया-पुताके मधूर खयबाक लेल देबनि। मुदा हमरो सर्वोत्तम अंक भेटबाक चाही।

रघुराज : सदानन्द बाबू ! नओके नब्बे बनबाबऽ चाहैत छी आ पाँच सय हमर ईमानक दाम लगबैत छी ? एही दाममे आनो ठाम काज भेल अछि की ?

सदानन्द : अहाँ ठीके बुझलिऐ सर।

रघुराज : अनका लेल ई प्रसन्नताक बात भेल हेतैक मुदा हमरा लेल नहि। ईमाने हमर जीवनक सबसँ पैघ सम्पत्ति रहल अछि तकरा हम पाँच सयमे बेचि दियऽ ? हम एहि अप्रिय प्रसंगकेँ टारऽ चाहैत छी। जे कहियो नहि कयल, से नहि करऽ पड़य तँ उत्तम। हमरा जे किछु करऽ पड़त ताहिलय कतेक मानसिक पीड़ा भऽ रहल अछि आ बादोमे होइत रहत तकर अनुमान अहाँकेँ नहि अछि। चारू कातसँ लोक हमरा दूर छी करत। हम एक बेर फेर कहब जे अहाँ अपन जिद्द छोड़ि दियऽ।

सदानन्द : प्रोफेसर साहेब ! आब बहुत भऽ गेल। बेसी नहि टारियौ ! अहाँ हमर उपकार करब तँ हमहूँ पाछाँ नहि रहब। अहूँकेँ बूझि पड़त जे कोनो जिबटगर लोकसँ भेंट भेल छल।

रघुराज : तखन जे विचार हो से करू।

सदानन्द : रघुराज बाबू ! हम बेसी छिल्लनि नहि करऽ चाहैत छी। सोझ-सोझ एकेबेर ई (मौन) पाँच हजार टाका अपनेक सेवामे हाजिर अछि। आब शुभस्य शीघ्रम्।

आर.शर्मा : थम्हू सदानन्द बाबू। हम छी आर. आर. शर्मा अर्थात् रेवतीरमण शर्मा। भ्रष्टाचार निरोध विभागक अधिकारी छी तकर ई परिचय-पत्र थिक। प्रोफेसर रघुराजकेँ घूसक प्रलोभन देबाक ओ पाँच हजार टाका घूस देबाक चेष्टा करबाक अपराधमे गिरफ्तार कयल जाइत छी।

सदानन्द : रघुराज बाबू ! ई की ? एना धोखा देब !

रघुराज : हमरा कोनो रास्ता नहि रहि गेल छल अहाँसँ मुक्ति पयबाक लेल।

सदानन्द : शर्मा जी ! हम निर्दोष छी। ई टाका रघुराज बाबूक पैंच ···

रघुराज : सदानन्द जी ! हम ने पैंच मङने छलहुँ ने देने छलहुँ। ई टाका सर्वैकत्वेन अहींक थिक।

आर.शर्मा : सदानन्द जी ! अहाँक वार्त्तालापक सौंसे टेपरेकर्ड भऽ गेल अछि। खिड़कीक पाछाँ ठाढ़ हमर फोटोग्राफर अहाँक टाका

देबाक फोटो लऽ लेने अछि। आ नवका पचसटकही नोटक थाकक नम्बर बैंकमे अहाँक चेक पर नोटेड अछि। (जीपक हॉर्न सूनि पड़ैछ) बाहरमे जीप अहाँक प्रतीक्षामे ठाढ़ अछि।

सदानन्द : रघुराज बाबू ! अहाँकें एना नहि करबाक चाही। अहाँ ठीके खुंखार छी, राक्षस छी।

रघुराज : सदानन्द जी ! अपने अध:पतित छी, तँ रहू। मुदा जे बचऽ चाहैत अछि ओकरा पतनक गर्त्तमे नहि घिचियौक। ओकरा भ्रष्ट बनबाक लेल विवश नहि करियौ। रहऽ दियौ गंगाकें निर्मल, ओकरा प्रदूषित नहि करियौक।

आर.शर्मा : अच्छा। रघुराज बाबू ! धन्यवाद।

(लघु मौन)

(जीपक हार्न बजबाक ध्वनि। जीपक स्टार्ट भऽ कऽ दूर चल जयबाक ध्वनि होइत अछि।)



दुलारक भूख

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

जगदीश	:	विचारक परिपक्व परोपकारी लोक।
सूरति	:	जगदीशक मित्र।
लालन	:	एकटा ग्रामीण।
संन्यासी	:	जगदीशक स्वप्नमे देखल महात्मा।

स्त्री पात्र

पार्वती	:	जगदीशक पत्नी।
पोखरामवाली	:	सूरतिक पत्नी।

Scanned by CamScanner

प्रथम दृश्य

[स्थान : जगदीशक विश्राम कक्ष । समय : रवि दिनक बेरुक पहर । जगदीश सूतल अछि । ओकर पत्नी ओकरा उठयबाक चेष्टा करैछ]

पार्वती : अय! सुनै छी नै ? भरि दिन सुतले रहब आ कि उठबो करब (मौन) यौ, उठू ने ! कहू तँ, सौंसे दिन बीति गेलै, आब घड़ी पहरमे साँझ पड़तै आ अहाँ काने-बात ने दै छी ।

जगदीश : ओहो ! एक दुपहरियासँ जे अहाँ भूकऽ लगलौं से एको बेर मुँह किएक बन्द होयत अहाँकेँ । हमरा निन्नसँ अहाँकेँ कोन अक्खज अछि से नहि कहि । बूझि पड़ै अछि, जेना हमर निन्न आ अहाँ दुनू एकपिठिया होइ । अरे! रवियो कऽ तँ भरि पोख सूतऽ दियऽ !

पार्वती : तँ कि ने ! रवि सूतैए लय होइ छै, आर कथू लय ने ।

जगदीश : तँ की करू ? उठि कऽ, पानि डेङाउ ? नै, कही तँ अहाँक माथक ढील हेरि दी ।

पार्वती : हे ! कल जोड़ै छी, नेहोरा करै छी । हमर माथ जुनि भुकाउ । हमर माथ दुखाय लगै अछि ।

जगदीश : सत्ते मोन पाड़लौं । आइ भिनसरेसँ हमर माथ दुखाइ अछि । देहक गीरह-गीरह टटा रहल अछि । कनी देह जाँति देब तँ बड़ गुन मानब ।

पार्वती : हमरा नै जरूरति अछि गुन मनयबाक । आ ने एतेक बकतूति करबाक फुरसति अछि ।

जगदीश : अहाँके अवस्से फुरसति होयत। घरमे जखन करबा लय कोनो काज नै बाँचि गेल, तँ चलि अयलौं हमरा भुकाबै लय।

पार्वती : उठू-उठू। कहू तँ, सौंसे देह घामे-पसेने नहायल अछि आ, तैयो अहाँ चद्दरि ओढ़ि कऽ पड़ल छी।

(केबाड़ खटखटयबाक ध्वनि)

जगदीश : के छी ?

सूरति : (बाहरसँ) हम छी, सूरति !

जगदीश : यैह, अयलौं। (चौकी परसँ उतरबाक धमधम।)

पार्वती : आब किएक उठै छी धड़फड़ा कऽ ?

जगदीश : अहूँ केँ फुरि गेल ?

पार्वती : आब लड़ाउ गप्प। हम काज करऽ जाइ छी।

(केबाड़ खोलबाक ध्वनि)

(लघु मौन)

जगदीश : के, सूरति बाबू ! आउ, आउ, आउ। कुशल कि ने ?

सूरति : हँ, कोनेहुना भगवानक इच्छासँ चलल जाइ छै।

जगदीश : आउ, एहि कुर्सी पर बैसू। थम्हू, झाड़ि दै छिऐ। (कुर्सी घुसका कऽ तौनीसँ पटकि-पटकि कऽ झाड़बाक स्वर)

सूरति : भऽ गेलै, भऽ गेलै। ओहिमे की गर्दा लागल छै ? अहाँ भकुआयल जकाँ लगै छी ? सूतल छलौं की ? मोन तँ निके अछि ने ?

जगदीश : हँ, आइ रवि छै ने, तेँ सूति रहलिऐ। माथो कने धमकै छल।

सूरति : आहा हा ! तखन बल केलौं ने जे सूति रहलौं। ओहिसँ तँ मोन आरो भारी भऽ गेल होयत।

जगदीश । नहि, कोनो खास बात नहि। एक रत्ती आँखि धोने अबै छी।

सूरति : अवश्य, अवश्य। अवश्य धो लियऽ।

(लघु मौन)

जगदीश : अय पारो ! अय सुनै नै छी ?

पार्वती : की अछि, कहू ने ?

जगदीश : एक गिलास पानि दियऽ, आँखि धोयब ।

पार्वती : अच्छा, दै छी (मौन) लियऽ, सरिया कऽ धरू, ने तँ पटकि देबै ।

जगदीश : जलखै बनबै छी ?

पार्वती : की बना दियऽ ?

जगदीश : किछु बनाउ, मुदा मोनसँ बनाउ । आ सूरति बाबू अयलाह अछि, तेँ कने पुष्ट कऽ बनाउ ।

पार्वती : हुनका तँ तेसरा दिन पर बन्हा भऽ गेलनि अछि । ससरि कऽ चल अबै छथि ।

जगदीश : अहा हा ! नै बुझै छिऐनि हुनकर स्थिति । बेचारे बड़ दयनीय अवस्थामे छथि । आ आइ तँ मात-आठ दिन पर अयलाह अछि । अहाँ कनेक जल्दी बनायब ।

(लघु मौन)

हँ, तखन ? बड़ बेसी दिनपर देखलौं अछि सूरति बाबू । की कोना अयनाइ भेलै अछि ?

सूरति : की कहै छी, जगदीश बाबू ! हमहू की कोनो जिनगीमे छी ? बस बूझू, कोल्हुक बड़द जकाँ रेहोँ-रेहोँ कऽ दिन खेपने जाइ छी । जेँ कि घरमे पैर दै छी की ओम्हरसँ चेँ, ओम्हरसँ केँ । कहै छी, माथ फाटि जाइ अछि ।

जगदीश : हँ, से तँ होइते छैक । मुदा दुखो-सुखो सहि कऽ, आ रुक्खो-सुक्खो खा कऽ एतेक टा परिवारक बीचमे रहब, जिनगी बितायब, भाग्यवानेकेँ भेटै छै । कतौसँ अबैत होयब आ लगमे धिया-पुता सब दौड़ि कऽ अबैत होयत, तँ मोन हुलसि जाइत होयत । जिनगीक आनन्द तँ ओहीमे छै ।

सूरति : से तँ छै, जगदीश बाबू ! केहनो थाकल ठेहिआयल गाम पर आउ, परिवारकेँ देखि कऽ मोन हरियर भऽ जाइ अछि। मुदा दुख होइ अछि जे ओकरा सबकेँ हम मनुक्खक सुख-सुविधा नै दऽ पबै छिऐ। ककरो देह पर एकटा नीक लत्ता नै छै। अपनो जे कती बहरायब से साफ कपड़ा नै अछि।

जगदीश : सेतँ ठीके। एकसर जान भेलौं। आमदनिएँ कतेक ?

सूरति : अरे, अच्छत थोड़ देवता बहुत। आब देखियौ, जेठकी कन्या सोनदाइ बियाहै जोग भऽ गेल। पिरतू आ किरतूक से आब उपनयन करब आवश्यक। ओकरो बारहम-तेरहम छै। नीतू पाँच बरखक भऽ गेलै आ सौंसे माथ झोपड़ा लागल छै। नीतूसँ जेठ रामदाइकेँ सौंसे माथ गूड़े बहार होइत रहै छै। नीतूसँ छोट, चारि बरखक कंटिरबी छै, तकरा सब दिन ममरखे जतने रहै छै। कोरैला छौंड़ाक आइ मास दिनसँ पेट बहै छै।

जगदीश : सत्ते, सूरति बाबू ! अहाँक हाल सुनि कऽ मोन द्रवित भऽ रहल अछि। ई अहींक सक होअय जे एतेक सम्हारने जाइ छी। ओह, एतेक-एतेक समस्याक जंजाल माथ पर अछि! भिनसरसँ साँझ धरि परिश्रम करैत रहै छी। परिवारकेँ चलबैत रहै छी। अहाँक जीवनमे तँ क्षणो भरि विश्राम नै अछि।

सूरति : नै पूछू, जगदीश बाबू ! जन्मक किछु दिनुक बाद हमरा उपरसँ मातृ-स्नेहक छाया हटि गेल। हमरा मोनो ने छथि माय। तेँ नै जनै छिऐ, मायक ममता केहन होइ छै। मैटूअर भऽ कऽ जे जिनगीक हाय-हायमे पड़लौं तँ ओहिसँ फेर निस्तार नै भऽ सकल। मुदा माया-मोहक जंजाल ततेक पसरि गेल, जे सब किछु छोड़ि-छाड़ि कऽ संन्यासियो ने भऽ सकै छी।

जगदीश : बड़ करुण अछि अहाँक जीवनक कथा। मुदा सूरति बाबू! एतेक हताश नै होइ। कोनहुना तँ निर्वाह भैए रहल छै ?

सुरति : जगदीश बाबू ! सोचै छी जे ई सब ओइ जनममे अभागल छल, तेँ ने हमरा ओतऽ आयल । ककरो एकटा बेटियो बिना घर अन्हार छै। भगवान ओकरे घरमे पठा दितऽथिन ओकरा सबकेँ। (खखसि कऽ) एकरा सभक दुआरेँ एकक बाद दोसर झंझटि अबैत रहै अछि। सुखसँ साँस लेबाक कखनो सावकाश नै। सभक तील जेना हमही खयने छिऐ। ओहि जनममे ककर-ककर ऋण पचा लेने छलिऐ से नहि कहि। सब आबि-आबि कऽ छाती पर सवार भऽ कऽ असूलि रहल अछि।

जगदीश : कोनो विशेष बात भेल अछि ?

सुरति : विशेष बात की, बड़ विपत्तिमे छी, जगदीश बाबू ! एहि विपत्तिक मारल सात-आठ दिनसँ नै अबै छलौँ आ आइ ओही विपत्तिक मारल अहाँक ओहि ठाम अयलौँ अछि। एतेटा गाममे हमर केओ हितेच्छु नै अछि अहाँ छोड़ि कऽ। जी-मूँह दाबि कऽ चल अबै छी अहाँक ओतऽ।

जगदीश : अहाँ जखने अयलौँ, तखने अहाँक मुँह उदास बूझि पड़ल। भेल जे पूछी, मुदा नै पुछलौँ।

सुरति : हँ, विधाता जखन दुख बँटैत रहथिन, तँ सबसँ पहिने हमहीं आगाँमे पड़ि गेलियनि। छिट्टा भरि दुख हमरे माथ पर उझीलि देलनि। विधाताक देल ओहि सनेसकेँ उघने जा रहल छी आ चिता पर धरि उघिते रहब। सत्त पूछी, तँ उदासी हमरा सभक जीवनमे मिज्झर भऽ गेल अछि। लाख कोसिसो कऽ ओकरा टारि नै सकै छी।

जगदीश : अन्ततः बात की छै सेने कहू ? अहाँक स्थिरतोमे एक प्रकारक चञ्चलता अछि । अहाँके कहबाक की अछि से कहू, हम यथा-सम्भव चेष्टा करब जे अहाँक बेर निबाहि सकी, काज आबि सकी ।

सूरति : जगदीश बाबू ! कहबामे तँ संकोच भऽ रहल अछि । अहाँक उपकारक भारसँ तँ तऽर भेल छी ।

जगदीश : कोनो संकोच करबाक काज नै । निधोख भऽ कऽ कहू । एकदम अपन बूझि कऽ कहू ।

सूरति : हमरा किछु टाका चाही, हम जनै छी जे अहाँ नै, नै कहब तथापि मोनमे ग्लानि भऽ रहल अछि जे पछिले टाका नै दऽ सकलौं अछि । मुदा एहि विपत्ति कालमे ककरा ओतऽ जा कऽ हम हाथ पसारियौ ?

जगदीश : च् च् च् च् ! एहि लय अहाँ एतेक लजाइ छलौं ? एहि लय तँ अहाँके कोनो रोक नै । जखन जाहि वस्तुक खगता हो, से आबि कऽ लऽ जाइ । यदि हमरा लगमे रहत तँ नै, नै कहब मुदा विपत्ति कोन पड़ि गेल अछि से तँ कहबे ने कयलौं ?

सूरति : आब भगवानेक हाथमे छनि ।

जगदीश : से की ?

सूरति : आहि रे बा ! पिरतू तँ आब जे घड़ी अछि सैह बहुत । आइ उनैस दिन भेलै ओकरा ओछैन धयला । संगमे एकोटा पाइ नै जे ओकर दवाइ करेबै । एखन गाम पर गेलौं तँ पोखरामवाली के देखलियनि हैया-दैया करैत । नाड़ी घीचि लेने छै । हाथ-पैर सर्द छै । दौड़ल अयलौं अहाँ ओतऽ ।

जगदीश : कहू तँ भला ! अबिते मात्र किएक ने ई बात कहलौं ? एतेक देरी करबाक कोन काज छलै ? आइ तँ पोस्ट ऑफिस बन्द छै तैयो ··· ·· बेस हम लेने अबै छी ।

(मौन)

अय पारवती ! पारो !!

पार्वती : की अछि ?

जगदीश : किछु टाका होयत अहाँक लऽग ?

पार्वती : एखने टाकाक कोन जरूरति पड़ि गेल ?

जगदीश : सूरति बाबूकेँ चाहिऐनि । बड़ आवश्यकता छनि ।

पार्वती : हमरा नै अछि टाका-फाका । हमरा हाथ कऽ देने छी जे मङै छी ? सब अपन पोस्ट ऑफिसमे जमा कयने छी, लऽ आनू । आ सूरति बाबूकेँ तँ एहिना टाकाक जरूरति पड़ैत रहै छनि, जेना हम कोनो खजाना रही । की हम कोनो मोटरा गाड़ि कऽ रखने होइयनि । रुपैया की गाछसँ झहरै छै ?

जगदीश : अहाँकेँ चरखी औँटबाक बेर यैह भेटल अछि ?

पार्वती : हमरा बकतूति नै करबाक अछि । हमरा टाका नहि अछि तँ हम कतऽसँ दियऽ ।

जगदीश : ठीक छै, जतऽसँ हेतै ततऽसँ हम हुनका इन्तजाम कऽ-कऽ देबऽ जाइत छियनि । लोक हरले-खगले पर ककरो ओतऽ जाइ छै । नै हेतै, अपन घड़ी बन्हकी राखि कऽ देबनि आ तेँ टाका बिना हुनका बेटाकेँ मरऽ नै देबनि ।

पार्वती : हय, सुनू । एहन तमसाह आ तुनकाह लोक तँ देखबे ने कयलौं! खुलासा किछु कहब नै, आ खाली··· ···

जगदीश : की कहू? जे कहबाक छल से कहि देलौं । ओतेक टा बेटा सूरति बाबूक हाथसँ बेहाथ भऽ रहल छनि आ ताहू बेरमे हम हुनका मदति नै करियनि, ई कतेक टा अमानुषिकता होयत ?

पार्वती : से फड़िछा कऽ किए ने कहलौं । एतेक निसरठ बुझै छी अहाँ हमरा ! पचीस टा टाका हमरा लग्गमे अछि, ओहिसँ काज चलत ?

जगदीश : लाउ, जल्दी लाउ :

(लघु मौन)

जगदीश : सूरति बाबू ! आइ तँ रवि छै। घरमे रुपैया अछि नै। पोस्ट ऑफिससँ कालिह बहार कऽ दऽ देब। एखन तत्काल पचीस टा लेने जाउ।

सूरति : जगदीश बाबू ! अहाँ देवता छी हमरा लय। हम जिनगी भरि अहाँक उपकारक ऋणसँ उऋण नै होयब। हमर रोम-रोम अहाँक सहृदयतासँ जुड़ायल अछि।

जगदीश : अहाँ गाम पर जाउ, हम साइकिलसँ ब्लौक बला डाक्टरकेँ बजौने अबै छी।

सूरति : अहाँ हरान होयब गऽ ?

जगदीश : हरान की ? दस मिनट तँ लगतै जाइमे। (दूरसँ थपड़ीक स्वर।)

सूरति : वैह, आङनसँ सोर कऽ रहल छथि प्रायः।

जगदीश : औ, सूरति बाबू ! जलखै तैयार भऽ गेल अछि, से कऽ लियऽ तखन जायब। बस दू मिनट।

सूरति : अहाँक इच्छा।

द्वितीय दृश्य

(केबाड़ खटखटयबाक ध्वनि)

पो०वाली : पार्वती कुम्मरि ! अए पार्वती कुम्मरि ! छी नै अए ?

पार्वती : के छी ?

पो०वाली : हम छी पोखरामवाली, पिरतूक माय। कनी केबाड़ फोलू तँ।

(मौन)

(केबाड़ खोलबाक ध्वनि)

पार्वती : आबथु, बहीनदाइ ! बैसथु। गोड़ लगै छियनि।

पो०वाली : अइहब-सूहब होउ । जीबू । निकेँ रहू । भगवान काया-समाङ देथि ।

पार्वती : की, कोना-कोना मोन पड़ि गेलियनि ? पिरतू बच्चा निकेँ भेलथिन ने आब ? बड़ चिन्ता लागल छल हुनका लय ।

पो०वाली : कनिञाँ, अहाँ दुनू बेकती तँ ओकरा जमक हाथसँ छोड़ा अनलिऐ । जगदीश बाबू आ अहाँ, दुनू परानी हमरा सब लय देवता छी । होइ अछि, जे फूल लऽ कऽ अहाँ सभक पूजा करी । हमरा सभक रोआँ-रोआँ असिरवाद दैत रहत अहाँ सबकेँ ।

पार्वती : हमरा सभक कयने की होयतै ? भगवान करै छथिन । सब हुनके हाथ-बाट छनि ।

पो०वाली : नै अए कनिञा ! भगवानो ककरो-ककरो हाथमे जऽस दैत छथिन ।

पार्वती : आरो सब धिया-पुता निकेँ छनि ने ? एम्हर कय दिन लऽ कऽ हमरा आङनमे नहि अयलनि अछि ?

पो०वाली : की पुछै छी कनिञा ? मोन तँ नङो-चङो भेल रहै अछि । भिनसरसँ साँझ धरि पेड़ाइत रहै छी । ई धियो-पुता सभ जंजाल लगै अछि ।

पार्वती : से नै कहथुन बहीनदाइ ! भगवानेक दयाक ई सब फल थिकै । हिनका सन भागमन्ति के होयत ! ओना दुखम-सुखम तँ सब घरमे रहै छै ।

पो०वाली : देह जरै अछि तँ की कहिऐ । भगवानोक नजरि एकभगाहे छनि; जकरा नै चाही तकरा सोरहि-बारहि दऽ दै छथिन आ ककरो घरमे एकटा कनहो-कोतरा लय अन्हार रहै छै । ओकरा दिस घुमियो कऽ ने तकै छथिन ।

पार्वती : (मद्धिम स्वर) हँ, सब अपन-अपन कमायल होइ छै । भगवानक कोन दोष ?

पो०वाली : कनिञा ! कनिञा !! अहाँ एना उदास किएक भऽ गेलौं ?

एना आँखि किएक नोरा गेल ?

पार्वती : बहीनदाइ ! जाहि आमक गाछमे फल नै होयतै से उदास नहि रहतै ?

पो०वाली : हम नीक जकाँ बुझलौं नै कनिञा, अहाँ की कहऽ चाहै छी ?

पार्वती : संतान सँ हीन स्त्रीक हियाक व्यथा हमहीं टा बूझि सकै छिऐ, बहिनदाइ ! ओकर अन्दाज हिनका नै भऽ सकै छनि। की ई एते टा घर-दुआरि उदास आ सिरीहन्त नै लगै छनि ? होइ अछि जे हमरो जीवनमे कहियो की तृप्ति भऽ सकत ?

पो०वाली : अहाँ दूनू गोटाक वयसे की भेल अछि ? एहि लय एतेक उदास नै होइ। भगवान बड़की टा छथिन। हुनका ओहिठाम अबेर भने होउ, अन्हेर नै होइ छै।

पार्वती : बहीनदाइ ! एसगर रहैत एहि अजोद्ध मकानमे डर होइ अछि। काटऽ दौड़ै अछि। होइ अछि, हम भुतिया गेल होइ एहि मकानमे। सेहन्ता होइ अछि जे लोक पार्वती कुम्मरि नहि कहि कऽ बच्चाक माय कहैत।

पो०वाली : कहियौन दाता-दिनकरकेँ जे मन-कामना पूर कऽ देताह। भगवतीकेँ गोहरबियौन जे आँचर भरि देतीह। (मौन) बेस, हम फेर आयब। एखन खयनिहार अयलाह। (मौन)।

जगदीश : पारो ! पारो !! अए पारवती ! के ओहि दऽ कऽ गेलीह अछि ? (मौन) अए ! अहाँ बजै छी किएक ने ? एना चुप किएक छी ? आहि रे बा ! अहाँक मुख एतेक उदास किएक अछि ? (पार्वतीक कनबाक ध्वनि) अरे, अहाँ कनै छी ! की भेल अछि अहाँकेँ ? भेल की से बाजू ने ?

पार्वती : किछु नै भेल अछि हमरा। (हिचुकी ओ सिसकीक ध्वनि।)

जगदीश : तखन एना कनै छी किएक ? की हम किछु कहलौं अछि ? हमर कोनो बातक दुख भेल अछि ?

पार्वती : अहाँक दोख नै, हमर भाग्यक दोख। हम तँ ओहि जनममे हाथी चढ़ि कऽ गौर पुजने रही जे अहाँक सन घरबला हमरा

भेटल। एहि अर्थें हमरा सन भाग्य ककरा हेतै ?

जगदीश : एहि तरहेँ सतत मोनकेँ छोट कयने रहब, कोनो नीक बात नै अछि।

पार्वती : हमरा जे कहै छी, से अहाँ अपना मोनसँ नै पूछै छी ? हमरासँ की ई बात नुकायल अछि जे अहाँक ठोर पर हँसी रहितो हृदयमे एकटा व्यथा रहै अछि ?

जगदीश : तँ हम-अहाँ की कऽ सकै छिए एहिमे ? आब तँ एतेटा जिनगी बीति गेल। जे बाँचल अछि तकरा कोनहुना पार कऽ लेबाक अछि। एतेक चिंतित रहबाक कोन काज ? हमरा सभक हिस्सामे कोनो बच्चा नै अछि तँ कतऽसँ भेटत ? से जँ रहैत तँ वैह ने जीबैत ? आइ बारह बरखक भेल रहैत।

पार्वती : अहाँ चल जाइ छी, तँ असगरे मोन बौआइत-टौआइत रहै अछि। होइ अछि, जेना किछु धऽ लेत। जेना अथाह, गहीँर पोखरिक पानिमे डूबि गेल होइ। एतेक टा मकानमे डूबि गेल होइ। एतेक टा मकानमे दहाइत-भसियाइत जकाँ रहै छी।

जगदीश : अहाँ तँ केहन पढ़लि-लिखलि छी, तखन एना किए बताहि जकाँ सोचऽ लगै छी ? सदिखन सन्तानेक विषयमे सोचैत रहै छी, जेना जीवनक लक्ष्य वैह हो।

पार्वती : जाहि स्त्रीकेँ मायक पद नै भेटतै ओ अपनाकेँ कहियो सुखी बूझि सकै अछि ?

जगदीश : मानलौँ, सन्तान नारीक पूर्णता थिकै मुदा अहाँ अपनहि नारी भऽ कऽ बिसरि जाइ छी जे प्रत्येक नारीक हृदयमे मातृस्नेहक स्रोत रहै छै।

पार्वती : अपना सन्तानक प्रति जे एकटा मोह होइ छै, ममता होइ छै, से प्रायः आन ठाम नै भऽ सकै छै।

जगदीश : नै पारो, से नै। अहाँ, सभक सन्तानकेँ अपन सन्तान मानियौ। ओतबे स्नेह दियौ। तखन पता चलत। आइ भारतकेँ अधिक सन्तान नै, प्रत्युत ओकर पालन पोषणक

आवश्यकता छै। सूरति बाबू तँ अहाँक सोझहिँ छथि। प्रत्यक्षक लेल अहूँ कें हम प्रमाणे दियऽ।

पार्वती : हमर तन-मन जीवनक स्वामी भैयो कऽ हमरा मर्मक पीड़ा अहाँ नै चीन्हब की? दुलारक भूखकें अहाँ परतारि कऽ मेटबऽ चाहै छिऐ।

जगदीश : दुलारक भूख हमरा नै अछि? अहाँ अपनासँ फराक हमरा किएक बूझऽ लगलौं? मुदा एहनो धिया-पुताक कमी नै छै जकरा माय-बापक स्नेह नै भेटलै कहियो। भरि पेट अन्न नै भेटै छै। देहपर बीत भरिक दऽढ़ वस्त्रो नै भेटै छै। उचित शिक्षा-दीक्षाक अभावमे ओ सभ भविष्यमे अभिशाप बनि जाइत अछि समाजमे। से आइये लालनकें लोह-ताम भेल चिचियाइत देखने छलिऐ—

(अतीत वृत्त आरम्भ)

लालन : अपन धीया-पुताकें हँटि कऽ राखब नै। सोरहि-बारहि पथार लगा देने छथि। अपन खरुहानकें अपना पैर लगा कऽ बान्हि राखथु। ई की जे सौंसे गामकें उछन्नर करब। ककरो बाड़ी-झाड़ीमे एकटा करह-बाती नै रहऽ दै छै। टाट-फरक पर चढ़ि कऽ तोड़ि दै छै। एक बेर सहलौं, दू बेर सहलौं, आब कते सहब?

जगदीश : एना किएक तमसायल छह लालन? की बात भेलह अछि?

लालन : के, जगदीश बाबू! की पुछै छी? नाकमे दम भऽ गेल सूरति बाबूक मझिला बेटा किरतूसँ। एक नम्बरक उजाड़न भऽ गेल अछि। सौंसे टोलक छौंड़ाक संगे बहेड़ भेल बौआइत रहै अछि। लोकक बाड़ी-झाड़ी उजाड़ने फिरै अछि। बाड़ीमे एकटा जरदालू आमक नवगछुली सऽखसँ रोपने छलौं, तकर एक-एकटा कलम मचोड़ि कऽ फैंकि देलक। हम पकड़लियनि नहिं, ने तँ छठिहारक दूध मोन पाड़ि दितियनि!

जगदीश : अच्छा, जाय दहक। की करबहक! आइ माफ कऽ दहक। बूझह जे अपने नेना छलह।

लालन : औ बाबू ! एक दिनुक गप्प रहय तखन ने। ई तँ नित दिनुक यैह ढाठी भऽ गेल अछि।

जगदीश : आब, की सूरति बाबूकेँ उपराग देबहुन ? ओहो बेचारे तँ पिसीमाल भेल छथि। पित्त उठतनि तँ बेछोहे चारि डंटा धऽ देथिन। ताहिसँ तोरा तँ कोनो फल नै होयतह ? आइ भरिक हेतु माफ कऽ दहक।

लालन : से तँ सूरति बाबूक रोचेँ ओकरो सबकेँ नै किछु कहै छियै, मुदा ओ सब की अपन बानि छोड़त ?

(अतीत वृत्त समाप्त)

जगदीश : जनै छियै पारो ! ई किएक एना होइ छै ? उचित शिक्षाक अभावमे यैह सब भविष्यमे जा कऽ समाजक वातावरणकेँ विषाक्त कऽ देतै। अपना संग कतेको पीढीकेँ पतनक गर्त्तमे खसा देतै। एहिमे ओकर दोख तँ नै छै। यदि ओकरे सभकेँ सुशिक्षित कयल जाय तँ महान राष्ट्र-निर्माणक शक्ति एकट्ठा भऽ जेतै।

पार्वती : अहाँक कोनो बातकेँ हम कहियो दोहसौलौँ नै। हमरा अहाँ पर अखण्ड विश्वास अछि।

जगदीश : पारो, हम सपनामे कहियो कऽ एकटा संन्यासीकेँ देखैत छियै… …

(अतीत वृत्त आरम्भ)

जगदीश : प्रणाम बाबा !

संन्यासी : शुभमस्तु, कल्याणमस्तु ! तोँ एना उखड़ल किएक रहै छह ? बूझि पड़ै अछि, जेना तोरा अन्तरमे कोनो गम्भीर असंतोष होअह।

जगदीश : बाबा ! संसारसँ मोन उचटि गेल अछि। दूर पड़ा जाय चाहै छी एहन कोलाहलमय संसारसँ।

संन्यासी : संसारक कोलाहलसँ फराक कोनो जीवन छै ? हमर संन्यासक एतेक दिनुक जीवनक अनुभव यैह अछि।

जगदीश : बाबा ! हमरा जीवनमे कोनो लय नहि अछि, कोनो संगीत नहि अछि। नीरस छी हम सभ। एकटा शिशुक अभावमे जेना दिनो-दिन जीवन उस्सर बनल जा रहल अछि।

संन्यासी : (हँसैत)एतेक छोट वस्तु लय एतेक मोह ? बाउ ! बच्चा जे

कोनो हो, ओ सभ, स्नेहक अधिकारी अछि। तों अपन स्नेहक भण्डारके एतेक संकीर्ण नै बनाबह। ओकरा तों छोड़ि दहक उन्मुक्त, जे जतेक लऽ सकय। एक बात निश्चित जे जतेक ओ बंटतै ततेक तोरा आत्माके शान्ति भेटतह। स्वतन्त्र भारतक नागरिक ! तोरा पर बहुत रास उत्तरदायित्व छह।

(अतीत वृत्त समाप्त)

जगदीश : निन्न टुटियो गेला उत्तर ओहि स्वप्नवला संन्यासीक बात नै बिसरि पबै छी। मोनक चिन्ता सब ओही बातमे मीलि कऽ समाप्त भऽ जाइ आछि।

पार्वती : सत्ते कहै छी हम। अहाँक बात अमरित जकाँ बुझि पड़ै अछि। जखन अहाँ हमरा बोल-भरोस दै छी। बुझा दै छी तँ आत्माके शान्त भेटि जाइ अछि। एकटा संतोष भऽ जाइ अछि। हमरा मोनके जेना भरसाहा भेटि जाइ अछि।

जगदीश : अहाँ खाली अपन उदासीके छोड़ि दियऽ। अहाँक उदासी हमरा मोनके कोनादन कऽ दै अछि।

पार्वती : की करू ? मोन कखनो-कखनो कऽ, तेना घबड़ा जाइ अछि जे होइ अछि, खूब कानी, खूब कानी। हे औ ! अहाँ जे कहै छी अनकर धिया-पुता, से के आबऽ देतै हमरा लऽग ?

जगदीश : लोकके कहबाक लेल मुँह रोकि देबै ? आ ई किए नै बुझै छिऐ जे एहि तरहक सोचनिहारो तँ ओही अशिक्षाक अभाव-अभियोगमे जिबै अछि ? ई तँ ओकर संस्कारक दोख थिकै। जनै नै छिऐ, एहन माय बाप अपना संतानके भरि पेट अन्न नै, भरि देह वस्त्र नै दऽ पबै छै। दैत छै खाली अठारह चोटिक मारि, गारि, उपेक्षा, उत्तराधिकारमे अपन अशिक्षा आ रूढ़ संस्कार। वास्तवमे मातृत्वक स्नेह तँ ओकरे सबके चाही।

पार्वती : अहाँ जे कही, हम सब बात मानब।

जगदीश : तँ नीक अछि, कालिहसँ सुरति बाबूक सब धीया-पुता अपने ओहिठाम दिनमे खयल करत आ भरि दिन अहाँके ओकरा सबके पढबऽ पड़त। ओकरा सुढंग बनायब अहाँक कर्त्तव्य थीक।



मनुष्यक देवता

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

धैरज :	सामान्य स्थितिक एकटा सहृदय वैद्य।
सुधीर :	धैरजक पुत्र, बेरोजगार युवक।
देवन :	सुधीरक मित्र।
चौधरीजी :	एकटा प्रतिष्ठित व्यक्ति, धैरजक मित्र।

स्त्री पात्री

तारा :	सुधीरक पत्नी।
सुधीरक माँ :	धैरजक पत्नी।

प्रथम दृश्य

[स्थान : धैरज वैद्यक दलान । समय : दोसर उखड़ाहाक अन्तिम भाग । धैरज प्रस्थानक मुद्रामे । दूरसँ ढोल-झालि बजबाक स्वर अबैत रहैछ ।]

देवन : गोड़ लगैत छी, धैरज काका !

धैरज : निकें रहह, कुशल समाचार नीक ने ?

देवन : हँ दया छैक अहाँ सभक । अहिंक ओतऽ आयल छलहुँ । कीर्त्तनमे चलिऔक ने, जाधरि अहाँ ने रहैत छिऐक ता धरि एको रत्ती रंगे ने अबैत छैक । बूझि पड़ैत छैक जेना नोन बिना तरकारी परसल जाइत होइक ।

धैरज : देवन बच्चा ! आब हमर सभक जीवन की धयले अछि जे कूदब-फानब ? हम सभ तँ बीतल युगक ढेरी छी । तों सभ नवयुवक छह, करैत जाह कीर्त्तन ।

देवन : काका ! से नहि कहिऔक । बूढ़-बूढ़ानुस तँ गामक भरसाहा रहैत छैक । जेना पुरान चाउर पऽथ पड़ैत छैक, तेहने होइत अछि पुरान लोक ।

धैरज : हौ, मन-उदगार तँ गाबी गीत, घरमे खरची तँ सुती निचिन्त ।

देवन : काका, अहाँ सन प्रसन्न लोक, जकरा लग आबि कऽ हम सब अपना घरक दुख-दर्द बिसरि जाइत छी, जकरा लग आबि कऽ हमरा सबकें होइत अछि जे अनाथ नहि छी, तकरा मुहसँ एहन निराश भाखा बाहर होइत अछि । ई महान् आश्चर्यक वस्तु अछि ।

धैरज : देवन बच्चा ! आश्चर्य नहि करह । हँसमुख आ प्रसन्न रहब, ई तँ हमर खोल थीक, जकरा अपना ऊपर चढ़ा लेने हमर यथार्थ रूप ककरो आगाँ नहि आबि पबैत छैक । आठ दिनसँ सुधूक मोन अस्वस्थ छनि । पढ़लहुँ बच्चामे संस्कृत, जीविका रहल वैदगीरी ।

देवन : सुधीर दुःखित अछि ?

धैरज : हँ दुःखित छथि। जिनगी भरिक कौंढ़-करेज नोड़ि कऽ अर्जित टाकासँ हुनका पढ़ाओल। एहि आशासँ जे, हम नहि, तँ हमर अगिला पीढ़ी तँ खुड़हा बदलत। किन्तु भगवतीकेँ ई सब देखबाक फुरसतिए नहि छनि।

देवन : ओकरा होइत छैक की ?

धैरज : देखहु, पढ़ि लीखि कऽ बेकार बैसल छथि। घरमे आंगनसँ से छथिन। हम तँ किछु कहैत नहि छियनि, मुदा अपने मोनमे गड़ैत रहैत छनि। ओहिना मोन उदास जकाँ। बाजब-भूकब किछु नहि, खाली टुकुर-टुकुर तकैत रहैत छथि।

देवन : एना सोचमे किएक पड़ल रहैत अछि ? थम्हू, हमरा भेंट होइत अछि तँ हम कहैत छिऐक।

धैरज : ओ तँ आठ दिनसँ ओछाओन धयने छथि। आठम दिन अनचोकेमे पेट-मुँह दुनू चलऽ लगलनि। भगवान जानथि जे कोनो हवा-बसात लागि गेल छलनि ? की दैवी-दुखं छलनि ? आ की किछु खा लेने छलाह ? आब ओ उपद्रव सभ शान्त छनि।

(दूर परसँ कीर्त्तनक संग हरी बोल, हरी बोलक स्वर अबैत छैक)

देवन : भगवान सभ नीक कऽ देथिन। सोच नहि करऽ कहबैक।

धैरज : हौ, सदिखन बजैत रहैत छथि जे हमर बिआह करा कऽ गराँमे उक्खरि बान्हि देल गेल अछि। हमहूँ सोचैत छी जे हुनक विद्यार्थी जीवनमे बिआह नै करयबाक चाहैत छल। ओ कतेक विरोध कयने रहथि जे बाबू हमरा एखन एहि सभमे नहि बान्हू, मुदा तखन हमरा बुद्धिएकेँ किदन भऽ गेल छल।

देवन : बिआह भेला आ नै भेलासँ नै किछु होइत छैक। कहियो तँ बिआह करबे करैत।

धैरज : करितथि बिआह, मुदा तखन अपना पैर पर ठाढ़ भऽ कऽ। तखन ग्लानि नहि होइतनि। जनैत छह, देवन बच्चा ! ओ कतेक संकोचमे रहैत छथि ? एक दिन कोनो संगी लग बजैत छलाह जे

हम कुपुत्र भऽ कऽ मायक कोखिमे अयलहुँ। जीवन भार लगैत अछि। मोनमे उचाट लागि गेल अछि। एहि जिनगीसँ तँ आत्मघात कऽ लेब सय कच्छे नीक।

देवन : एहन बताह तँ ओ नहि छल कहियो !

धैरज : हौ, सभ परिस्थिति करबैत छैक। यदि एहन परिस्थितिमे कखनो किछु कऽ बैसथि तँ कतहुक नहि रहि जायब।

देवन : एखन कतऽ जा रहल छी ? मेघ चारू कातसँ उमड़ल चल अबैत छैक आ अहाँ जा रहल छी। एहि मेघराजकेँ गोहरयबाक लेल सौंसे गाम कीर्त्तन कऽ रहल अछि।

धैरज : देवन बच्चा, ठाकुरजीसँ हमरा दिससँ क्षमा माङि लिहह। हम एखने हाट जाइत छी, थोड़ेक फऽल-फलहरी लेबाक अछि। पुरान चाउर पथ्यक लेल। बेश, तोँ आब जाह।

देवन : औ काका ! ओम्हरसँ अबैत रही तँ छीतन एकटा समाद कहलक जे पुबारी गामक चौधरीजीक जमाय बड़ जोर दुःखित छथिन। अहाँकेँ बजौलनि अछि। ओ हाटसँ घूमत तँ अहाँकेँ बजौने जायत। कहलक जे हुनकर जमायक मोन खराप छनि।

धैरज : हँ हौ ! एकटा समाद तँ आरो भेटल अछि। हमरा हाटो जयबाक अछि। एक कोस पुबारी गाम आ डेढ़ कोस पच्छिम हाट। कोना एके बेर होयतैक ? एक गोटा आरो कहने छल। की करी ?

देवन : काल्हि भिनसरे देखि अबिऐक से भऽ सकैत छैक।

धैरज : हौ, जखन कानमे समाद पड़ि गेल, तखन अनठा दिऐक, ई तँ उचित नहि होयत। कतेक आशा रहैत छैक रोगीकेँ वैद-डाक्टरसँ ! ककरो आयु देब हमरा हाथमे नहि अछि, मुदा हमरा गेलासँ यदि थोड़बो भरोस ओकरा भऽ जाइक, जीवनक प्रति कनेको आशा ओकरा हृदयमे होइक तँ से देबऽमे हम पैर पाछाँ नहि करबैक।

देवन : जे करिऐक अहाँ।

धैरज : वेश चलह, सभ आतुर छोड़िकऽ रोगीक आतुर देखक चाही।

द्वितीय दृश्य

[स्थान : धीरजक आवासक आभ्यन्तर भाग : सुधीर ओ ताराक शयन–कक्ष ।
स्थिति : बरिसाती राति छैक । सन-सन पछबा बहैत छैक–झिंगुर झनकार कऽ रहल डेक दूर पर बेङ बाजि रहल छैक । चोटगर बरखाक रिमझिम स्वर सुनऽमे आबि रहल छैक । बीच-बीचमे मेघ तड़कि उठैत छैक ।]

सुधीर : हे ! भगवती हमरा दिस दृष्टि नहि फेरब कहिओ ? ई भार जीवन जे देने छी तकरा लेल कोनो आश्रय दियऽ, आ नहिं तँ प्रेरणा आ साहस दियऽ जे एहि जीवनसँ किनार लागि जाइ । भगवती ! हमं ताराकेँ अहींक हाथमे सौंपि कऽ जा रहल छी ।

तारा : (धड़फड़ययबाक स्वर) कतऽ जा रहल छी ? हमरा नावकेँ मझधारिमे छोड़ि कऽ कतऽ पड़ा रहल छी ?

सुधीर : तारा, अहाँ तँ निन्नसँ सूतलि छलहुँ । कोना जागि गेलहुँ ? सूति रहू । बड्ड हरान होमऽ पड़ैत अछि अहाँके ।

तारा : हमरा आँखिमे निन्न अछि जे सूति रहू ? आ हम सूति रहू जे अहाँ निचिन्त भऽ कऽ घरसँ पड़ा जाइ ?

सुधीर : तारा, हम अहाँके कहियो कोनो सुख नहि देलहुँ । माय-बाबू कतेक आशा लगा कऽ पढ़ौलनि-लिखौलनि मुदा हमरासँ किनको इच्छा पूर्ण नहि भेलनि । मोन हमरा सतत धिक्कारैत रहैत अछि । हम अपनाके अपराधी बूझि रहल छी ।

तारा : हमरा ककरा पर छोड़ने जाइत छी ? हमर कोन अपराध अछि ? हम तँ कहिओ कोनो वस्तु नहि मङलहुँ । जकर हाथ अहाँ पकड़लिऐक तकरा एना विपत्तिक इनारमे खसा कऽ जाइत छी, एकरा के नीक कहत ?

सुधीर : हम अपराधी छी, तारा ! अहाँक माथमे सिन्दूर दऽ कऽ अहाँक प्रति अन्याय कयलहुँ। अहाँक सम्पूर्ण जीवनकेँ निष्ठुरतासँ मचोड़ि देलहुँ। (रुकि कऽ) प्रायश्चित्त करबाक लेल गामक धरती छोड़ि रहल छी। अज्ञात दिशामे चलैत-चलैत जाहिठाम पैर रुकि जाय।

(ठनका ठनकि उठैत छैक।)

तारा : दुखिताह देह, बरिसातक अन्हरिया राति......

सुधीर : तारा ! नल, दमयन्तीकेँ बिनु कहनहि चल गेलथिन। बुद्धदेव यशोधराकेँ सूतलिमे छोड़ि कऽ चल गेलथिन। मुदा हम अहाँकेँ देखा कऽ जा रहल छी। हमरा अहाँ क्षमा कऽ दियऽ आ जाय दियऽ। जहिया जीवनमे सुस्थिरता होयत तहिया हम फेर भेंट देब। अवश्य भेंट करब।

तारा : हम अहाँकेँ किन्नहुँ ने जाय देब।

सुधीर : हमरा पकड़ू नहि। हमरा जाय दियऽ। जाय दियऽ। जाय दियऽ।

(झिक्का-झोरीक स्वर। चूड़ी झनझनाइत छैक—मेघ गरजैत छैक। ओहि मेघक गर्जनमे खन-खन विलीन जकाँ भऽ जाइछ।)

(आङनमे धमधमक स्वर)

(तारा एके बेर जोरसँ सिसकि उठैत अछि। सिसकीक स्वर तेज भऽ जाइत छैक। वर्षाक, बेङक आ झिंगुरक स्वर-मद्धिम होइत जाइत छैक। गोटेक बेर ठनका तड़कि उठैत छैक।)

सु. माँ : (दूरसँ) कनिञा, अय कनिञा ! अय की भेल अछि ?

(मौन। लगक स्वर)

एना अहाँ किएक कानि रहल छी ? (सिसकी आरो तेज भऽ जाइछ) कहू, ई बिचली रातिमे एना अनेरे कनैत छी ? अय, सुधू कतऽ गेल ? कहू,ई की करैत जाइ छी ?

(सिसकीक स्वर आरो तेज)

अय, बाजि नहि होइत अछि जे की भेल ? कहबो तँ करू।

तारा : माँ ! ए माँ ! पड़ा······गेलाह······नहि मानलनि······हाथ छोड़ा कऽ···चल······गेलाह··· ······

सु. माँ : पड़ा गेल ? के, सुधू ? एती रातिमे ? कखन ? कतऽ ? किएक ? किएक पड़ा गेल ? किएक पड़ा गेल ?

तारा : (सिसकैत) कहि नहि। जबरदस्ती हाथ छोड़ा कऽ चल गेलाह।

सु. माँ : गे माय ! गे माय ! आब हम को करू ? हमर सोन पड़ा गेल !

(ओ सिसकऽ लगैत अछि।)

धैरज : (दूरेसँ) की बात थिकैक ? अहाँ सब एना घरमे झौहरि किएक करैत छी ? एहि अधिरतियामे एना किएक करैत छी सुधू माय···?

(सिसकीक स्वर आरो तेज।)

···कनिञा, हिनका की भेलनि अछि ? बाजथु ने। केओ गोटे किछु बजतीह नहि तँ कोना बूझब जे की बात भेलैक अछि ? सौंसे टोलक लोक सुनैत होयत।

सु. माँ : हैत की ? सुधू बाबू घरसँ एखन एहि बर्खामे भीजैत-तीतैत पड़ा गेलाह।

धैरज : एखन पड़ा गेलाह ? एहि बतहपनीक कोनो जबाब अछि ? कतऽ गेलाह ?

सु. माँ : लोक की जानय गेलैक ? कनिञाक कानब सुनलहुँ तँ पता लागल जे हमर सोन पड़ा गेल। हे भगवती ! हमर सोनकेँ आनि दियऽ। आनि दियऽ, (विलापक स्वर) हे भगवती !

धैरज : जीवन-बाधासँ नहि लड़ि सकलाह तँ हारि कऽ पड़ा गेलाह ! तखन प्रकृतिक एहि वर्षा-बिहाड़िसँ कोना लड़ि सकताह ? पढ़लनि-लिखलनि मुदा धैर्य बान्हब नहि सिखलनि।

(सिसकीक स्वर अविते रहैत अछि ! वर्षा-बिहाड़िक स्वर तेज भऽ जाइछ। एक बेर फेर ठनका ठनकैत छैक। बसातक झोंक अबैत छैक।)

Scanned by CamScanner

धैरज : सुधू माय, हमर ठेङा आ लालटेन लेसि कऽ दियऽ। छत्ता सेहो दऽ देब। देखियनि जे एहि विकराल समयमे कतऽ बौआइ छथि।

(लघु मौन,)

(बिहाड़िक स्वर तेज आ मेघक तड़तड़ाहटि। दूर पर कूकुर झाँउँ-झाँउँ करैत छैक। बाहरमे कें बाड़क खट-खट स्वर होइत छैक।)

देवन : धैरज काका! धैरज कका!

धैरज : के थीक एती रातिमे? एहि विकालमे हमरे जकाँ ककरा पर विपत्तिक पहाड़ टूटि गेलैक, हे भगवान!

देवन : धैरज काका! औ काका! लालटेन लाउ।

धरज : के थिकाह? यैह अयलहुँ (सिसकीक स्वर दूर होइत जाइत छैक। केबाड़ खोलबाक स्वर) के थिकाह हौ, देवन? एती राति कऽ?

देवन : किछु नहि, पहिने फुर्तीसँ ओछाओन करू आ आगि पजारू।

धैरज : तोरा कान्ह पर के, सुधू छथुनह?

देवन : हँ काका।

धैरज : सुधू! सुधू!

सुधीर : बाबू! आह, हे भगवान रक्षा करू।

धैरज : हम हिनके तकबाक लेल विदा भेल छलहुँ। कतऽ भेटलथुन हौ? (जोरसँ) सुधू माय, जल्दीसँ ओछाओन लाउ। जल्दी करू, सुधू बाबू आबि गेलाह। आबि गेलाह, जल्दी करू।

(एकटा सिसकीक स्वर लग आबि जाइत छैक। किछु धड़फड़ स्वर। खाट ओछयबाक खट-खट आ ओछाओन झाड़बाक स्वर। खाट मचमचयबाक स्वर।)

देवन : हऽ! हऽ! एखन सुधीर कतऽसँ कतऽ चल जाइत? हम बड़दकेँ घास देबाक लेल उठल छलहुँ। अनायासे टौर्च बारि कऽ बाट पर देखलिऐक, सुधीरकेँ बोदर-बोदर भेल पड़ाइत जाइत। हम फानि कऽ बाट पर अयलहुँ तावत ई तलमला कऽ खसि पड़ल छल।

धैरज : अय सुधू माय ! सुखायल धोती बहार करू। देवन ! तों धोती बदलि लयह ।

देवन : धोती बदलब पाछाँ। पहिने ई कहू जे सुधीर एना किएक पड़ायल जाइत छल ? एखन तँ ओकरा होसे ने छैक, ने तँ पुछितिऐक जे एहन मूर्खता करबाक विचार के देलकैक ?

धैरज : हम की कहिअह ? हिनका मोनक बात हम कोना जानि सकैत छी ? हम तँ यैह बुझैत छी जे एखन धरि नेनपन नहि गेलनि अछि। कहैत रहैत छथि जे बैसल ठाम आत्मग्लानि होइत अछि। होइत अछि जे हम बड़ अकर्मण्य छी।

देवन : एहिमे अकर्मण्यताक बात तँ किछु नै छैक।

धैरज : भगवान जकरा दू टा हाथ देने छथिन ओ अकर्मण्य नहि भऽ सकैत अछि। मनुष्यकेँ तँ जन्मे कर्मक हेतु होइत छैक। सुधीरकेँ कर्मक चिन्तासँ बेसी उदरपूर्त्तिक चिन्ता लेने छनि, जे हम बुझैत छी, अनेरे।

सु.माँ: यैह धोती लियऽ।

धैरज : लयह,पहिने ई पहिरह देवन ! सुधू माय ! अहाँ हीङ आ तेल पका कऽ लाउ, सुधूकेँ सौंसे देह मालिस करक हेतु। सौंसे सर्दमे डूबल छथि। नाड़ी सेहो मद्धिम छनि।

देवन
सु.माँ} : एँ नाड़ी............?

धैरज : चिन्ताक कोनो बात नहि,उपचारे टा हमरा सभक हाथमे अछि। थम्हू,दवाइ निकालि कऽ एक चोट दैत छियनि (पदचाप...मेघ-गर्जन।)

देवन : एतेक भयानक राति तँ जिनगीमे कहिओ ने देखने छलहुँ ? अच्छा, काकी ! सुधीरकेँ की फुरि गेलैक जे एना बतहपनी कऽ बैसल ?

सु. माँ : एकरा कथी लय केओ किछु कहतैक ?

धैरज : (प्रवेश करैत) सुधू माय ! लिअऽ, मधुमे मिलाओल औखधि छैक, चटा दियौन तँ ।

देवन : सुधू ! सुधू !! होश करह । देखह तँ लोक कतेक घबरायल अछि ?

सुधीर : (मद्धिम स्वर) आह ! के ? देवन भाइ ! भाइ अहाँ हमरा एना किएक उठा अनलहुँ ? छोड़ि दितहुँ अपना भाग्य पर ।

देवन : बताह जकाँ नहि करी ।

सुधीर : हम अकाजक आदमी छी । संसारमे हमर कोनो उपयोग नहि अछि । हम समाजक भार बनि कऽ नहि जीबऽ चाहैत छी ।

धैरज : देवन ! कहुन तँ जे जँ सुधूकेँ कर्म पर विश्वास छनि आ किछु करऽ चाहैत छथि तँ (मेघक गर्जन) संसारमे काजक कमी नहि छैक । ताहि हिसाबेँ तँ मनुष्यक जीवन किछु नहि छैक । समाज तँ हिनका लोकनिक बाट ताकि रहल छनि मुदा कायर लोककेँ काज नहि छैक ।

(बाहरमे केबाड़ीक ढकढक)

के छी ? आब ई के अयलाह अछि ? (केवाड़ खोलबाक स्वर) अरे ! के अहाँ ? चौधरीजी ! एते राति कऽ ? की ? की बात छैक ?

चौधरी : विपत्ति जखन खेहारैत छैक, तखन समय-कुसमय किछु ने मोन रहैत छैक ।

धैरज : चौधरीजी ! आउ-आउ, छाता तोड़ि कऽ भीतर आउ ।

चौधरी : हमरा विपत्तिसँ त्राण कराउ । अहींटा हमर रक्षा कऽ सकैत छी ।

धैरज : अहाँ एना किएक बजैत छी ? ओझाजी तँ नीके छथि ने ? हुनकर मोन तँ नीक भऽ गेल छलनि ने ?

चौधरी : (कनैत) धैरज बाबू ! नीक भऽ गेल छलनिहेँ मुदा फेर गड़बड़ा गेलनि ।

धैरज : से की ?

चौधरी : डेढ़ दू घंटा पहिने सौसे देह सर्द भऽ गेलनि। नाड़ी धीमि लेलकनि। धैरज बाबू ! आब अहीं हमरा शरण दिअऽ।

धैरज : हाँ हाँ पैर पर किएक खसैत छी ? उठू उठू, हमरा की कहैत छी करबाक लेल ?

चौधरी : एक बेर अपना आँखिसँ चलि कऽ देखि लितियनि। अहाँक दृष्टि पड़िते ओ जीबि उठताह। जीवन-मरणक प्रश्न छैक तेँ हम अपनहि अयलहुँ अछि।

धैरज : चौधरीजी ! जीवन-मरण तँ विधाताक हाथमे छनि। हम तँ उपचार मात्र कऽ सकैत छिऐक किन्तु हमरो आगाँ एखन जीवने-मरणक··· ···

चौधरी : से की धैरज बाबू !

धैरज : लगातार मृत्युसँ संघर्ष कऽ सुधीरकेँ बचौलहुँ। ओ फेर मृत्युक जालमे ओझरा गेल छथि। लोक सेवा-शुश्रूषा कऽ रहल छनि।

चौधरी : दुर्भाग्य हमर पाछाँ लागल अछि। हमर जमाय आ अहाँक बेटा··· ···! कोना हम अहाँकेँ किछु कहू ? धैरज बाबू, हमरा आत्मा कहैत अछि जे अहाँ अमृतक एक एहन बुन्द छी जे जकरा भेटतैक से मृत्युकेँ जीति लेत। किन्तु एखनुक परिस्थितिमे ओ भेटतैक तँ कोनो एके गोटाकेँ ! हम चलैत छी, धैरज बाबू ! आब भगवाने रक्षा कऽ सकताह तँ संभव अछि।

धैरज : चौधरी जी ! चौधरी जी ! ठाढ़ होउ। चलू, हम अहाँक ओतऽ चलैत छी।

चौधरी : धैरज बाबू !

धैरज : चिकित्सासँ उपकार करबाक उपदेश हमर गुरुजी देने छलाह। हमर सुधीर रहथु की अहाँक ओझाजी, वैद्यक आगाँ दुनू रोगी छथि। जीवन प्राप्त करबाक अभिलाषी दुनूक जीवनक

मूल्य समान छनि। हम सुधीरक पिता छिऐनि किन्तु ओहि समस्त रोगीक जीवनदाता छिऐक जे हमरा पर आशा लगौने अछि। चलू। हम ओझाजीकेँ देखबनि।

देवन : आ सुधीरक की होयतैक काका ?

धैरज : सुधीरक रक्षक तँ तोँ छहक देवन ! हम तँ केवल वैद्य छी ! एखन सुधीर हमर एकटा कारणी मात्र छथि। हम तँ उपचार मात्र कऽ सकैत छियनि। वैद्य उपचारे करैत छैक, परिवार परिचर्या करैत छैक, से तोँ उपस्थित छह। तोँ ई विश्वास राखह जे यदि हम ककरो अनकर पुत्रक प्राण रक्षाक लेल अपना पुत्रकेँ छोड़ि जायब तँ ओकरा मृत्यु नहि पकड़ि सकैत छैक। सुधीर पर मृत्युक छाया नहि पड़ि सकैत छैक। यदि पड़तैक तँ धैरज कविराज एक बेर ओकरोसँ लड़बाक लेल तैयार छथि।

देवन : एहन पानि-पाथरमे कोना जा सकब ?

धैरज : चौधरीजी जँ एहन समयमे हमरा ओहि ठाम आबि सकैत छथि तँ हम किएक ने जा सकैत छी ? एक रुग्ण बेटाक बाप भऽ कऽ अनुभव कऽ रहल छी, पिताक हृदयक वेदनाकेँ। चौधरीजीक अन्तरमे जे बिहाड़ि उठल होयतनि तकर अनुमान हमहीं कऽ सकैत छी, देवन बच्चा !

चौधरी : धैरज बाबू ! अहाँ महान् छी। साधारण लोक ने एना बाजि सकैत अछि आ ने कऽ सकैत अछि। हमरा हेतु एहन परिस्थिति मे अहाँ चलि दी तकर पाप, तकर आभार उठयबाक क्षमता हमरामे नहि अछि। एखन हम आबि कऽ एकटा पाप कयलहुँ अछि। हमरा क्षमा कऽ दियऽ धैरज बाबू ! धैरज बाबू ! हमरा क्षमा कऽ दियऽ। हमर कान्ह दुर्बल अछि। ई आभार हम नहि उठा सकब। धैरज बाबू ! अहाँ नहि जाउ।

धैरज : चौधरीजी ! अहाँ एना अधीर किएक भऽ रहल छी ? एक चिकित्सक केर दृष्टिमे अपन आ विरान, घर आ बाहर, दिन आ राति सब समान छैक । जे समदर्शी नहि अछि ओ वैद्य नहि अछि ।

चौधरी : धैरजबाबू, यदि हमर जमाय भऽ कऽ आयल होयताह तँ ओझाजी राति भरि अवश्ये मृत्युसँ युद्ध करैत रहताह आ कालिह प्रातः काल अहाँक वरदहस्त हुनका भेटि जयतनि । अहाँ एखन सुधीरक उपचार करियौन ।

धैरज : चौधरीजी, यदि हमर बेटा आ जमाय दुनू मृत्यु शय्या पर पड़ल हो तँ हम की एकटाकेँ देखबैक आ दोसरकेँ छोड़ि देबैक ? एकटाकेँ मुइने हमर पुतोहुक चूड़ी फुटतनि आ दोसराक मुइने हमर बेटी विधवा भऽ जायति । चौधरीजी, अहीं कहू हम ककर सौभाग्यक बलिदान करियौक, ककर सौभाग्य सिन्दूरक रक्षा करिऐक ?

चौधरी : धैरज बाबू···अहाँ मनुष्य नहि छी । अहाँक उपकारक बदला कोनो देवते दऽ सकैत छथि, मनुष्य नहि । अहाँ मनुष्यक देवता छी ! देवता छी !

धैरज : चौधरीजी ! देरी नहि कऽ आब तुरन्त चलि दी । आ देवन ! तोँ एहि ठाम बैसह, हम तुरन्ते आबि रहल छी ।

(पदचाप सुनि पड़ैत छैक । बरिसाती रातुक भयानकता आरो प्रखर भऽ उठैत छैक । मेघ गरजैत छैक, बेङ बजैत छैक, झिंगुर झनकैत छैक आ बर्षाक टिपिर-टिपिर स्वरक बीच झपास आ बिहाड़ि बहैत रहैत छैक ।)



पिपासा

पात्र-परिचय

उत्तंक	:	महाभारतकालीन ऋषि।
भद्रसुख	:	उत्तंकक शिष्य।
चाण्डाल	:	छद्म वेशमे कूकुर लेने इन्द्र।
कृष्ण	:	विष्णुक अवतार।

[स्थान : मरुभूमि । समय : मध्याह्न । दूर-दूर धरि पसरल असीम बालुकाराशिक बीच, स्थान-स्थान पर ठुठ्ठ बबूरक गाछ । मध्याह्न कालक प्रखर सूर्यक किरणसँ उत्तप्त धरती । मुनि उत्तंक अपन शिष्यक संग अबैत छथि । कुन्द कुसुम सन उज्ज्वल जटा, बल्कल धारण कयने, हाथमे एक दंड, कमंडलु । मुख-मण्डल श्रम ओ स्वेद-बिन्दुसँ भरल, तीव्र गतिसँ श्वास चलि रहल छनि । शुष्क ओष्ठ ओ चंचलतासँ बोध होइछ जे ओ पिपासासँ आकुल छथि । हुनक पाछाँ युवा ब्रह्मचारि-वेशमे शिष्य भद्रमुख छथिन । हुनको हाथमे कमंडलु छनि । ओहो गुरुवते श्रान्त छथि ।]

उत्तंक : ओह, आब कतेक दूर अछि मरुभूमि पार करब ?

भद्रमुख : गुरुदेव, एखन सप्त योजन धरि हमरा सभकेँ चलबाक अछि।

उत्तंक : आब नहि चलि सकब । आह, एतेक उत्ताप ! बूझि पड़ैत अछि जेना प्रलयकालीन सूर्यक प्रचण्ड किरण आइये अवतीर्ण भऽ जायत । पृथ्वी यज्ञक हवन-कुण्ड जकाँ प्रज्वलित भऽ रहल अछि आ ओहिमे सम्पूर्ण सृष्टि हवि बनि रहल अछि ।

भद्रमुख : मरुभूमिक धूलिकणसँ भरल ऊष्म वायुक प्रबल वेगमे पड़ि ई शरीर सिद्ध भऽ रहल अछि । गुरुदेव ! बुझि पड़ैत छैक जेना सम्पूर्ण वायुमंडलमे सूर्य चूर्ण भऽ कऽ विकीर्ण भऽ गेलैक अछि ।

उत्तंक : भद्रमुख ! ओ जे वात्याचक्र उठि रहल छैक से तँ जेना हुताशक धधरा जकाँ बूझि पड़ैत छैक, जेना आकाशकेँ स्पर्श करबाक लेल जाइत हो । भद्रमुख ! आह, आब पिपासासँ त्राण नहि भेटि सकत । जल चाही, जल ! जीवन रक्षाक लेल चुरुओ भरि जल चाही ।

भद्रमुख : क्षमा हो गुरुदेव ! कमंडलुक जल तँ समाप्त भऽ गेलैक । जे कनेक छलैक से एहि ऊष्णतामे वाष्पीभूत भऽ गेलैक ।

उत्तंक : बिन्दुओ भरि जल नहि छैक ?

भद्रमुख : (कमंडलु देखबैत) नहि छैक गुरुदेव !

उत्तंक : (निराश भऽ) हमरा ज्ञात छल जे ओहि मे जल नहि छैक । किन्तु एकटा भ्रम छल । ओहि भ्रममे कनेक तृप्ति जकाँ भेटल छल ।

भद्रमुख : (एक दिस दूर दृष्टि दऽ कऽ) गुरुदेव ! बैह देखल जाओ, दक्षिण दिशामे वृक्षसँ कनेक हटि सरोवर सन बूझि पड़ैत अछि । आह, (प्रसन्न भऽ कऽ) केहन तरंगित भऽ रहल छैक स्वच्छ जलराशि ! गुरुवर, हम एखने जल अनैत छी (उद्यत होइत अछि) ।

उत्तंक : भद्र, ओ जल नहि थिकैक । जेना संसारमे माया छैक-असत्य,

अस्तित्वहीन तथापि मानव ओकरा पाछाँ भ्रान्त भेल रहैत अछि, तहिना ई थिकैक मरुभूमिक माया, मरीचिका। बालुका परसँ परावर्त्तित किरणसँ ओ कम्पायमान बूझि पड़ैत अछि।

भद्रमुख : आचार्य.........!

उत्तंक : तथापि अहाँ जा सकैत छी। कमसँ कम अहाँक आगमन-काल धरि तँ अलक आशा बनल रहत ! ओहो आशा तँ कनेक सान्त्वना दऽ सकत। किन्तु, मन राखब, जाहि ठामसँ हमर शरीरकम्पायमान दृष्टिगोचर हो, ओहि ठामसँ आगाँ नहि बढ़ब।

भद्रमुख : आचार्यक जेहन आज्ञा। (जाइत अछि।)

उत्तंक : (आकुल होइत) एहि निर्मम प्रकृतिक नियामक भगवान कृष्ण ! महाभारतक युद्ध समाप्त कऽ कऽ द्वारका-गमनक पथमे रही, ओहि समय दर्शन भेला पर अहाँ स्वयं वर देने रही जे जखन पिपासु होयब तँ जल उपस्थित भऽ जायत। आइ ओ अवसर उपस्थित भऽ गेल अछि, तैयो अहाँ मौन छी ? भगवान वासुदेव ! आउ आ अपन वचन पूर्ण कऽ जाउ।

(वन्दनामे मस्तक नत भऽ जाइत छनि।)

[किछु क्षणक उपरान्त एक चाण्डालक प्रवेश–मलिन, घृणित अर्द्धनग्न शरीर। जीर्ण-शीर्ण, मैल, फाटल अधोवस्त्र। हाथमे तीन-चारि शिकारी कुकुरक रस्सी धयने। कान्हपर धनुष ओ तूणीर, पीठ पर चर्म-मशकमे जल भरल, ओहिमे डोरीसँ लटकैत बाँसक एक चोङा।]

चाण्डाल : महामुनि ! अपनेक मुखमण्डलपर जे अस्त-व्यस्तता अछि, जे आकुलता अछि से सिद्ध करैतअछि जे अपने पिपासासँ व्यग्र छी।

उत्तंक : पिपासा... ...पिपासा ! एहि निर्जन मरुभूमिक एकेटा वस्तु मात्र सत्य छैक, पिपासा। एहि ठाम एहि पिपासाक महाजाल-सँ केओ निस्तार नहि पाबि सकैछ,......ओह ! कतेक दूर चल गेलाह भद्रमुख !

चाण्डाल : एहि जनविरहित प्रान्तरमे अपने सनतेजवान् पुरुषक दर्शनपाबि हम कृतार्थ भऽ गेलहुँ। महामुनि, अपने एहि भूमिक महामान्य अतिथि छी, तेँ एहि तुच्छ सेवकके सेवा करबाक अवसर देल जाओ। (मशकसँ चोङामे पानि ढारि उत्तंक दिस बढ़बैत) जल ग्रहण कयल जाओ महामान्य !

उत्तंक : (ओकरा दिस ताकि) तों......तों के छह एहि विचित्र वेशमे ?

कतऽसँ ई जल लऽ कऽ उपस्थित भेलाह अछि ?

चाण्डाल : पंचम वर्णक एक साधारण मृगयाजीवी ! वन्यजन्तुक अहेर कऽ अपन उदरपूर्त्ति करैत छी। मृगयाक विभिन्न आवश्यक वस्तुक संग जलो रखैत छी संगमे। एम्हरसँ जाइत अपनेकेँ व्यग्र देखल।......जल लेबामे अपने किएक तारतम्य कऽ रहल छी ? लेल जाओ, कंठ सिक्त कयल जाओ।

उत्तंक : चाण्डाल ! तोँ चाण्डाल छह ! हम तोरा हाथक जल पीब ? जल बिना तड़पि-तड़पि कऽ मरि जायब से स्वीकार, मुदा तोरा हाथक जल पीबि कऽ जातिच्युत नहि होयब, संस्कार भ्रष्ट नहि होयब।

चाण्डाल : व्यर्थ शंका करैत छी अपने। अपनेक तपस्याक ज्योतिमे विश्वक समग्र मलिनता जरि जा सकैत अछि आ हम तँ हमहीँ छी। यदि एक बेर, एको बुन्द जल हमरा हाथसँ अपने ग्रहण कऽ लेब तँ हमर सम्पूर्ण कुलक उद्धार भऽ जायत। कृपा करू, हमर आतिथ्य स्वीकार करू।

उत्तंक : तोँ अस्पृश्य भऽ कऽ एक ब्राह्मणसँ आग्रह कऽ रहल छह ? साधारण शिष्टाचारक सीमाक उल्लंघन कऽ कऽ धृष्टताक परिधिमे प्रविष्ट भऽ रहल छह ? शास्त्रमे जकरा स्पर्शो, करबाक निषेध छैक, तकर छुइल जल कोना ग्रहण करू ?

चाण्डाल : अपने तँ महान ज्ञानी छी ! तथापि एक बात अवश्य कहि सकैत छी जे हमहूँ मनुष्ये छी। प्रत्येक मानवक धमनीमे एके रंगक रक्त प्रवाहित होइत छैक। एके रंग क्षुधा, पिपासा तथा प्रसन्नता होइत छैक। अपने अनुभव करी वा नहि करी, मुदा हम अनुभव कऽ रहल छी जे मृगयामे दौड़ैत-दौड़ैत जहिना हम जल पीबाक लेल आकुल भऽ उठैत छी, तहिना अपनहु अकुलाइत होयब। की ई असत्य थिकैक मुनिवर ? की एखनो अपनेक अन्तर्मन एहि मशकमे भरल जलकेँ लुब्ध आँखिएँ नहि देखि रहल अछि ? की एक अदम्य तृष्णा नहि जागि गेल अछि?

उत्तंक : तोँ सत्यसँ दूर नहि छह।

चाण्डाल : मनुष्यक अन्तर्वेदनाक अनुभूति एक मनुष्ये कऽ सकैत अछि। ताहूमे ओ मनुष्य जे साधारण मानवत्वक धरातलसँ ऊपर उठि महामानवक पथ पर जा रहल अछि। ओकरामे तँ सम-भावक

उदय होयबाक चाही ।

उत्तंक : आगन्तुक ! एक साधारण मनुष्यक विचार ओ विवेकसँ परि-प्लावित रहितो तोहर जल लेबासँ विवश छी हम। युग-युगक सामाजिक आ शास्त्रीय परम्पराक विरुद्ध हम चलिये कोना सकैत छी ?

चाण्डाल : मुनिवर ! हम जातिसँ अवश्य अस्पृश्य छी, मुदा जल नहि अपावन अछि। गंगाक जल भ्रष्ट नहि होइत छैक। गंगामे जा कऽ समग्र कलुष प्रवाहित भऽ जाइत छैक। अपनेक तपस्या-रूपी गंगाक स्पर्श भैयो कऽ ई जलअपावन रहि जायत ? पीबिकऽ देखियौक, एहिमे अमृतक स्वाद, आनन्दओ तृप्ति भेटत।

उत्तंक : चाण्डाल ! तों एतेक हठधर्मी किएक भेल जाइत छह ? एना दुराग्रह किएक कऽ रहल छह ? एक तपस्वीक वचनक उपेक्षा किएक ?

चाण्डाल : एकटा मानव-धर्मक आह्वान छैक तें मुनिवर ! संभव छैक, अपनेक परीक्षे भऽ रहल हो ? अपनेक साधना, तपस्या ओ व्यक्तित्वक आधार कतेक गंभीर, कतेक उदात्त, कतेक विशाल अछि तकरो परीक्षण तँ भऽ सकैछ ?

उत्तंक : (क्रुद्ध भऽ कऽ) हमर परीक्षा ? ··· हमर हरीक्षा !! ··· एक चाण्डाल द्वारा ऋषि उत्तंकक तपोबलक परीक्षा!!! एक ब्राह्मणक अपमानक कुफल प्रत्यक्षे भेटि जयतह ।
(चाण्डाल माथ झुका लैत अछि। दोसर दिससँ कृष्ण अबैत छथि। पीताम्बर धारण कयने, माथ पर मयूर-पाँखिक पंक्ति, आजानु पुष्प-माला लटकैत—मुखपर मुसकी, मुदा गंभीर व्यक्तित्वक आभास भेटैत।)

कृष्ण : शान्त महामुनि ! क्रोध अहाँके शोभा नहि दैत अछि।
(एहि बीच चाण्डाल जेम्हरेसँ आयल छल तेम्हरे चल जाइत अछि।)

उत्तंक : (आओर क्रोधित होइत) ओह कृष्ण ! अट्ठारह अक्षौहिणी मानव-समुदायके अपन कुटिल नीतिसँ युद्धक अग्निमे झोंकि कऽ हमरोसँ कुटिलता देखा रहल छी ? यैह थिक अहाँक वचन ? कहाँ अछि अहाँक वरदान ? मिथ्यावादी! अविश्वासी! ब्राह्मणक अपमानकर्त्ता ! अहूँके एहि चाण्डालक संग भस्मीभूत कऽ दैत छी। (अपन कमंडलुसँ जल ढारबाक प्रयास करैत छथि।)

कृष्ण : व्यर्थ अछि ओहि रिक्त कमंडलुसँ जल ढारब। ओहिमे जल

नहि अछि जकरा अभिमन्त्रित कऽ शाप दऽ सकब। मुनिवर ! यदि ओहिमे जल रहैत तँ ताहिसँ दू व्यक्तिकेँ अभिशप्त कऽ कऽ प्राणापहरणसँ बेसी उचित, उपयोगी कार्य होइत एक व्यक्तिक प्राणरक्षा। महान् व्यक्तिक अलंकरण क्रोध नहि, क्षमा होइत छनि। उदात्त ओ उदार भावना मानवकेँ महामानवक सिंहासन पर बैसा दैत छैक।

उत्तंक : वासुदेव……!

कृष्ण : युग-युगक कठोर साधना ओ तपस्या कोन कार्यक, यदि मनुष्य मनुष्य नहि बनि सकल ? यदि अपन अन्तरमे सद्भानुभूतिक भागीरथी नहि बहा सकल ? यदि अपना हृदयक दानवी भावनाक दमन कऽ कऽ देवत्वक स्थापना नहि कऽ सकल।

उत्तंक : क्षमा हो वासुदेव, क्षमा ! पिपासाक आकुलता ओ तपोबलक अभिमानक कारणेँ विवेक हमर संग छोड़ि देने छल। हम अन्ध भऽ गेल छलहुँ, दृष्टिहीन,ज्योतिहीन ज्ञानहीन।

कृष्ण : द्विजवर, हमर कथन असत्य नहि अछि। वस्तुतः हमरे आग्रह पर ओ व्यक्ति अहाँकेँ जल पीबाक आग्रह कयने छल।

उत्तंक : लीलाधर, हम तँ साधारण मनुष्य छी। की एहि तरहेँ हमर परीक्षा लेब उचित छल ? एतेक विचार तँ अवश्य करितहुँ जे एक ब्राह्मण पियाससँ मरि जायत मुदा चाण्डालक हाथक जल नहि पीउत ? युग-युगसँ बनल जातिगत संस्कार ओकरा से करऽ देतैक ? भगवान ! अहाँ द्वारा प्रेषित ओहि व्यक्ति एवं जलक अपमान अज्ञानतावश निरीह भावेँ भऽ गेलैक। हम निरपराध छी। (पाछाँ घूमि, चाण्डालकेँ नहि देखि) अरे ! ओ तँ देखि नहि पड़ैत अछि ! विलुप्त भऽ गेल !

कृष्ण : शापक ज्वालामे भस्म होयबाक लेल ठाढ़ कोना रहैत ?

उत्तंक : हम जा रहल छी। विश्वक जाहि कोनो कोनमे ओ भेटत, ओहिमनुक सन्तानसँ क्षमा माङि ओकरप्रदत्त जलअवश्यपीब।

कृष्ण : ओकरा आब ताकि नहि सकब मुनिवर ! ओ भेटि नहि सकैत अछि। ओ स्वयं इन्द्र छलाह।

उत्तंक : देव…… राज……इन्द्र !!! (आश्चर्यक भाव)

कृष्ण : हँ मुनिवर ! हुनका हाथमे साधारण पानि नहि, स्वर्गक अमृत छलनि, अमृत !

उत्तंक : पुरुषोत्तम, मानस परसँ एकटा आवरण हटल जा रहल अछि, जकर प्रकाशमे पहिल वस्तु दृश्यमान भऽ रहल अछि जे हृदयक सम्पूर्ण स्नेह ओ सद्भावनासँ देल साधारणो मनुष्यक जलमे अमृतक स्वाद ओ गुण रहैत छैक ।

कृष्ण : अहाँके पिपासा आक्रान्त कयने छल, ई देखि हम देवराजसँ आग्रह कयलियनि जे ओ अहाँके अमृत पियाबथि । हुनक उत्तर भेटल जे मनुष्यके अमृत नहि भेटि सकैछ । कोनो आन वस्तु पियबियौन ।

उत्तंक : तँ की ओ इन्द्र नहि छलाह ? हुनका हाथमे अमृत नहि छलनि ?

कृष्ण : इन्द्र छलाह । हुनका हाथमे अमृते छलनि । अहाँके साधारण जल कोना दितहुँ पीबाक लेल । तेँ बहुत आग्रह कयलियनि तँ ओ चाण्डाल बनि कऽ पानिक रूपमे अमृत पिआयब स्वीकार कयलनि । कहलनि, यदि उत्तंक नहि पीताह तँ नहि पिअयबनि।

उत्तंक : चाण्डालो तँ एहि अनन्त सृष्टिक अंगे थिक । ओहि मानव-सन्तानक, एक मानव-सन्तान भऽ अनादर कऽ कऽ एक महान, अक्षम्य अपराध कयलहुँ हम ।

कृष्ण : मुनि, हम इन्द्रक कथन स्वीकार कऽ लेलहुँ जे अहाँ तँ महान ज्ञानी छी, महात्मा छी, उदारचेता छी । अहाँ तँ ऊँच-नीच, अवर्ण-ससर्ण, निज-अन्यक भावनासँ बहुत ऊपर उठि गेल होयब । अहाँक लेल सम्पूर्ण विश्वे अपन कुटुम्बक परिसीमामे आबि गेल होयत । अहाँ ओहि चाण्डालक हाथक जल ग्रहण करबामे संकुचित नहि होयब । मुदा हमर धारणा सत्य सिद्ध नहि भऽ सकल ।

उत्तंक : वासुदेव ! आइ हमरा जीवनमे महान् सत्यक उद्घाटन भेल अछि, युग-युग धरि एहि सत्यक रक्षा करैत रहब ।

(कृष्णक पयरपर खसैत छथि ।)

कृष्ण : उठू मुनिवर, भद्रमुख जल लेने आबि रहल छथि ।

(अन्तर्धान भऽ जाइत छथि ।)

भद्रमुख : (जल लेने प्रवेश कऽ उत्तंकके पड़ल देखि) अरे ! गुरुदेव पिपासासँ आकुल भऽ मूर्च्छित भऽ गेलाह। आह, गुरुदेव! जलपीयल जाओ।

[उत्तंक चौंकि उठैत छथि, चारूकात चकित दृष्टिसँ ताकि भद्रमुखक हाथसँ कमंडलु लऽ लैत छथि । एक बेर आकाश दिस ताकि जल पीबऽ लगैत छथि ।)



चानक बसात

पात्र-परिचय

प्रमुख-पात्र

धीरेन्द्र : अध्ययन सम्पन्न कऽ गाम आयल नव विचारक युवक ।

किसुन : धीरेन्द्रक मित्र, रुचिएँ चित्रकार ।

चारुचन्द्र : चंचल ओ उत्साही प्रकृतिक किशोर छात्र ।

राघो : चालिस-पैंतालिस वर्षक सुधबलेल ग्रामीण।

भोलाझा : गामक सामन्ती मनोवृत्तिक, रूढि ओ परम्परावादी वयोवृद्ध धनिक ।

पंचू : पचपन वर्षक लंठ, फरेबी आ झगड़ाउ व्यक्ति तथा भोलाझाक मित्र ।

दरोगा : थानाक पुलिस-अधिकारी ।

अन्य-पात्र

बिलटा :

युवक :

किशोरछात्र :

ग्रामीण :

प्रथम दृश्य

[गामक सार्वजनिक स्थान । धीरेन्द्र चिन्तनशील मुद्रासे ठाढ़ अछि । धीरेन्द्र भावुक एवं सचेत नवयुवक अछि । अध्ययनशीलताक आभा एखनो ओकरा मुखमंडल पर व्याप्त छैक । हाथमे एकटा एकबार आ कोनो पोथी छैक । नेपथ्यमे मध्यम स्वरेँ करुण वाद्य ध्वनि होबऽ लगैत छैक । धीरेन्द्रक आगाँ दऽ कऽ एकटा पाँच–छओ बरखक इलटल-बिलटल छओँड़ा हाथमे टूटल मडुआक रोटी लेने चल जाइछ ।]

धीरेन्द्र : रे रे बिलटा······(ओ छओँड़ा बिनु सुननहि दौड़ल चल जाइछ ।) यैह थिक भारतक लोक ! यैह थिक भारतक गाम ! भूख आ दरिद्रताक गाम ! अशिक्षा आ अन्धविश्वासक गाम ! गन्दगी आ गन्धसँ भरल गाम · ढहल दलान, खसल घर, टूटल टाट, खँघरल बाट, कंकाल बनल मनुक्ख की फेरसँ नहि बनाओल जा सकैत छैक ? की ओकर नव निर्माण सम्भव नहि छैक ? (कनेक रुकि) सम्भव छैक । अवश्य सम्भव छैक । दृढ़ संकल्प, आस्था आ विश्वासक संग देशक युवा पीढ़ी आगाँ बढ़य तँ सब किछु सम्भव छैक । अवश्ये एहि गाममे चानन छिलकतैक । आशा आ विश्वासक पताका फहरयतैक भारतक तिरंगा जकाँ ···अवश्य फहरयतैक । भारतमाता ग्रामवासिनीक आँचर मलिन आ फाटल नहि रहतनि । हे ग्राम्य भारती ! हम आबि रहल छी, हम आबि रहल छी अहाँक सेवक बनि कऽ । हम आबि रहल छी··· ।

[बजैत एक दिस चल जाइत अछि । ओकर बजबाक प्रतिध्वनि सुनाइत रहैत अछि । दोसर दिससँ भोलाझाक प्रवेश होइत अछि । श्वेत केश, कपारमे त्रिपुण्ड ओ सिन्दूरक ठोप, ठेंठ धोती ओ गोल गला गंजी पहिरने, कान्ह पर गमछा ओ हाथमे एकटा ठेङा लेने ।]

भोलाझा : हऽ हऽ ! जीबी तँ की की ने देखी ! गाममे एते दिन लोक मूर्ख छल, गदहा छल, अपचेष्ट छल। मुदा आब ? आब गामक उद्धार होयतैक। गाम तरि जायत ‥। एह ! गामसँ धर्म-कर्म गेल आ आब नव नव शास्त्र-पुराण बनि रहल अछि जाहिमे लिखल ..।

राघो : (प्रवेश कऽ) की लिखल छैक काका ? एहि बेर बिआहक दिन नहि छैक की ? अतीचार पड़ैत छैक ?

(राघो चालिस-पैंतालिस वर्षक जवान अछि, कमयनिहार-खयनिहार, लाइ-लपटसँ दूर मुदा गामक घटना सभक प्रति साकांक्ष।)

भोलाझा : आबह, आबह। कोमहरसँ आबि रहल छह ?

राघो : की लिखल छैक से कहियौक पहिने। तखन हम कहब जे कतऽसँ अबैत छी।

भोलाझा : आहि ! देखैत नहि छहक ? ई सब जे चारूकात भऽ रहल छैक से सब नवके शास्त्र-पुराणसँ ने भऽ रहल छैक ? आ जकर व्यास छथुन धीरेन्द्र। कनेक पढ़लक ने, की भऽ गेल बृहस्पति सन पण्डित। ककरो किछु गुदानिते ने छैक। आ गामक छओँड़ा सब ओकरा संग बताह भेल जा रहल अछि। सबकेँ कूकुर-बानर बना कऽ छोड़त ई धिरेनमा।

राघो : से की ? धीरेन की कयलक ? आ हा हा ! ओ बेचारा तँ बड़ सद्द लोक अछि। कालिह खन हमर माय इनार परसँ पानि आनऽ गेलि रहय। घैल लऽ कऽ थाहि-थाहि कऽ चलैत देखलकैक तँ अपनेसँ घैल लऽ कऽ हमरा घैलची पर राखि आयल। आ, काका ! की कहू ? ओकर प्रकृति देखि कऽ तँ हमरा छगुनता लागि गेल। किछु फुरबे ने करय। कहैत छी, बीच आङनमे ठाढ़ छल आ किदन हरलैक-ने-फुरलैक, कोनटामेसँ फानि कऽ कोदारि उठा लेलकैक आ एँठारकेँ साफ करऽ लगलैक। कहैत छी काका ! हमरा तँ लाजसँ भेल जे गड़ि जाइ।

भोलाझा : हौ राघो ! तोँ तँ माउगि ने पुरुख बलगोबिना छह । गैयो हूँ, बछड़ुओ हूँ । कनेक घैल पहुँचा देलकह, एँ ठार पर कोदारि भाँजि देलकह, तँ फुच्च भऽ गेलाह आ लगलाह ओकर गुणक बखान करऽ, मिचरा-मिचरा कऽ, जेना तड़िपिब्बा सब चिखना मिचरा-मिचरा कऽ खाइत ताड़ीक गुणक गान करैत अछि ।

राघो : से आब अपने श्रेष्ठ छी काका ! जे कही, मुदा ओ तं हमरा देवता बूझि पड़ल । एहन सहमिल्लू स्वभाव बड़ कम व्यक्तिमे होइत छैक ।

पंचू : (खिसिआयल मुद्रामे प्रवेश करैत अछि ।) हँ, अहाँकेँ किएक ने देवता बूझि पड़त । जकरा भोगऽ पड़ैत छैक तकरा ।

(राघो आ भोलाझा चकित भऽ तकैत अछि ।)

भोलाझा : की हौ पंचू ! की भेलह तोरा ? किएक एना खिसिआयल छह ?

पंचू : होयत की ? काल्हि खन खेतमेसँ धीरेन हर खोलबा देलक । हम हरबाहकेँ कहि आयल छलिऐक जे चारिम चासकेँ समारि कऽ चौकी दिहैक । से धिरेनमाक डऽल देखू जे हट्ठासँ बड़द खोलि कऽ बैला देलक । माँझ आङनसँ कनिएँ बेसी छाहरि खसल छलैक तखने

भोलाझा : किएक खोलि देलकह ? कोन हक छैक ओकरा ? बाह रे बाह ! ई कोन बात भेलैक ?

पंचू : ओहिना, जबरदस्ती । की, तँ हम एम. ए. पढ़ि कऽ आयल छी, तेँ । अगड़ाहीक धनछूहा जकाँ करैत अछि, तँ से भेंट भऽ जयतैक । जे धधाइत अछि से मिझाइतो अछि जल्दी ।

राघो : पंचू भाइ ! से नहि कहक । हम अपना खेतमे गऽर टोकि कऽ ओही ठाम कोइलाथानक पीपर तर सुस्ताइत रही । हरबाह पिआसेँ लहालोट होइत छलैक तैयो ओ चंडलबा हर

खोलबाक नाम नहि लैत छलैक। तखने साइकिलसँ धीरेन अबैत छल। वैह कहलकैक जे हर खोलि दहक आ घर जाह। हरबहबा अबिते ने छलैक तँ धीरेन कहलकैक जे बरु बेरुक पहर आबि कऽ समारि कऽ चौकिया दिहक। तेँ हरबाह हरखंडा आ पालो खेतेमे छोड़ि देलकैक आ बड़द हँकने आयल।

भोलाझा : हौ राघो! तोहर बात सदिखन सहलोले जकाँ होइत छह। (पंचू दिस उन्मुख भऽ) हँ पंचू! आइ की भेलह जे एतेक खिसियायल छह?

पंचू : भेल की? सब चौपट्ट भऽ गेल।

भोलाझा : से की?

पंचू : अडंडक डंड लागि गेल। थोड़ेक काल पहिने बचनूके धिरेनमा कहलकैक जे आङनसँ एकलोटा पानि लाबह। बचनूके भेलैक जे अपने पिउत मुदा ओ भरलो लोटा लऽ कऽ रमजीयाकेँ दऽ देलकैक।

भोलाझा : एह, राम कहू! छीया! छीया!

पंचू : आ ओ लंगट रमजीया बुझलक, यैह दाओमे दाओ अछि। घट दऽ मूँहमे लगा देलक। भ्रष्ट भऽ गेल लोटा…।

राघो : तँ ओहिमे की लागल छैक? आगिमे झरका दिहक। गंगा-जलसँ सिक्त कऽ दिहक। बस भऽ जयतैक पवित्र! तखन कोन हर्ज ओहिमे पानि पीबामे? धातुक वस्तु तँ छूति नहि जाइत छैक।

पंचू : चुप रहह! तोरा एहिना रहैत छह।

भोलाझा : से नहि बुझैत छहक? जेमहर देखी खीर, तेमहर बैसी फीरि। की हौ राघो! एखन तँ तोहर महादेव ढरल छथुन। धीरेन्द्र पर?

पंचू : हँ, हँ, किएक नहि? जखन राघव लला छथि सहाय, तखन परवाहे की?

भोलाझा : हौ पंचू ! हमर तँ देह जरि कऽ भुरकुस्सा भऽ रहल अछि।

पंचू : बाते तेहन छैक तँ होउक नहि, हमर जी तँ लोहछल अछि। जखनसँ लोटाक बात कानमे पड़ल अछि, मोनमे होइत अछि जे रमजीयेकेँ उनटा बान्ह बान्हि कऽ मारि जूतासँ सोझ कऽ दी। दालकिए छूटि जाय ओकर।

भोलाझा : ई सब सहकौनाइ भेलैक। एकरे कहैत छैक आङुर धरैत-धरैत गट्टा धरब।

पंचू : आ एहि बाबूकेँ तँ हम देखबे नहि कयलियनि अछि, ने तँ सब कबिलतइ घुसाड़ि दितियनि। सबँ आरसी-फारसी सुझा दितियनि···।

राघो : (तमाकुल चुना कऽ मुँहमे धरैत) काका ! हम आब जाइत छी। अहाँ सब अपन बकतूति करैत जाउ···। हमरा बुतेँ ई दँतकथा नहि सूनि होयत। जकरा लय चोरि कयलहुँ सैह कहय चोरबा। उपकारक चुपकार एकरे कहैत छैक। ओ अहाँ सभक, गामक लोकक भल करैत अछि आ अहाँ सभ ओकर ···।

भोलाझा : जाह जाह, अपन काज देखह गऽ।

पंचू : तोँ जते जल्दी जाह, तत्ते नीक।

राघो : जाइते छी की ! (जाइत अछि।)

भोलाझा : ई सब देखने छलहक, पंचू ? आब ग्राम-सुधार होयतैक। एतेक दिन हम-तोँ मूर्ख छलहुँ, बिगड़ल छलहुँ, आब मनुक्ख होयब। मनुक्खक रहन-सहन, बोली-बानी, चालि-ढालि सीखब।

पंचू : हम ई फरफँसी गाममे नहि चलऽ देबैक। सनातन धर्म एखन धरि नहि मुइलैक अछि। जिबिते छैक। ने कोनो युगमे एकरे, हारि भेलैक अछि ने होयतैक।

भोलाझा : सैह तँ कहैत छियह जे पहिने पूबे-पछिमे बसात बहैत छलैक,

आब उतरे-दछिने बहतैक। पितृपक्षमे नोत खोअयबाक होअइ तँ नोति दिहक रमजीयाकेँ। बस, सातो पुरखाक उद्धार। उनटा बसात बहने तँ एहिना होयतैक।

पंचू : होउ, होउ। से जमाना एखन नहि अयलैक अछि। भने सीताराम झा गबैत रहथु 'बहि रहल आइ उनटा बसात'। मुदा एहि गाममे उनटा बसात नहि बहऽ देबैक।

भोलाझा : हौ ई धिरेनमा नित्तहु एकटा कऽ नव फसादि बेसाहने जा रहल अछि। ताल-तमासा लागत एहि गाममे। किदन कहैत छैक जे भरंटी सो होयतैक आ से तमासा देखि कऽ सौंसे गाम स्वर्ग भऽ जयतैक। तमासा कयनिहार सब कहैत छैक जे ओहिसँ समाज-सुधार होयतैक। हेमन्तिकेँ उड़ाहल जयतैक, ओहिमे पुरैनि रोपल जयतैक। माउगि सभक लेल उद्योग केन्द्र खोलल जयतैक। चरखा चलतैक, करघा बैसतैक। गूँह-गनौड़केँ काटि-काटि कऽ फेकल जयतैक।

पंचू : आरो की होयतैक काका? बाटक दुनू कात जे धिया-पुता सब साँझ सूति परात ऊठि मगजी लगबैत रहैत छैक ताहि ठाम आब चानन छिलकतैक।

धीरेन्द्र : (प्रवेश कऽ) अवश्य छिलकतैक चानन। काका! एखन ओमहर दऽ अबैत छी तँ नाक नहि देल जाइत अछि। घास लऽ कऽ अबैत छी पैर तरमे फच दऽ पड़ि जाइत अछि। की, ई सब नीक लगैत अछि अहाँ सबकेँ? असर्ध नहि लगैत अछि? मुदा विश्वास राखू, एहन ठाम लोक ओछाओन ओछा कऽ विश्राम कऽ सकत।

भोलाझा : (नाक मूनि, छीया! एहनो कथा लोक बाजय? ओहि निरघिन स्थानक नामे सूनि गन्ध लगऽ लगैत अछि (नाक फकड़ा लैछ।)

धीरेन्द्र : चानने नहि, केसर-कस्तूरी पसरल रहतैक सौंसे गाममे। पोखरिमे जे पाप जकाँ कुम्हीं, करमी आ कदै पसरल अछि तकरा बदलामे हरियर-हरियर पुरैनिक पात पसरल रहत आ

तकरा बीचमे कमल-कुमुदिनीक फूल भकरार भेल फुलायल रहत। एकोटा फूल तोड़ि कऽ भगवतीकें चढ़ा देबनि तँ बाबा! हम कहैत छी जे भगवती अवश्य प्रसन्न होयतीह। अपनो मोन अवश्य तृप्त भऽ जायत।

पंचू : काका, खाउ मनमोदक (आँखि मूनि) एह, आनन्द आबि गेल! आनन्द! आनन्द! परमानन्द!

धीरेन्द्र : परमानन्द तँ तखन आओर होयत जखन गामक विधवा-मसोमातकें ककरो आगाँ हाथ नहि पसारऽ पड़तैक। अपन परिश्रमक मूल्यसँ अन्न-वस्त्रमे स्वावलम्बी भऽ जायत। गामक गरीब लोककें आमदनीक किछु साधन भेटि जयतैक। सेर-दू सेर अन्न लय वा दू टा टाका लेल खेखनिञा नहि करऽ पड़तैक। बेगारी नहि करऽ पड़तैक। गारि-गंजन नहि सूनऽ पड़तैक। बाबू-भैयाक पमोजिम नहि करऽ पड़तैक।

भोलाझा : एहिना सपनाइत रहह आ सपनामे मनमोदक खाइत रहह।

धीरेन्द्र : बाबा! ई अकर्मण्यक मनमोदक नहि, कर्मठ योगीक साधनामय स्वप्न थिक जे साकार होयतैक।

पंचू : सपनामे जतेक बड़बड़यबाक होअह से बड़बड़ाह। मुदा गामक संस्था बिगाड़ऽ चाहबह से नहि चलतह।

भोलाझा : गामक युवक सबकें लुच्चा-लफंगा बना रहल छह से सह्य नहि कयल जयतह। कान खोलि कऽ सूनि लयह धीरेन्द्र! हम तोरा लोकनिक मन मौजी नहि चलऽ देबह। गामक जे सामाजिक परम्परा सनातनसँ चल अबैत अछि तकरा बदलबाक ककरो ने अधिकार छैक ने सामर्थ्य।

धीरेन्द्र : बाबा! युगक प्रवाहकें रोकबाक सामर्थ्य ककरोमे नहि छैक। जकरा सूर्यक प्रकाश नहि सोहाइत छैक से अपन आँखि मूनि लेअओ। सूर्यकें उगबाक छनि तँ उगबे करताह। हुनका के रोकि सकैत अछि?

(आवेगमे धीरेन्द्र प्रस्थान करैछ। पर्दा खसैत अछि।)

द्वितीय दृश्य

[समय : प्रातः काल । धीरेन्द्रक कोठली । टेबुल पर किछु किताब, कापी आ जरैत लालटेम । देबाल पर एक दिस भारतक एवं विश्वक नक्शा टाङल । दोसर दिस देशक नेता सभक फोटो टाङल । टेबुलक सामने महात्मा गान्धी आ सन्त विनोबाक फोटो टाङल । कोठलीक दोसर भागमे एकटा चौकी पर ओछाओन ओछाओल । धीरेन्द्र टेबुल पर झुकि कऽ लिखबामे तल्लीन अछि । टेबुलक एक कातमे टाइमपीस खट-खट करैत चलि रहल अछि । धीरेन्द्र एक नजरि घड़ी पर दैत अछि आ फेर लिखऽ लगैत अछि । एतबेमे ढट्टावला धोती ओ गंजी पहिरने छब्बिस—सताइस वर्षक स्वस्थ ओ सुदर्शन युवक किसुन प्रवेश करैत अछि जकरा अंग-अंगसँ विश्वास झलकि रहल छैक ।]

किसुन : धीरेन ! सुप्रभातम् !

धीरेन्द्र : (ऊठि कऽ स्वागत करैत) सुप्रभातम्, किसुन !

किसुन : धीरेन भाइ ! एखन की भोरे-भोरे उठि कऽ बैसि गेलह लिखऽ ? कनेक आरामो तँ करह । लोक परीक्षा दऽ कऽ गाम अबैत अछि तँ विश्राम करैत अछि, आ तों छह जे एखनो पढ़नाइ-लिखनाइमे लागल छह, तनबे नहि । गामक काजमे दिन-राति फिरीसान भेल रहैत छह ······ (जरैत लालटेम दिस देखि) अरे ! भोरुकीए रातिसँ लिखबामे भिड़ल छह की ? आ कि भरि राति लिखितहि रहलह ? एखन धरि लालटेमो जरितहि छह।

(हाथ बढ़ा कऽ किसुन लालटेम मिझा दैत अछि ।)

धीरेन्द्र : (चौंकैत) ओह ! बिसरि गेलिऐक मिझौनाइ । कहू, अनेरे ने जरैत रहलैक ! (अङैठी कऽ आश्वस्त होइत) अच्छा ! कहह । की हाल चाल छह ? सभसँ पहिने ई कहह जे चौधरी घरायन

की कहलथुन पोखरि साफ करबाक सम्बन्धमे ?

किसुन : दूर ! जतेक गोटे, ततेक रंगक बात । केओ एक मुँह भऽ कऽ बाजय, तखन ने ! सब, सब रंग बजैत अछि आ सभक माने एके होइत छैक ।

धीरेन्द्र : की ?

किसुन : नहि देब । अपन पोखरि अछि । ओहिमे कुम्हिएँ-करमी पोसब ताहिसँ अनका की ? ओकरा सबके शंका होइत छैक जे जलकरे छीनि कऽ पोखरि साफ होयतैक आ हेमनि उड़ाहल जयतैक ।

धीरेन्द्र : आहि रे बा ! काल्हिए भिनसरमे तँ सभ बात फड़िछा कऽ कहने छलियनि जे अहाँ सबके एको पाइ नहि लागत, ने जलकरे केओ लेत । खाली हम सब श्रमदानसँ वा चन्दासँ पोखरिके साफ कऽ देबैक । पता नहि पोखरि साफ रहलासँ हुनका लोकनिके की हानि होयतनि ?

किसुन : से काल्हि ने ? आइ नव दिन छैक, नव बात होयतैक । एहिमे आश्चर्य की ? (कने थम्हि) हौ ! गाममे एक-एक तरहक लोक अछि ! भोलाझा रातिमे जा कऽ पट्टी पढ़ा अयलथिन जे पोखरि साफ करऽ देलहक तँ ओ हाथसँ चल जयतह । ओ सभ पोखरि दखल कऽ लेतह ।

धीरेन्द्र : बुझै बिना बाउर भेल अछि । एतेक छोट बात बुझबाक लेल तैयार नहि । पोखरिक जलकरसँ ओकर सफाइ केर कोन सम्बन्ध छैक ?

किसुन : से जलकर ओकरा सभक कोना होयतैक ? सब सरकारक भऽ गेलैक अछि । आब जलकर पर सरकारक अधिकार छैक । जलकरक टाका जनताक टाका थिकैक । जँ बेसी बाधा दैत रहताह तँ देखा देबनि जे गामक पोखरि ग्रामीण लोकनिक सामूहिक सम्पत्ति कोना छैक ।

धीरेन्द्र : अच्छा, शान्त रहह । देखहक तँ की होइत छैक ? एक बेर फेर प्रयास करऽ दयह ।

चारुचन्द्र : (फाँड़ बन्हने प्रवेश कऽ) धीरू भैया !

धीरेन्द्र : (उठि कऽ) की हौ चारुचन्द्र ! की बात छैक ?

चारुचन्द्र : बात किछु नहि, मुदा कालिह अहाँके भोला बाबा कहने छलाह ने जे मन्दिरसँ पछबारी कात स्टेज गाड़ि लेब ?

धीरेन्द्र : हँ, हँ, ओ तीन टा बाँस सेहो गछने छलाह।

चारुचन्द्र : लैत रहब पसा कऽ आ ओहो देबे करताह।

धीरेन्द्र : माने की ?

चारुचन्द्र : माने की ? (दाँत पीसैत) हमरासँ पुछैत छी ? हम तँ अहाँक डरें नहि किछु कहलियनि, ने तँ हम हुनकर ब्रह्माण्ड फोड़ि दितियनि ओहि खन्तीसँ। बूढ़ भेलाह आ नाक एखन धरि लगले छनि।

धीरेन्द्र : एना नहि, चारुचन्द्र ! ओ बूढ़, प्रतिष्ठित लोक छथि। शालीनता हमरा सबके कखनहु नहि छोड़बाक थिक।

चारुचन्द्र : शालीन व्यक्तिक संग ने शालीन व्यवहार होयबाक चाही ?

धीरेन्द्र : भाइ ! बजबो करबह जे की भेलह, तखन ने ?

चारुचन्द्र : हम स्टेजक नाप लऽ कऽ दऽरी लैत छलहुँ की ओमहरसँ भोला बाबा आबि कऽ मारि अंट-संट बाजऽ लगलाह आ हमरा सबके रोकि देलनि। कहलनि, खबरदार जे हमरा जमीन पर केओ पैर देलक।

धीरेन्द्र : छोड़ि दहक। बिना स्टेजेके नाटक होयतैक। नहि एहि ठाम, दोसर ठाम। नाटक हमर सभक साध्य नहि, साधन थिक युवा वर्गके संगठित करबाक, एहि माध्यमसँ समाजके एकत्र कऽ ओकरामे परिवर्त्तनक नव चेतना भरबाक। लोक जँ एहिना बात बदलि देअय तँ की करबहक ? ओ लोकनि बात बदलैत छथि आ हमरा लोकनिके समाज बदलबाक अछि। समाजक संस्कार बदलबाक अछि। धैर्य तँ राखहि पड़त।

किसुन : तोरा तँ एहिना रहैत छह। एना मन्द पानि रहने कोनो परिवर्त्तन नहि होयतह। लोक एहिना लुलुअबैत रहतह। गामक

सब नवतुरिया हमरा सभक संग दऽ रहल अछि। एक बेर तोँ इसारा दहक तँ देखहक जे सभके एखने चहका दैत छिऐक की नहि। फसादी सबकेँ ......

धीरेन्द्र : किसुन हम जनैत छी आ तोँ हू जनैत छह जे के केहन अछि। आइ जँ ई फसादक जड़ि सब नहि रहैत तँ किसुन सन प्रतिभा-शाली कलाकार एहि देहातमे पड़ल नहि रहैत। अच्छा, कहह तँ ? तोँ तँ हमरासँ सीनियर छलह ?

किसुन : (मूड़ी झुकौने) हूँ !

धीरेन्द्र : फर्स्ट करैत छलह ?

किसुन : हूँ।

धीरेन्द्र : मुदा आगाँ नहि पढ़ि सकलह से एही फसादी सभक चक्रचालिक कारणे ने ?

किसुन : हमरासँ पूछैत छह से अपनोसँ पूछह ने जे पड़ा कऽ नहि चल जैतह तँ की एतबो कऽ सकितह ? हमरा-तोरा पढि-लिख लेने गामक धनिकाहा सभक शानमे बट्टा लागि जयबाक डर जे छलैक।

धीरेन्द्र : मुदा आगाँसँ फेर कोनो होनहारकेँ असमय मौलाय नहि पड़ैक, कोनो बापकेँ साधनक अभावमे अपन सन्तानकेँ खूब पढ़यबा-लिखयबाक सेहन्ताक मूड़ी ममोड़ऽ नहि पड़ैक, ताहि लेल हमरा सबकेँ सन्नद्ध भऽ कऽ काज करऽ पड़त। अन्हड़-बिहाड़िक झोंक सहैत बाधासँ लड़ऽ पड़त। एहि लेल लक्ष्यवेधी दृष्टि आ गम्भीर धैर्य चाही, लक्ष्यक प्रति समग्र एकाग्रता चाही। ठीक ओहिना, जेना तोँ चित्रक अंकन बेरमे एकाग्रता रखैत होयबह।

किसुन : आब ओकर की चर्च करैत छह ? चित्रकार बनबाक स्वप्न स्वप्ने रहि गेल।

चारुचन्द्र : धीरू भैया ! किसुन भाइ फूसि बजैत छथि। ई एखनो चित्र बनबैत छथि आ जखन चित्र बनबैत रहैत छथि तँ आन्हर आ बहीर बनि जाइत छथि। ने ककरो देखैत छथिन ने ककरो बात कानमे जाइत छनि। जे चित्र बनबैत छथि से ककरो देखऽ

नहि दैत छथिन। नुका कऽ राखि लैत छथि, ने तँ फाड़ि कऽ फेकि-फाकि दैत छथिन।

धीरेन्द्र : की हौ किसुन ! हमरा किएक फूसि कहलह ? हमरासँ किएक ई बात नुकौने रहैत छह ?

किसुन : धुत् ! चारुचन्द्र ओहिना गप्प हँकैत अछि।

चारुचन्द्र : नहि धीरू भैया ! हम हिनकर कय गोट चित्र देखने छियनि। एकटा चित्र छनि 'कोसी कातक गाम'। ओहिमे दू भाग छैक। एक भागमे करुणाक प्रवाह बूझि पड़त तँ दोसर भागमे आशा ओ विश्वासमय भविष्यक वसन्तक फूल फुलाइत बूझि पड़त। अनायासे ओहि गाममे बसि जयबाक मोन करत।

किसुन : की रे चारु ! कविताक भाषा कहियासँ बाजऽ आबि गेलौक ?

चारुचन्द्र : जहिया किसुन भैयाक कवितामय चित्र देखलियनि आ धीरू भैया केर कवितामय भाषण सुनलियनि, तहियेसँ हमरो कविताक भाषा आबि गेल।

किसुन : बस, बस। बन्द कर अपन चेँ चेँ…तोँ जखन बजैत छेँ तँ होइत अछि जे……

धीरेन्द्र : (बीचेमे वाक्य पूरा करैत)…सदिखन तोहर बात सुनिते रही। (हँसऽ लगैत अछि।)

चारुचन्द्र : उँहुँ ! हिनकर चित्रक गप्प करू तँ ई लाल-पीयर होबऽ लगताह ! एहिना बिगड़ि उठताह। अपन बनाओल चित्र ककरो देखऽ पर्यन्त नहि दैत छथिन।

धीरेन्द्र : आरो कोन-कोन चित्र देखने छहक तोँ हौ ?

किसुन : धीरेन ! कलाकेँ चाही कलाकारक साधना आ कलाक सहृदय पारखी। से एहि वीरान स्थानमे कतऽ पाबी ? जे श्रीसम्पन्न अछि, जकर पेट भरल छैक, तकर कला थिकैक झूठ, फरेब, तिकड़मबाजी ! बैमानीसँ अनकर भाग हड़पि लेबामे आ अपन धनकेँ बढ़बैत जयबामे अपन कलाक चमत्कार देखबैत अछि। दोसर दिस अछि दरिद्र, बुभुक्षित समाज, जकरा पेटमे

दाना नहि छैक, देह पर वस्त्र नहि छैक, जकर बच्चा सभ पात खड़रैत छैक, बकरी चरबैत छेक, घास छिलैत छैक, लोढ़ा लोढ़ैत छैक, घोङहा, सितुआ, चिचोढ़, सौरखी बीछैलय भरि दिन बौआइत रहैत छैक। ओकरा सबकेँ चाही भरि पेट अन्न, भरि देह वस्त्र। एहि लय चाही ओकरा हाथकेँ काज, रोजी जाहिसँ रोटी भेटि सकैक। यैह थिकैक ओकरा सभक लेल, कला।

धीरेन्द्र : तोँ ठीक कहैत छह किसुन ! मुदा एकर उद्धार के करतैक ? अशिक्षा, गरीबी आ अन्धविश्वासमे डूबल समाजकेँ उबारबाक भार आब युवा पीढ़ीएकेँ लेबऽ पड़तैक। ओकरे आगाँ आबऽ पड़तैक। दुःख-दरिद्रताक अशुभ भाग्य-रेखाकेँ शुभ कर्म-रेखामे बदलि देबाक अभिलाषा आ सामर्थ्य युवकेमे रहैत छैक। हम-तोँ युवक छी। हमरहि सबकेँ आगाँ बढ़ऽ पड़त।

चारुचन्द्र : आब ई गप्पाध्याय बन्द करैत जाउ। बहुत रास काज सब करबाक छैक से नहि बिसरि जैयौक।

किसुन : काज ठीके बहुत छैक। आइ रिलीफक गहूमकेँ सेहो बँटबा देबाक होयतैक,ने तँ बीचेमे मूस खा जयतैक।

धीरेन्द्र : एहिमे सतर्कता रखबाक होयतह। जे वास्तवमे खगल अछि तकरे भेटबाक चाही।

चारुचन्द्र : सोझे ओहिना नहि भऽ जायत ! देखैत रहियौक ने जे की सब भऽ रहल छैक। ताल तखन लागत जखन मुँहगरहा सब रिलीफक अन्न हँसोथबाक लेल मारि करत। सब बेर एहिना होइत छैक।

धीरेन्द्र : से की हौ ? की बात छैक से साफ-साफ कहह ने !

किसुन : धीरेन भाइ ! बहुत दिन धरि गामसँ बाहर रहलह ने ! सब बात अपने बूझि जेबहक सहे-सहे।

चारुचन्द्र : पंचू काका अबिते होयताह। अपने बोकरताह सब बात। एहि बेरक रिलीफ अपना सब सन झंझटियाक हाथमे फसि

गेल छनि (केबाड़ ढकढकयबाक ध्वनि सुनि पड़ैछ) वैह आबि गेलाह। पंचू काकाकें छोड़ि आरो दोसर केओ ने भऽ सकैत अछि। रिलीफक गहूमक सदुपयोगक सबसँ अधिक चिन्ता हुनकहि रहैत छनि।

धीरेन्द्र : के छी ? चल आउ। (चारुचन्द्रसँ) चारु ! तों कोदारिक इन्तजाम कऽ कऽ जल्दी आबह।

चारुचन्द्र : बेस।

(चारुचन्द्र जाइत अछि आ पंचू प्रवेश करैत अछि। धीरेन्द्र ओ किसुन उठि कऽ ठाढ़ होइत अछि। पंचू चौकी पर बैसि जाइत अछि। धीरेन्द्र ओ किसुन ठाढ़े रहैत अछि।)

पंचू : (एक बेर चारू कात ताकि) बड़ा सब गोटे जुटल छह, भोरे-भोरे ? की बात छैक ?

किसुन : नहि, कोनो खास बात नहि। ओहिना गप्प-सप्प चलैत छलैक।

धीरेन्द्र : अहाँ कोना अयलहुँ अछि ? कोनो खास बात की ?

पंचू : हौ जी ! बेस मोन पाड़लह। (धीरेन्द्र आ किसुनक आँखिसँ आँखि मिलैत छैक आ दुनू मुसकी दैत अछि।) रामजीक इच्छासँ तोरा कहबाक छल जे तोहर बाप हमर संगी। एकदम लङौटिया यार। तोरा पढ़ैत देखलियह तँ सूप सन करेज भऽ गेल। आब तँ सब इन्तिहान पास कऽ गेल होयबह।

धीरेन्द्र : नहि, रिजल्ट नहिं बहार भेलैक अछि एखन धरि।

पंचू : सैह, आब नीक नोकरी धऽ लयह। गाममे की राखल छैक ? नोकरी करबह। बाइली आमदनी होयतह। जिनगी सुधरि जयतह। नोकरी ओहने धरिहह जाहिमे खूब बाइली आमदनी होइत होइक। नोकरिहारा सब जे एतेक इलबाइस करैत रहैत अछि से बाइलीए आमदनीसँ ने।

धीरेन्द्र : काका ! बाइली आमदनी तँ भ्रष्ट आ पतित बनला र होइत छैक। बाइली आमदनी लोकक अध:पतनक मापदण्ड थिकैक। आ नोकरीए जीवनक परम लक्ष्य नहि थिकैक, काका !

पंचू : लोक पढ़ि-लीखि कऽ नोकरी नहि करत तँ की करत ? आ नोकरीमे जकरा बाइली आमदनी नहि होइत छैक सेहो की लोके थिक ? देखहक प्रेमकान्तकेँ । साधारण सन नोकरी कऽ कऽ जाहि ठाट-बाटसँ रहैत अछि से साहेबोकेँ मात करैत छैक ।

धीरेन्द्र : बहुत रास काज सब छैक जे लोकक बाट ताकि रहल छैक । किछु गोटे समाजोक काज करबाक लेल तँ रहओ ।

पंचू : एकटा ममता अछि तोरासँ तेँ कहैत छियह । कल्हुके बात लयह । तोरा हाथेँ लोटा रमजीयासँ छुआ गेलैक । ताहिलय तोहर काकी मारि बजैत रहथुन । मुदा हम डाँटि लेलियनि— नहि, धीरेन्द्र नेना अछि । एकटा अपराध भैए गेलैक ओकरासँ तँ ताहिलय बाजब की ? हौ तोहर जिनगी बाँचल ताकय, तँ एहन-एहन कतेक लोटा ने आनि देबहुन । तखन, जँ तोरा एखनेसँ धर्म-कर्ममे मोन रमि गेलह तँ सैह करह । ओहो बेजाय बात नहि । मुदा गामक एहि अल्ल-बल्ल काजमे लागल रहने धर्म नहि होइत छैक ।

किसुन : तँ कथीमे धर्म होइत छैक, काका ?

पंचू : अरे ! सैह तँ कहऽ अयलियह अछि । हमरा तँ कय गोटे कहलनि जे तोँही जाह । तोहर बात धीरेन्द्र मानतह ।

किसुन : खुलासा कहबैक तखन ने लोको बूझत ?

पचू : धर्मक बात छैक । सरकार दिससँ ओतेक खराती गहूम अयलैक अछि से तँ धर्मखाते लय ने ? सरकारीयो लोक सब पुन्न करैत अछि ने ? एहि बेर सुनै छी जे मुखियाजीकेँ खराती गहूमक तसफीया तोरे सभक विचारसँ करऽ पड़तनि । हमर तँ विचार अछि जे ओहि गहूमसँ नबाह कीर्त्तन करबाओल जाय । कय बरखसँ नहि भेलैक अछि । एहन संयोग बेर-बेर नहि भेटैत छैक ।

किसुन : आरो की सब होयतैक ?

पंचू : आरो की ? ग्राम देबता बाबाक पूजा सेहो भऽ जाय। महादेवक महारुद्र यज्ञ आ ब्राह्मण-भोजन सेहो सतरि जयतैक।

धीरेन्द्र : अहाँक कहबाक अर्थ रिलीफक गहूमसँ अछि। (गम्भीर भऽ जाइछ।)

पंचू : हँ हँ। वैह।

धीरेन्द्र : काका! ओ गहूम तकरा लय अयलैक अछि जकरा घरमे सतहत्तरि बितैत छैक। जकरा कोनो साधन नहि छैक। जे भूखसँ टग हनैत अपन बच्चाके खोआ नहि पबैत अछि। बड़ खुशामद आ आरजू-विनती कऽ कऽ हमरा लोकनि एतबो गहूम अनबा सकलहुँ अछि। अपना दिससँ अहाँ सब सहायता की करबैक जे सेर-दू-सेर जेहो भेटऽवला छैक, सेहो अलगट्टे लोकि लिअऽ चाहैत छिऐक। बड़ पवित्र विचार अछि अहाँ लोकनिक!

किसुन : खा कऽ ढेकरबाक लेल नहि अयलैक अछि गहूम। अहाँ जकरा धर्म कहैत छिऐक से अधर्म थिक। जँ वैह धर्म थिक तँ हम सब धार्मिक नहि, नास्तिक छी। बस।

पंचू : तँ की तोहर धर्म छह गल्ली-कुच्ची साफ करब ? छोप-अछोप केँ एकटार करब? गामक राड़-रोहियाके बहसा कऽ दूरि करब?

किसुन : मन्दिरमे जा कऽ पूजा करब धर्म थिक मुदा पोखरिमे ढहल जाइत मन्दिरके बचायब धर्म नहि थिक। पोखरिमे नहायब धर्म थिक मुदा ओकरा साफ करब धर्म नहि थिक। अबल-दुर्बल लोकसँ काज करायब धर्म थिक आ ओकर पेटक व्यवस्था करब धर्म नहि थिक। गरीब-गुरबा भूखसँ मरैत रहओ मुदा अहाँ सब सन धर्मनिष्ठ लोकके ब्राह्मण-भोजन करयबाक लेल रिलीफवला गहूम चाही।

पंचू : (तमतमाइत) तँ बेस। कोना कऽ गहूमबटवारा कऽ लैत छह सेहो देखबाक अछि।

किसुन : हँ, हँ। देखि लेब।

(चारुचन्द्र अबैत अछि।)

धीरेन्द्र : की चारु! देरी किएक भेलह ?

चारुचन्द्र : दिवानाथ साइकिलसँ अबैत छल। पंचू काकाक घर लगक मोड़ीमे साइकिल स्लिप भऽ कऽ खसि पड़लैक। सौंसे कपड़ा-लत्ता बोदर-बोदर भऽ गेलैक। रस्तापर मोड़ी बना देने छथिन, सौंसे गलीज भेल रहैत छैक।

पंचू : हम अपन मोड़ी खोलने रहब, ताहिसँ तोरा सबकेँ की ?

चारुचन्द्र : एना एढ़ी-टेढ़ी बतिआयबतँ आइए जा कऽ मोड़ी बन्द कऽ देब ।

पंचू : होअह तागति तँ अबिहह । देखि लिहक । संगहि बापोकेँ कहिहह अबैलय···(बजैत पंचू चल जाइछ ।)

चारुचन्द्र : फेर बाप-बाप कयलहुँ तँ······

धीरेन्द्र : (बीचेमे डँटैत) चारुचन्द्र ! चुप रहह ।

चारुचन्द्र : अहाँ तँ एहिना डाँटि दैत छी । एकरा सभक कुकर्म तँ पराकाष्ठा पर पहुँचल जा रहल छैक । एकटा नव बात तँ बुझले ने होयत ।

किसुन : कोन नव बात ?

चारुचन्द्र : अम्बर-सेन्टर जे चलि रहल छैक तकरा सम्बन्धमे सौंसे गाममे उधबा तँ उठौनहि छैक । एखन भोलाझा सिरमनि मसोमातक चर्खा पटकि-पटकि कऽ तोड़ि देलकैक ।

धीरेन्द्र : (उद्विग्न होइत) से किएक ? चर्खा की बिगाड़ने छलैक ?

किसुन : कहू, ओकर धन-बीत, हिस्सा-बखरा हफि लेलकैक । भरि पेट अन्न आ बीत भरि वस्त्रो नहि दैत छैक आ आब एकटा अवलम्ब धरा देलिऐक तँ······

चारुचन्द्र : बेचारी जेँ कि चरखा कान्ह पर राखि कऽ परिश्रमालय विदा भेलि कि भोलाझा ओमहरसँ आबि कऽ चर्खा छीनि लेलकैक आ काठक सिल्ल पर पटकि देलकैक । चर्खा सकचुन्न भऽ कऽ टूटि गेलैक । ताहि पर विखिन्न-विखिन्न सन बात बजैत कहैत छलैक जे हमरा घरक मसोमात भऽ लोकक दरबज्जे-दरबज्जे जायत बोनि करबालय ? ई नककटौनी भऽ गेलि ।

किसुन : धीरेन भाइ ! आब नहि सहल जाइत अछि हमरा । एकर किछु निराकरण होयबाक चाही ।

चारुचन्द्र : एतबे नहि । दिवानाथ कहैत छल जे चौधरी गचछमे एक गोटे अम्बर चर्खा सीखैत छलैक से चर्खा तोड़िकऽ राति खन भानस भेलैक अछि । श्रीखण्डझाक बड़की बेटी चर्खा सीखैत छलनि तँ ओकरा सासुर उलहन पहुँचि गेलैक । नन्दनचौधरी अपन बेटीकेँ कहलथिन जे जँ परिश्रमालय गेलेँ तँ खाधि खूनि कऽ गाड़ि देबौक ।

(किसुन आबेशमे जाय चाहैत अछि तँ धीरेन्द्र हाथ पकड़ि कऽ घीचि लैत छैक ।)

धीरेन्द्र : किसुन ! आबह। सुनह। एना हड़बड़यने तँ नहि होयतह ।
युगयुगान्तरक व्याधि एके बेरमे छूमन्तर नहि भऽ जयतैक। सभ किछु होयतैक मुदा आस्ते-आस्ते। युग-युगसँ रूढ़ि, अन्ध-विश्वास, अज्ञानता आ मिथ्या अहंकारमे जकड़ल समाजकेँ बदलब हल्लुक काज नहि थिक। समाजकेँ बदलबाक अर्थं थिक नव सृष्टि करब। नव सृष्टि लय असीम धैर्य चाही।

चारुचन्द्र : आइ सफाइ-अभियान सेहो अछि, सरकार !

धीरेन्द्र : चलह किसुन ! आजुक प्रोग्रामकेँ सम्पन्न कयल जाय। सबकेँ खुरपी, कोदारि, छिट्टा लऽ कऽ चलऽ कहक।

किसुन : बेस, चलैत चलह।

(सब जाइत अछि। पर्दा खसैत अछि।)

तृतीय दृश्य

[स्थान : गामक एक भाग। धीरेन्द्र, राघो, किसुन, चारुचन्द्र एवं गामक आरो किछु युवक ओ किशोर सब सफाइ-अभियानमे लागल अछि। तीन-चारि गोट छिट्टा, किछु खुरपी, तीन-चारि गोट कोदारि, दू-तीन टा खरड़ा देखल जाइछ। जंगल-झाड़ सभ काटि कऽ एमहर-ओमहर फेकल अछि। अचानक धीरेन्द्रक पैरमे कोदारि उछटि कऽ लागि जाइछ आ धीरेन्द्र 'इस्म्' कऽ ठामहि बैसि जाइत अछि। लिधुर बहऽ लगैत छैक।]

राघो : (धीरेन्द्रक पैरमे कोदारि लगैत देखि कऽ) अरे ! धीरेन बच्चाकेँ पैर कटा गेलनि ! (दौड़ि कऽ लग आबि जाइछ।)

किसुन : (झटकि कऽ लग आबि कऽ) भऽ गेलहने, एकटा उपकारतँ कयलह।

(सहटि कऽ आरो लोक सब लग आबि जाइछ।)

धीरेन्द्र : कोन बड़का भारी अन्हेर भऽ गेलैक जे अहाँ सभ जूटि गेलहुँ ? चलू, हमहूँ चलैत छी।

(धीरेन्द्र कोदारि उठा कऽ चलऽ चाहैत अछि की राघो कान्ह पकड़ि कऽ बैसा दैछ। आन गोटे सब फेर सफाइमे लागि जाइछ।)

राघो : (धीरेन्द्रक पैरक कटलाहा भागसँ बहैत लिधुर पोछऽ लगैछ) कहैत छी, बच्चा ! अहाँ अगरजितपना नहि करू। श्रमदान दिन आङुर

दकचि लेलहुँ आ आइ छाबा भकचि लेलहुँ। कोदारि चलयबा लेल तँ हम सब छीहे।

(चारुचन्द्र,कपड़ासँ धीरेन्द्रक'पैरक कटलाहा भागकेँ बान्हऽ लगैत अछि।

धीरेन्द्र : धुत, ई की करैत छह ? केहनदन रोगीसन लागत। हटावह।

(धीरेन्द्र कपड़ा फेकि दैत अछि आ कोदारि लऽ कऽ आगाँ बढ़ैत अछि।)

किसुन : कहैत छियह, धीरेन ! तोँ कोदारि नहि धरह। आ आब थाकियो गेल होयबह। हौ ! तोँ तँ हमरा सभक नेता सेहो ने छह ? तोरा तँ खाली निर्देशन देबासँ काज। हम सब ओकरा पूरा करब।

धीरेन्द्र : एकदम गलती बात, किसुन ! केओ किएक ककरो नेता रहतैक ? जँ नेते चाही तँ तोँही किएक ने रहबह नेता ? राघोए कका किएक ने नेता होथि ? चारुचन्द्रे नेता रहत तँ कोन हर्ज ?

चारुचन्द्र : भाइ लोकनि ! हमरा जँ नेता बनौलहुँ तँ गेल महीस पानिमे पड़रू सहीत। मझधारमे नैया बुड़ने बिना परकार नहि। धीरू भैया ! हमर सभक नेता अहीं छी आ अहीं रहू।

धीरेन्द्र ; मानि लेल जे हमही नेता छियह। तँ की नेताक काज वा उत्तरदायित्व एतबे छैक जे खाली हुकुम चलबैत रहय ? जखन आन सब खटैत रहय, पसेना बहबैत रहय, तखन ओ गद्दा पर सूति कऽ आराम करय ? जे एना करैत अछि ओ कहियो जन-नेता नहि भऽ सकैत अछि। जकर एकमात्र काज छैक अपन अपन स्वार्थ सिद्ध करब, से नेता नहि, वंचक थिक। लोकक नेता तँ ओ थिक जे लोकक सुख-दुखमे संग रहैत छैक। वेह लोकक अभाव-अभियोग बूझि सकैत छैक।

(अकस्मात् दरोगाक प्रवेश होइत छैक। सब हड़बड़ा जाइत अछि।)

दरोगा : धीरेन्द्र के छथि ?

धीरेन्द्र : (आगाँ बढ़ि) हमरे नाम थिक धीरेन्द्र।

(धीरेन्द्र संग किसुन, राघो, चारुचन्द्र सेहो दरोगाक निकट आबि जाइत अछि। दरोगा सबकेँ एकाएकी गहिंकी नजरिसँ देखैत अछि।)

दरोगा : हमरा खबरि भेटल छल जे आइ एहि गाममे बलबा होयबाक संभावना छैक। की, ई बात ठीक छैक ?

चारुचन्द्र : समाचार तँ अहाँके ठीके भेटल छल। बलबाक भयंकरताक अनुमाने लगाओल जा सकैत अछि।

दरोगा : (डायरी बहार कऽ लिखबाक हेतु उद्यत होइत) कोन तरहक बलबा छलैक ? ओकर कारण की छलैक ? आब शान्त छैक की नहि ?

चारुचन्द्र : एखने तँ बलबा भेल छल। एह, जे ओहि चपेटमे पड़ल से गेल। छकबा-पटबा उठि गेल। ओहिमे कतेक ने छान्हि-त्रान्हि भऽ गेल।

दरोगा : खबरदार,जे, केओ पड़यबाक कोसिस कयलक तँ। देखा, कतऽ आ कोमहर बलवा भेल ?

चारुचन्द्र : यैह, सामने देखैत नहि छिऐक, ई सेरी सब जे भिड़ल छैक ? (कोदारि-छिट्टा आ कटल जंगल-झाड़ दिस देखा दैत छैक। दरोगा चकित भऽ कऽ ओहि जंगल-झाड़के देखैत अछि आ एकाएक भभा कऽ हँसि दैत अछि। सब लोक हँसऽ लगैत अछि।)

दरोगा : बहुत सुन्दर ! (कनेक थम्हि) अहाँक नाम की अछि ?

चारुचन्द्र : किएक ? केस करबैक की ?

दरोगा : एह, राम ! राम ! की बजैत छी ?

किसुन : चारुचन्द्र नाम थिकनि।

दरोगा : सुन्दर, बहुत सुन्दर···चा···रु···च ··न्द्र। (धीरेन्द्रके सम्बोधित करैत) धीरेन्द्र जी ! थानामे सनहा देल गेल छल जे लूटि-मारि, खून-खराबी आ आर की की ने होयतैक जकर अग्रेसर अहाँ रहब। हम तँ अहाँके गिरफदार करऽ आयल छलहुँ।

धीरेन्द्र : आब तँ अहाँ अपना आँखिसँ देखिते छिऐक, (अपन दूनू हाथ दरोगा दिस बढ़बैत) लियऽ गिरफदार करू।

दरोगा : एही गामक गण्य मान्य व्यक्ति गेल छलाह थाना पर। हम तँ एतऽ आबि कऽ अचंभित रहि गेलहुँ। मुदा आब अहाँके गिरफदार करू की माला पहिराउ ?

किसुन : गामक किछु स्वार्थी व्यक्तिके ई काज सब पसिन्न नहि छनि, बूझल गेलैक दरोगा जी !

दरोगा : नीक काजमे झूठ आरोप लगा कऽ बाधा देब नीक मनोवृत्ति नहि कहल जा सकैत अछि। अहाँ लोकनिक काज देखि कऽ हमर अपने मोन उथल-पुथल कऽ रहल अछि। होइत अछि जे हमहूँ कोदारि धऽ ली। (कनेक रुकि) लाउ, हमरो कोदारि दियऽ। हमहूँ अहाँ सभक एहि पुनीत काजमे संग दी।

(राघोक हाथसँ कोदारि लऽ कऽ दरोगा जंगल काटऽ लगैत अछि। धीरेन्द्र दरोगाक हाथसँ झपटि कऽ कोदारि छीनि लैत अछि।)

धीरेन्द्र : अपने सन लोकक हाथ जँ लागि गेलैक तँ ई यज्ञ सफल भऽ गेल : दरोगा जी ! नव-निर्माणक उदीयमान सूर्यकेँ यदि अहूँ सन व्यक्तिक अर्घ्य भेटलनि तँ हम सफल भऽ गेलहुँ। लाउ, आब कोदारि दऽ दियऽ।

(धीरेन्द्र दरोगाजीक हाथसँ कोदारि लऽ लैत अछि। पटाक्षेप होइत अछि।)

चतुर्थ दृश्य

[स्थान : गामक एक भाग। भोला झा आ पंचूक प्रवेश]

भोलाझा : हौ पंचू ! तोँ कहैत छलह जे दरोगाकेँ घूस दऽ कऽ मिला लेलकैक। मुदा दरोगाकेँ तँ हमरे लोकनि घूस देने छलिऐक, तैयो ओ किछु कयलकैक नहि। उनटे, अपने कोदारि धऽ लेलकैक।

पंचू : कोन खेल-बेल भेलैक से नहि कहि; मुदा एकरा भीतर जरूर कोनो बात छैक।

भोलाझा : अह ! बात की रहतैक ? ओकरा सबकेँ बदनाम करबाक लेल हमरा लोकनि किछु उठा नहि रखलिऐक। अच्छा, कहह तँ। ओहि दिन कोनो मारि होयबा लय रहैक जे थाना पर सनहा दऽ देलहक ? उनटे तोरा मोड़ीक गलीज साफ कऽ देलकह। थिकह तँ तोरे अगुआड़-पछुआड़। तोँही कहह, कहियो ओहिमे कोदारियो देने रहक ?

पंचू : से तँ नहि देने रहिऐक।

भोलाझा : तखन ? देखहक, एही ठाम –नाक नहि देल जाइत छल। मोन असर्ध भऽ जाइत छल। गाम पर जाइत छलहुँ तँ खा नहि होइत छल। मोन पच्च-पच्च करैत रहैत छल। से आब देखहक, केहन रमनगर लगैत छैक ! बूझि पड़ैत छैक जेना सत्ते चानन छिलकैत होइक।

पंचू : से तँ सत्ते बड़ दीब लगैत छैक।

भोलाझा। हम तँ कैक दिन पर एमहर अयलहुँ अछि। एहि ठाम अबै दुआरेँ नहयलहुँ नहि। मुदा ई स्थान देखि कऽ तँ आश्चर्य भऽ गेल। विश्वासे ने होइत अछि जे ई पहिलुक स्थान थिकैक।

मोन होइत अछि जे एहि ठामक चुटकी भरि माँटि उठा कऽ माथमे लगा लो। अर्थे ओहि छओँड़ा सभके एतेक बिरोध कयलिऐक। ओ सब उपकारक काज छोड़ि कऽ अपकारक कोन काज कयलक अछि ?

पंचू : गामक संस्था बिगडि रहल अछि से नहि देखैत छिऐक ?

भोलाझा : संस्था की बिगड़ि रहल छैक ? संस्था बनि रहल छैक, से कहह। जँ गामक लोकके नव-नव काज-धन्धा आबि जयतैक। पेट भरबाक अवलम्ब भेटि जयतैक। राँड़-मसोमात, बेअबलाके किछु रोजगार भेटि जाइक तँ एहिमे अधलाह की भेलैक ?

पंचू : काका ! आब अहूँ ढरल जाइत छिऐक ओकरा सब पर !

भोलाझा : हम तँ एते दिन आन्हर छलहुँ। छओँड़ा सब अपन व्यवहारसँ हमर आँखि खोलने जा रहल अछि।

(कोदारि लेने राघोक प्रवेश)

राघो : गोड़ लगैत छी काका !

भोलाझा : निकें रहह। आइ विजयादशमी दिन ई कोदारि लऽ कऽ कोमहर चललाह अछि ?

राघो : यैह, एही ठाम दऽरी खुनबाक छैक। आइ विजया दशमीक अवसर पर वृक्ष-रोपण होयतैक।

(धीरेन्द्र, किसुन, चारुचन्द्र एवं अन्य युवक-किशोर ओ ग्रामीणक प्रवेश होइत अछि। चारुचन्द्र एवं अन्य लोकक हाथमे थल्ला लागल गाछ छैक।)

धीरेन्द्र : (भोलाझाकेँ) गोड़ लगैत छी बाबा! (पंचूकेँ) गोड़ लगैत छी काका !

भोलाझा : दीर्घायु भव।

पंचू : निकें रहह।

(आनो लोक सब गोड़ लगैछ।)

भोलाझा : हौ ! तोँ सभ तँ सत्ते गामकेँ देवपुरी बना देबहक। जेम्हरे तकैत छी, मोन प्रसन्न भऽ जाइत अछि।

किसुन : सब अहीं सभक आशीर्वादसँ भऽ रहल छैक।

भोलाझा : हौ, सत्त पूछैत छह तँ हम कहियो आशीर्वाद नहि देलियह। तखन जे किछु भेलह अछि, से तोरा लोकनिक लगन आ निष्ठाक कारणे। हँ, तोहर सभक ओ नाटक कहिया होयतह ?

चारुचन्द्र : आइए साँझमे छैक, रामचरणक खरिहानमे।

भोलाझा : खरिहानमे किएक ?

किसुन : स्टेज बनयबा लय केओ जगहे ने देलकैक तँ की करितिऐक ?

भोलाझा : नहि, नहि। नाटक भगवतीएक लगमे होयतनि। ओही ठाम, जतऽ तों सभ पहिने बिचारने छलह। आ, चलह, तों सब देखा दिहक, हमर जऽन बाँस काटि कऽ पाङि-छीलि कऽ पहुँचा देतह। जतेक बाँसक काज होअह से निस्संकोच कटवा लिहह। चौकी लय निफिकिर रहह। हम जमा करबा दैत छियह।

धीरेन्द्र : बाबा ! ओ सब तँ होयतैक पाछाँ। आइ जयन्ती-दिवस थिकैक ने। एहि अवसरक स्मारक रूपमे वृक्ष-रोपण समारोहक आयोजन भेल छैक। हमरा सभक हार्दिक इच्छा छल जे गामक वयोवृद्ध व्यक्तिक हाथेँ ई पुण्यकार्य सम्पन्न होअय।

किसुन : मुदा अहाँके कहैत हमरा सबके भय आ शंका भेल जे कदाच अहाँ तमसा जाइ आ अस्वीकार कऽ दी। तैयो अहाँक ओतऽ साँझमे हम सब गेल छलहुँ मुदा संयोग एहन जे भेंटे ने भेल। एखनो अहींक घर पर सँ आबि रहल छी।

राघो : केहन बढ़ियाँ संयोग छैक जे ठामहि पर अहाँसँ भेंट भऽ गेल।

भोलाझा : (गद्गदित होइत) बाबू ! हम सब भेलहुँ बूढ़। पुरना युगक। शाखापत्र-विहीन ठुट्ठ बबूरक गाछ, अनुपयोगी आ काँटसँ भरल। तों सब छह नवयुवक, चाननक लुहलुहार गाछ, जकर शीतल-सुरभित बसातसँ अपन गाम, अपन समाज महमहा उठत। बदलैत युगक बसात दिस अपन पीठ ओरने रहब, युवा पीढ़ीक अभिनव प्रकाशमे अपन आँखि मुनने रहब, संसारक बढ़ैत डेगक विपरीत दिशामे अपस्याँत भेल दौड़ैत रहब बूढ़क विवशता भऽ जाइत छैक। तोरा लोकनिक उत्साह पर हम सब पानिए ढारैत रहलियह, ताहि लय ग्लानि भऽ रहल अछि। तों सब जे करैत छह, से करैत जाह। जे बाधा अबैत छह तकरा तोड़ैत बढ़ैत जाह। तोरा सभक उद्दाम प्रवाहके के रोकि सकतह ? शुभास्ते सन्तु पन्थानः।

(भोलाझा जाय चाहैत अछि। धीरेन्द्र बाट छेकि लैत छैक।)

धीरेन्द्र : बाबा ! गाछो अहींके रोपबाक अछि। से कयने बिना कोना जयबैक ? एहि गाछके चाननेक गाछ बुझियौक। अपना हाथसँ रोपि दियौक।

राघो : हँ काका ! आब शुभस्य शीघ्रम्।

किसुन : राघो काका ! दऽरी अहीं खुनबाक लेल संकल्पित छी की ?

राघो : एहूमे किछु कहऽबला बात !

(राघो दऽरी खूनऽ लगैत अछि ।)

धीरेन्द्र : आब देरी नहि करियौक बाबा !

किसुन : हँ, आब जल्दीए, ने तँ गाछ मीला जयतैक ।

धीरेन्द्र : चारुचन्द्र ! बाबाक हाथमे गाछ दहुन ।

(चारुचन्द्र भोलाझाक हाथमे गाछ दैछ ।)

भोलाझा : (दुनू हाथें गाछक थल्ला पकड़ि) ई गाछ तोरा सभक विजयजयन्ती थिकह । ई तोरा सभक आशा आ विश्वासक प्रतीक रहतह । (गद्गरित होइत) एहन सम्मान बड़ कम गोटेकें भेटैत छैक । बच्चा सभ ! तोरा सबकें देखि कऽ होइत अछि जे फेर बच्चा भऽ जैतहुँ आ तोरे सभक संग हमहूँ काज करितहुँ ।

(दऽरीमे गाछ रोपि गोड़ लागि लैछ ।)

वेस, हम जऽनकें पठा दैत छियह ।

(भोलाझा आ तकरा पाछाँ पंचू जाइत अछि ।)

चारुचन्द्र : (एकेबेर चौंकैत) आह, धीरेन भैया !

धीरेन्द्र : की भेलैक जे एना चौंकलें ?

चारुचन्द्र : फूलक माला सभ तँ हमरा फाँड़मे रहि गेलैक ।

किसुन : तोहर काजे एहने होइत रहैत छौक । कते बेर सुग्गा जकाँ पढ़ा देलियौक जे, जे गाछ रोपतैक तकरा गर्दनिमे सभसँ पहिने माला पहिराओल जयतैक ।

चारुचन्द्र : से हमरा की कहैत छी ? हमर हाथ तँ बाझल छल गाछक थल्ला पकड़बामे । (फाँड़सँ मारि फूल ओ माला बहार करैत अछि ।)

किसुन : ई सब तोहर लाथ थिकौक । जानि-बूझि कऽ तों एना कयलें ।

धीरेन्द्र : छोड़ह, आब जे भेलैक से भेलैक । गाछेकें चढ़ा दहक ।

(चारुचन्द्र सभक हाथमे फूल आ माला दैत अछि ।)

चारुचन्द्र : किसुन भैया ! हम बीज-रोपण कयनिहारेकें माला किएक ने पहिराबी ?

(चारुचन्द्र धीरेन्द्र दिस इसारा करैछ । धीरेन्द्र जावत रोकय-रोकय तावत चारुचन्द्र माला पहिरा दैछ । आनो गोटे फूलमालासँ धीरेन्द्रकें तोपि दैछ ।)

(पटाक्षेप होइत अछि ।)



पत्रिकैत पाथर : नाट्य संग्रहक रचयिता

डाक्टर रामदेव झा

जन्म : ३ मई १९३६।

निवास : कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा।

शिक्षा : बी० ए० (ऑनर्स), स्वर्णपदक, बिहार विश्वविद्यालय. १९५९।
एम० ए०(मैथिली), स्वर्णपदक, पटना विश्वविद्यालय, १९६१।
पी-एच्०डी०, मैथिली मे शैव साहित्य, पटना विश्वविद्यालय, १९७०।

आजीविका : अध्यापन, सम्प्रति—विश्वविद्यालय प्राचार्य, मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

प्रकाशित कृति :

कथा : एक खीरा : तीन फांक, मनुक सन्तान, धरती माता, इजोती रानी।

अनुसन्धान-आलोचना : मैथिली शैव साहित्यक भूमिका, मैथिली शैव साहित्य, उमापति।

सम्पादित ग्रन्थ : हरगौरी विवाह नाटक, राम विजय नाट, नन्दीपति—गीतिमाला, नेपालक शिलोत्कीर्ण गीत, दशावतार नृत्यम्‌ओ षोडश गीतम्।

संयुक्त सम्पादित ग्रन्थ : मैथिली प्राचीन गीतावली, कविवर जीवनझा-रचनावली।

विकीर्ण रचना : कविता, कथा, एकांकी, निबन्ध, संस्मरण, शोध-पत्र आदि।

समेकित परिचिति :

'लेखक छठम दशक सँ तँ साहित्य-मञ्च पर अवतीर्ण भेल छथि परञ्च उतीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे। जेना ई अनवरत साधना करैत रहला, स्कूल वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि भेला, कॉलिज-क्लासमे कखनहु दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक-जीवनमे कहिओ अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दूनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा-कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला—ताहि सबसँ बहुत पूर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली क्षेत्र मे एक चमत्कारे सिद्ध छथि। रुचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध-अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि।'

(धरतीमाताक भूमिका सँ)

— श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'